श्री किरंतन ग्रंथ प्रशिक्षण शिविर के सारगर्भित वैकल्पिक

प्रश्नावली

लेखक

महात्मा सुशांत निजानन्दी

प्रकाशक

श्रीप्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान

श्रीनिजानन्द आश्रम वडोदरा एवं शामलाजी

SHRI NIJANAND FOUNDATION, USA

भूमिका

प्यारे सुंदरसाथ जी! धाम धणी की मेहर से, सद्गुरू के आशीर्वाद से दिसम्बर 2022 से मई 2024 तक जूम के माध्यम से ऑनलाईन श्री किरंतन ग्रंथ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ था। जिसमें श्रीमुखवाणी के अन्य ग्रंथों, महामति जी की बड़ी वृत, मूल बीतक एवं अन्य बीतकों, वेद एवं कतेब पक्ष के विभिन्न धर्मग्रंथों के प्रमाणों से श्रीनिजानन्द के सत्य सिद्धांतों एवं अनेकों गूढ़ रहस्यों को 185 एपीसोड में समझाया गया। (वे सारे विडीयो "TARTAM BRAHMVANI" यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं)। धाम धणी की प्रेरणा से एवं समस्त सुंदरसाथ जी के सहयोग से उपरोक्त सभी प्रमाणों सहित श्रीकिरंतन ग्रंथ टीका (शब्दार्थ व व्याख्या सहित) प्रकाशित हो रही है।

इस श्रीकिरंतन ग्रंथ प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुगल फॉर्मस् के माध्यम से वैकल्पिक प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की जाती थी, जिसमें चर्चा के साररूप, मुख्य बिंदूओं को ध्यान में रखते हुए वैकल्पिक प्रश्न बनाये जाते थे, जिससे कि चर्चा में बतायी गयी सारी मुख्य बातों का पुनः स्मरण हो जाये। उन लगभग 1330 वैकल्पिक प्रश्नों का इस लघु ग्रंथ में समावेश किया गया है। सहीं उत्तर का अंक बोल्ड (गाढ़े) अक्षर में प्रिंट है।

चर्चा में जिन बातों को विस्तार से, प्रमाण सहित समझाया गया था, उनसे संबंधित प्रश्नों को यदि बिना चर्चा सुने या बिना टीका पढ़े देखेंगे, तो हो सकता है कि कई प्रश्नों के उत्तर से आप संतुष्ट ना हों। अतः मैं आप सबसे निवेदन करूंगा कि किसी भी शंकास्पद स्थिति में या तो मेरे यूट्यूब चैनल (TARTAM BRAHMVANI) पर जाकर श्री किरंतन चर्चा के उन वीडियो को देखें या मेरे द्वारा की गई श्री किरंतन ग्रंथ की टीका–व्याख्या का अवलोकन करें।

धाम धणी की मेहर व सद्गुरू के आशीर्वाद के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था और इतना आसान भी नहीं था। आशा करता हूं कि सभी जिज्ञासू, सत्यान्वेषी सुंदरसाथजी के लिये यह लघु ग्रंथ बहुत ही उपयोगी होगा। अंत में इस साहित्य के प्रकाशन की सेवा करने वाले समस्त सुंदरसाथ जी के प्रति बहुत बहुत आभार व्यक्त करता हूं। आप सभी सुंदरसाथ से आशा रखता हूं कि सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों को छोड़कर, खुली विचारशीलता रखते हुए, निष्पक्ष हृदय से इसका पठन–चिंतन करेंगे। आप सबके चरणों में कोटानकोट प्रणाम करता हूं।

आप सब सुंदरसाथ की चरणरज
महात्मा सुशान्त

प्रकरण 1

1. ''पेहेले आप पेहेचानो'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. परमात्मा को पहचानने से पूर्व स्वयं को पहचानो
2. साधना–भक्ति से पूर्व स्वयं को पहचानो

2. ''परखत नहीं परखानो'' से क्या सिखापन मिलता है?

विकल्प 1. अंधश्रद्धापूर्वक गुरू के वचन मान लेना चाहिए
2. जो ज्ञान श्रवण करते हैं, उसकी परख करनी चाहिए

3. ''माहें पार खोजोगे'' के अनुसार परमात्मा की खोज कहां करनी चाहिए?

विकल्प 1. हृदय में **2.** नश्वर शरीर व संसार से परे

प्रकरण 2

4. ''बिंद में सिंध समाया रे साधो'' में सिंधु रूप किसे कहा गया है?

विकल्प 1. परब्रह्म को **2.** ब्रह्मसत्ता को

5. ''खोजी खोजे बाहर भीतर'' में 'भीतर' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** शरीर के हृदय आदि चक्रों में 2. संसार के अंदर

6. ''असत आपे सो क्यों सत को पेखे'' के अनुसार दुनिया वाले परमात्मा का दर्शन क्यूं नहीं कर पाते हैं?

विकल्प **1.** स्वप्न की सृष्टि होने के कारण 2. नश्वर होने के कारण

7. ''ओ अंतर बैठा आप'' में 'अंतर' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. अंतरात्मा में **2.** नश्वर जगत् से परे

8. ''साध सोई तुम खोजो रे साधो, जिनका पार पयाना'' के अनुसार परब्रह्म का स्वरूप कहां विराजमान है?

विकल्प 1. सभी प्राणियों के हृदय में **2.** क्षर अक्षर से परे

9. ''ना भीतर बाहेर भी नाहीं'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** परमात्मा शरीर के अंदर (हृदय आदि चक्रों में) और शरीर के बाहर (कण–कण) में नहीं है 2. परमात्मा संसार के अंदर व बाहर नहीं है

10. ''गुर प्रसादे अंतर पेख्या'' में अंतर शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. अंतरात्मा में **2.** नश्वर जगत् से परे

11. ''प्रगट प्रकाश करे पारब्रह्म सों, तब बिंद अनेक उड़ावे'' से क्या

तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने पर संसार में रहते हुए भी संसार स्वप्नवत् हो जाता है 2. अनेक ब्रह्माण्ड समाप्त हो जाते हैं

<u>प्रकरण 3</u>

12. ''साधो भाई चीन्हों शब्द कोई चीन्हों'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान के शब्द पहचानो 2. सद्गुरू के वचनों में श्रद्धा रखो

13. ''सब्दा सतगुरसों करावे पेहेचान'' के अनुसार सद्गुरू की पहचान किससे होती है?

विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान के गूढ़ वचनों से 2. वेशभूषा वक्तृत्व कला व भीड़ से

14. ''वानी सकल को एक अर्थ होई'' का क्या भाव है?

विकल्प **1.** सभी धर्मग्रंथों में एक ही परमात्मा की उपासना करने कहा गया है 2. राम कृष्ण हनुमान सब एक हैं

15. ''तब खोज सब्द को लीजे तत्व, तौल देखिए बड़ी केही मत'' के अनुसार ज्ञान कैसे ग्रहण करना चाहिये?

विकल्प 1. श्रद्धापूर्वक आंख बंद करके **2.** चिंतन विवेचन करते हुए

16. ''सतगुर याहीं देखावे पार'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** सद्गुरू यही संसार में रहते हुए ही नश्वर जगत् से परे स्थित परमात्मा की पहचान करा देते हैं 2. सद्गुरू संसार के अंदर ही (कण कण में और हृदय चक्र में) परमात्मा का दर्शन करा देते हैं

<u>प्रकरण 4</u>

17. ''विश्व देख भया मैं विस्मय, देख देख आवत मोहे हासा'' में क्यूं हंसी आ रही है?

विकल्प 1. दुनिया वालों को दुखी देखकर

2. दुनिया वालों को जानबूझकर माया में फंसता देखकर

18. ''सिर ले काम करे माया को'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. रोटी, कपड़ा और मकान के लिये कार्य करते हैं

2. बहुत सारी इच्छाओं व तृष्णा को दिल में लेकर कार्य करते हैं

19. ''न समझे माया को मरम'' के अनुसार माया का मर्म क्या है?

विकल्प 1. संसार का सुख सम्मान प्रेम हमेशा रहने वाले हैं
2. भोग में रोग, मोह में शोक, मिलन में वियोग अवश्यंभावी है

20. ''समझे साध कहावें दुनी में, बाहेर देखावें आनंद'' के अनुसार किस प्रकार आनंद दर्शाते हैं?

विकल्प **1.** वेश भूषा, मुस्कुराहट, वक्तृत्व कला से 2. ज्ञान ध्यान रहनी से

21. ''नेहेचे जाए करें निराकार, या ठौर चित ठहरावें'' के अनुसार निराकार का ध्यान वे कहां करते हैं?

विकल्प **1.** हृदय आदि चक्रों में 2. आदिनारायण से परे शून्य मंडल में

22. ''पिया प्रेमें रे सन्मुख'' के अनुसार सच्चा सद्गुरू कौन है?

विकल्प **1.** भौतिक कामनाओं को छुड़ाकर जो परमात्मा के प्रेम में लगाए
2. ज्ञान मंथन को छुड़ाकर परमात्मा के प्रेम में लगाए वो सद्गुरू है

<u>प्रकरण 5</u>

23. ''सत के बनजारे'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. सत्य के मार्ग पर चलने वालों **2.** सत्य के चाहने वालों

24. ''एक आग ज्यों छोटी बुझाई'' छोटी आग से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** वित्तेष्णा दारेष्णा (धन–सम्पत्ति का मोह)
2. लोकेष्णा (मान प्रतिष्ठा का मोह)

25. ''दूजी मोटी लगाई'' मोटी आग से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. वित्तेष्णा दारेष्णा (धन–सम्पत्ति का मोह)
2. लोकेष्णा (मान प्रतिष्ठा का मोह)

26. ''अब छोड़ो रे मान गुमान ग्यान को'' चौपाई में क्या छोड़ने कहा जा रहा है?

विकल्प 1. ज्ञान को **2.** ज्ञान के गुमान को

27. सच्चे ज्ञानी की क्या निशानी है?

विकल्प 1. मान प्रतिष्ठा की चाह **2.** परमात्मा की तड़प, वैराग्य

28. ''सत चाहो तो सब्दा चीन्हो, सो आप न देवे देखायी'' के अनुसार सच्चे सद्गुरू की क्या पेहेचान है?

विकल्प 1. वेश भूषा, वक्तृत्व कला, मधुर भाषण कला, दिखावा–आडम्बर,

चमत्कार, पद–स्थान **2.** ज्ञान की सत्यता और गहनता

29. ''पर मनुआ दिये बिन हाथ न आवे'' के अनुसार ब्रह्मज्ञान किस प्रकार प्राप्त हो सकता है?

विकल्प **1.** मन वचन कर्म से समर्पित होकर सेवा के द्वारा
2. मात्र तालीम लेकर

<u>प्रकरण 6</u>

30. ''ए सब आग बिना दिया जले, याको रूई ना बाती तेल'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. संसार नश्वर है **2.** संसार स्वप्न है

31. ''पुत बंझा सींग ससक'' का उदाहरण क्यूं दिया जाता है?

विकल्प **1.** संसार दिखता तो है किंतु इसका तीनों ही काल में कोई अस्तित्व नहीं है 2. संसार परिवर्तनशील है, स्थूल संसार सूक्ष्म परमाणु के रूप में अविनाशी बना रहता है

32. ''कह्या वेद कतेब में, <u>भंग न कछू अभंग।</u>। सिन. 26/25'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. संसार बनता और नष्ट होता है
2. संसार स्वप्नवत् दृष्टिगोचर होता है

33. मुझे मेरे स्वाप्निक तन के सुख दुख की अनुभूति होती है, मेरे स्वप्न के दिख रहे अन्य तनों की नहीं। ऐसा क्यूं होता है?

विकल्प **1.** क्यूंकि मेरे स्वाप्निक तन में मेरे मन की सुरता होती है
2. क्यूंकि मेरे स्वाप्निक तन में मेरे चित की चेतना शक्ति होती है

34. मेरे स्वप्न में मेरे स्वाप्निक तन में और अन्य तनों में कौन सी चेतना शक्ति जीव रूप से होती है?

विकल्प **1.** सबके अंदर मेरे ही चित्त की चेतना शक्ति जीव रूप से होती है 2. सबके अंदर अलग अलग चेतना शक्ति होती है।

35. ईश्वरीय स्वप्न में मेरे मन का संकल्प विकल्प और मेरे चित्त की चेतना शक्ति दोनों काम करती है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

36. ''कह्या वेद कतेब में, भंग ना कछू अभंग'' चौपाई से क्या स्पष्ट

होता है?

विकल्प 1. संसार बनता और मिट जाता है

2. संसार मात्र स्वप्नवत् दृष्टिगोचर होता और अदृश्य हो जाता है

37. नींद/मोह सागर/महामाया क्या है?

विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणु

2. सुमंगला शक्ति से उत्पन्न स्वाप्निक चेतना शक्ति है

38. प्रकृति की साम्यावस्था किसे कहा जाता है?

विकल्प **1.** नींद में मन की संकल्प रहित अवस्था

2. सूक्ष्म परमाणुओं की क्रियाहीन अवस्था

39. ''एणें ठेकांने बेठी अछती, बांधी ने हथियार जी'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. शून्य मण्डल में माया की शक्ति विराजमान है

2. हद व बेहद के बीच में महामाया/महाशुन्य की शक्ति विराजमान है

40. ''आतम नारायण'' में 'आतम' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जीव चेतना 2. ब्रह्मात्मा

41. ''आतम नारायण'' में 'नारायण' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** विष्णु भगवान 2. आदिनारायण

42. ''नचवत व्यास करम'' में व्यास जी के द्वारा लिखित कौन से ग्रंथों की बात चल रही है?

विकल्प **1.** 18 पुराण 2. श्रीमद्भागवत

43. ''अय आत्मा ब्रह्म'' में 'आत्मा' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जीव चेतना 2. ब्रह्मात्मा

44. गीता का कथन 'आत्मा ना जन्मती है ना मरती है'' किसके लिये कहा गया है?

विकल्प **1.** जीव चेतना 2. ब्रह्मात्मा

45. जगत् के अंत में किसके माध्यम से सारी दुनिया को जागृत बुद्धि मिलने का वर्णन किया गया है?

विकल्प **1.** विष्णु भगवान 2. आदिनारायण

46. ''चौदे तबक के तख्त, बैठा मलकूत अजाजील'' में अजाजील से क्या

तात्पर्य है?

विकल्प **1.** विष्णु भगवान 2. आदिनारायण

47. ''रूह सबों में पसरी, थावर और जंगम। पेड़ याको जुल्मत, मलकुत में खसम।।'' चौपाई में मोह सागर (माया–शून्य) को किसका मूल कहा जा रहा है?

विकल्प 1. पंचभौतिक तनों का **2.** जीव चेतना का

48. ''जीव का घर है नींद में'' का क्या आशय है?

विकल्प 1. जीव चेतना का घर अचेतन परमाणुओं का महासागर नींद है

2. जीव चेतना का उद्‌गम नींद रूपी स्वाप्निक चेतना शक्ति से हुआ है अर्थात् जीव स्वाप्निक चेतना का अंश है

49. ''ऐसी माया सपरानी....आपे प्रभु आपे सेवक'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) ही संसार में प्रभु के रूप में भी दृष्टिगोचर हो रही है और सेवक के रूप में भी

2. सभी जीव चेतनाएं अलग–अलग हैं

50. ''छल को छल ना लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** माया के जीव माया के स्वरूप (स्वाप्निक चेतना के अंश) हैं

2. जीवों का शरीर व अंतःकरण, माया (सूक्ष्म परमाणुओं) का स्वरूप हैं

51. ''जीव नींद की उतपत'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. जीव चेतना की उत्पत्ति अचेतन परमाणुओं (मोहतत्व) से हुयी है

2. जीव चेतना की उत्पत्ति नींद रूपी स्वाप्निक चेतना शक्ति से हुयी है अर्थात् जीव स्वाप्निक चेतना का अंश है

52. ''जो दुनिया दम पीछी फिरे, तो जाए ला मकान बीच सुंन'' में किसके कहां जाने की बात कही जा रही है?

विकल्प **1.** जीव चेतना के उसके मूल मोह सागर (महामाया/स्वाप्निक चेतना शक्ति) में समाहित होने की 2. जीव के शरीर व अंतःकरण की सूक्ष्म परमाणु रूपी मोह सागर (माया)में समाने की

53. ''ए ख्वाबी दम सब नींद लों, दम नींदै के आधार। जो कदी बल आगे करें, गलें नींदै में निराकार'' में दम शब्द का क्या अर्थ है? उसके किसमें समाहित होने की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. पंचभौतिक शरीर अंतःकरण व इंद्रियों के सूक्ष्म परमाणुओं के

महासागर मोह तत्व में समाहित होने ही **2.** जीव चेतना के उसके मूल मोह सागर (महामाया/स्वाप्निक चेतना शक्ति) में समाहित होने की

54. ''ए मनुए की बाजी बाजी में मनुआ'' ये वर्तमान संसार किसके मन का खेल (संकल्प) है, किसके मन से चल रहा है?

विकल्प 1. अक्षर ब्रह्म के मन से **2.** श्रीराजजी के मन से

55. ''बरनावरन खेलत सब ऐसे'' में वर्ण शब्द से क्या आशय है?

विकल्प 1. चार रंग (सफेद, लाल, पीला, काला) के मनुष्य

2. सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र

56. ''पारब्रह्म तो पूरन एक है'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** पूर्ण ब्रह्म परमात्मा एक है 2.सभी देवी देवता त्रिदेवा एक ही हैं

57. ''आपको आप बढ़ावे'' के अनुसार ऐसे दिखावे के साधुजन कैसे आगे बढ़ते हैं?

विकल्प 1. परमात्मा की कृपा से

2. स्वयं ही (व अपने शिष्यों के द्वारा) अपनी तारीफ करके/करवा के

58. ''दुबधा दिल में अवगुण ढूंढें'' के अनुसार दूसरों के अवगुण क्यूं ढूंढते हैं?

विकल्प **1.** सामने वाले को विरोधी समूह या दूसरे धर्म/गुरू का जानकर

2. सामने वाले में ज्ञान की कमी देखकर

59. ''आतम विष्णु'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. विष्णु भगवान/विष्णु भगवान की आत्मा

2. जिनकी आत्मा का अंश सभी प्राणियों के अंदर हैं वे विष्णु भगवान

60. ''हो मेरी वासना'' में 'वासना' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** चित्तवृत्ति 2. आत्मा/परात्म की चेतना

61. ''तहां है तेरा करार'' के अनुसार हमें शाश्वत सुख शांति कहां मिल सकती है?

विकल्प 1. भौतिक सुखों में **2.** मात्र परमधाम में

<u>प्रकरण 7</u>

62. ''ए तो पड़यो सब प्रतिबिम्ब'' चौपाई के अनुसार ये संसार मूल रूप

से किसका प्रतिबिम्ब है?

विकल्प **1.** परमधाम का (चित्त के संस्कारों के माध्यम से)
2. निराकार का
3. सबलिक ब्रह्म का

63. ''चढ़ी चौदे सुन्य समावें'' के अनुसार शून्य (माया/नींद) में किसके समाने की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. पांच तत्व के शरीर व अंतःकरण की **2.** जीव चेतना की

64. ''ए जो नैन देखे श्रवण सुने, सब मूल बिना विस्तार'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** संसार अस्तित्वहीन है
2. संसार नाशवान है

65. ''तेरे बीच बाट घाट न तत्व कोई, तू करे पांऊ बिना पंथ'' का क्या आशय है?

विकल्प 1. परमधाम संसार से बहुत दूर है
2. हम मूल मिलावे में ही विराजमान होकर संसार स्वप्न देख रहे हैं और ज्ञान प्रेम के द्वारा ही उसे प्राप्त किया जा सकता है

66. ''महामत मनसा मिट गई, सब सुपन केरी आस'' संसार की आशा तृष्णा कैसे समाप्त होगी?

विकल्प 1. भौतिक सुखों के उपभोग से
2. परमधाम के निजसुखों की प्राप्ति से

<u>प्रकरण 8</u>

67. ''वैष्णव कहिये वाको'' वैष्णव शब्द दुनिया में किसके लिये प्रयोग किया जाता है?

विकल्प **1.** विष्णु के भक्तों के लिये
2. शिव के भक्तों के लिये

68.परमात्मा के लिये प्रयोग करने पर 'विष्णु' शब्द का अर्थ क्या होगा?

विकल्प 1. सर्वरक्षक परमात्मा **2.** सबका पालनहार परमात्मा

69. ''इश्क लगाए पिया सों पूरा'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. सभी से प्यार करो किन्तु पहला नम्बर श्रीराजजी को दो
2. पूर्ण प्रेम एकमात्र राजजी से होना चाहिए

70. ''आतम निवेदन'' अर्थात् 'ध्यान' नवधा भक्ति के अंतर्गत है?

विकल्प **1.** सत्य
2. नहीं, अलग है

71. प्रेम लक्षणा भक्ति किसे कहते हैं?

विकल्प 1. ध्यान को

2. स्वाभाविक रूप से हर पल रहने वाली प्रेम की स्थिति को

72. ''तो नवधा से न्यारा कह्या... जो रेहेत गोपिका माहें'' में कहां का प्रसंग है?

विकल्प **1.** ब्रज लीला का **2.** जागनी लीला का

73. ''अहनिस आवेस हुअडा अंग में'' चौपाई में कौन से 'आवेश' की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. सत्ता के **2.** प्रेम के

74. ''सांचा री साहेब सांचसों पाइए'' के अनुसार परमात्मा की प्राप्ति के लिये क्या जरूरी है?

विकल्प **1.** सच्चा ह्रदय सत्य आचरण 2. देखादेखी आचरण

<u>प्रकरण 9</u>

75. ''पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** उसके लिये शरीर व संसार स्वप्न हो गया होता है

2. उसके लिये शरीर व संसार का कोई महत्व नहीं होता है

76. ''पार हमारे न्यारा नहीं'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. परमधाम हमारे ह्रदय में है

2. हम परमधाम मूल मिलावे में धणी के चरणों में विराजमान हैं

77. ''सेहेरग से नजीक हक अर्स, बीच हक इलम देवे बैठाए'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. प्राणनली के अंदर/समीप श्रीराजजी विराजमान हैं

2. ब्रह्मज्ञान के द्वारा प्राणनली से भी नजदीक मूल मिलावे में धणी के चरणों में बैठे होने का ज्ञान होता है

78. ''ताको नजीक सेहेरग से, खाली हवा ला मकान'' में जीवों को निराकार (माया) के शहरग से भी नजदीक क्यूं कहा है?

विकल्प 1. क्यूंकि जीवों के दिल में निराकार (सूक्ष्म परमाणु) विद्यमान है

2. क्यूंकि जीवों के अंदर स्थित चेतना, माया–स्वाप्निक चेतना का अंश है

79. ''सो नार हमसे रहत है न्यारी'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** माया रूपी नार परमधाम में नहीं है

2. माया रूपी नार हमारे दिल में नहीं है

<u>प्रकरण 10</u>

80. ''तुम अखंड मंडल जान पाया''अखंड मण्डल से क्या आशय है?

विकल्प 1. परमधाम **2.** अखण्ड ब्रज रास

81. ''जिन गोकुल को तुम अखंड कहत हो, सो तुमारी दृष्टें न आया'' में वैष्णवों की किस अज्ञानता को दर्शाया जा रहा है?

विकल्प 1. उन्हें अखण्ड ब्रज रास का ज्ञान नहीं, वे स्वयं स्वीकारते हैं

2. वे मृत्यु लोक के ब्रज मण्डल, वृंदावन में अखण्ड ब्रज रास मानते हैं

82. ''परमेश्वर होए के आप पुजाओ'' यदि दुनिया आपके आडम्बर, दिखावा, वक्तृत्व कला, चमत्कारिक बातों को देखकर आपको परमात्मा मानने लगे तो क्या आपको परमधाम की प्राप्ति हो जायेगी?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

83. ''आपे प्रभु आपे सेवक'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) स्वयं ही प्रभु के रूप में है और स्वयं ही सेवक के रूप में 2. माया के प्रभाव से मनुष्य कभी स्वयं को प्रभु समझने लगता है, कभी सेवक

84. विवेक चूड़ामणि में माया के विषय में क्या कहा गया है?

विकल्प **1.** माया परमेश्वर की एक शक्ति है

2. माया अचेतन सूक्ष्म परमाणुओं का सागर है

85. ''बाहेर भेख देख भुलाने, तुम भीतर खोज न कींनी'' से क्या सिखापन मिलता है?

विकल्प 1. बाहरी वेश–भूषा, वक्तृत्व कला, संगीत कला, चमत्कारिक बातों आदि से सद्गुरू की पहचान होती है **2.** ज्ञान की सत्यता और गहनता की परख करना अति आवश्यक है

86. ''भागवत वचन वल्लभी टीका, तुम याकी सुध ना लींनी'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** सुबोधिनी टीका (आदि ग्रंथों) का स्वाध्याय नहीं करने से तुम्हें

सत्य असत्य की परख करने की शक्ति नहीं है
2. गुरूजनों के कथनों पर पूर्ण श्रद्धा रखनी चाहिए

प्रकरण 11

87. ''रे हूं नाहीं सिध साध संत री भगत'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प 1. सिद्ध चमत्कारी पुरूषों के अंदर परमात्मा होता है **2.** सिद्ध चमत्कारी होने से यह प्रमाणित नहीं होता कि उसके अंदर परमात्मा है

88. ''तप न जप न ध्यान'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान के बिना जप तप ध्यान से ब्रह्म साक्षात्कार नहीं हो सकता है 2. परमात्मा जप, तप, ध्यान से प्राप्त नहीं होते हैं

89. ''रे हूं नाहीं सब्द सोहं'' में 'सोऽहम्'' शब्द का क्या अर्थ होता है?
विकल्प **1.** वह ब्रह्म (ब्रह्मसत्ता) मैं ही हूं 2. वह ब्रह्म स्वप्न–जगत् से परे है

90. ''ना खट चक्र सिर पवन'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प **1.** शरीर में स्थित हृदय आदि छह चक्रों के ध्यान से मेरा साक्षात्कार नहीं होता है 2. सभी प्राणियों के हृदय में परमात्मा है

91. ''ना मांहे बाहेर ना सुंन'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प **1.** परमात्मा इस शरीर व संसार में नहीं है
2. परमात्मा सभी प्राणियों के हृदय में है

92. ''रे हूं नाहीं न्यारा जहां हूं तहां नजीक में'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प 1. परमात्मा सभी प्राणियों के हृदय में है
2. प्रियतम परब्रह्म परमधाम में सभी ब्रह्मात्माओं के अत्यंत समीप हैं

प्रकरण 12

93. ''मीठडी वल्लभाचारज वानी'' से तात्पर्य कौन से ग्रंथ से है?
विकल्प 1. श्रीमद्भागवत **2.** सुबोधिनी टीका

94. ''ए पांचों प्रले हो जासी, पीछे कब ढूंढोगे अपना वतन'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. स्वर्ग वैकुण्ठ निराकार ही अखण्ड धाम है **2.** मृत्युलोक में स्थित गोकुल वृंदावन का महाप्रलय में लय हो जायेगा तब आत्मा का अखण्ड निवास कहां होगा अर्थात् आत्मा को मुक्ति कहां मिलेगी

95. ''मांहें अंधेर और वैष्णव कहावो'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. पारम्परिक वेशभूषा, दिखावा और कर्मकाण्ड से सच्चे वैष्णव का पता चलता है **2.** जिसके हृदय में अज्ञानता और मायावी तृष्णा है, उसे वैष्णव नहीं कहा जा सकता

96. ''वल्लभ वानी समझे बिना खोवत निध तुमारी'' में कौन सी निधि खोने की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. परमधाम का आनंद **2.** ब्रज रास का आनंद

97. ''ना त्रास सील संतोख'' से क्या सिखापन मिलता है?

विकल्प **1.** अपने बुरे कर्म फल स्वरूप प्राप्त होने वाले दुखों से डरना चाहिये 2. भविष्य में प्राप्त होने वाले बीमारी बुढ़ापा मृत्यु के दुःखों की कोई चिंता नहीं करनी चाहिये।

98. ''धूरत करके ल्यावो धन'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** लोगों के सामने दिखावा करके, अपनी प्रशंसा अपने मुख से करके लोगों से भेंट दक्षिणा प्राप्त करना 2. बिना दिखावे निष्काम भक्ति में लगे रहना, चाहे दक्षिणा प्राप्त हों या ना हों

99. ''मेले मेलो मुख भाखो उछव, पातलिये डालो प्रसाद'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** बड़ा मेला भण्डारा करने से लोग उसे बड़ा महाराज मानने लगते हैं 2. मेला भण्डारे में पत्तल में प्रसाद डालकर बेचते हैं

100. ''ओ हांसी ठठोली करे हरामी'' में हरामी शब्द क्यूं प्रयोग किया गया है?

विकल्प **1.** जिस कृष्ण के नाम से रोजी रोटी चला रहे हैं, उन्हें छोटी जाति कहकर उनका प्रसाद नहीं लेते
2. जिन लोगों से सेवा लिया उनकी सेवा नहीं करते

101. ''ए बानी उत्तम चढ़ावे ऊंचे'' के अनुसार वल्लभाचार्य जी की वाणी कहां तक पहुंचाती है?

विकल्प 1. वैकुण्ठ **2.** अखण्ड ब्रज रास 3. परमधाम

102. ''कठिन पंथ चढ़ाए नहीं ऊंचे'' में कठिन पंथ किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** तप संयमित साधनामय जीवन को 2. बहुदेवपूजा कर्मकाण्ड को

103. ''कुकरम करो कुटिल गत चालो'' में कुटिल गत किसे कहा है?
विकल्प 1. क्रोध विरोध को **2.** झूठी चुगली, झूठी प्रशंसा, दुष्प्रचार को

104. ''ए तो दुष्ट दासी की कमाई'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** अनीति से कमाए मायावी धन की वजह से बुद्धि खराब होना
2. माया की वजह से बुद्धि खराब होना

105. ''इन प्रकास में खेलें श्रीकृष्ण जी, रमें अखंड लीला रास।।१६।।'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प **1.** श्रीकृष्णजी का स्वरूप बेहद मण्डल में अखण्ड रास लीला की चौथी बहिश्त में है 2. श्रीकृष्णजी का स्वरूप परमधाम में है

106. ''तुम पनधारी आतम निवेदी'' में 'आतम निवेदी' से क्या अभिप्राय है?
विकल्प 1. अर्जी प्रार्थना करना
2. आत्मा (सखी) भाव से धणी से निवेदन (ध्यान) करना

<u>प्रकरण 13</u>

107. ''आए मिलो रे वैष्णव पारखी'' सत्य–असत्य की परख करने की क्षमता कैसे आती है?
विकल्प **1.** स्वाध्याय मंथन करने से 2. मात्र श्रद्धा विश्वास रखने से

108. प्रतिबिम्ब गोपियां किसे कहते हैं?
विकल्प 1. कुमारिका सखियों के जीवों को **2.** पहले के ब्रह्माण्ड के गोपियों के समान नये ब्रह्माण्ड में उत्पन्न सभी गोपियों को

109. ''याही सुरत की सखियां भईं, <u>प्रतिबिम्ब वेद ऋचा</u> जो कही।।'' के अनुसार प्रतिबिम्ब गोपियों के अंदर कौन आया था?
विकल्प **1.** वेदऋचा सखियां 2. कुमारिका सखियों के जीव

110. ''एक रंचक रहे जो ब्रह्मांड की, तो टीका को होवे रे भंग।।६।।'' सुबोधिनी टीका का वचन किस प्रकार असत्य हो जायेगा?
विकल्प 1. यदि ब्रज रास को अखण्ड मानें तो
2. यदि मृत्युलोक के गोकुल वृंदावन में ही अखण्ड ब्रज रास मानें तो

111. ''रात दिन अखण्ड कहे बृज में, दिन नाहीं वृन्दावन रास।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. बाल मुकुन्द और बांके बिहारी एक साथ ही परमधाम में हैं
2. बाल मुकुन्द और बांके बिहारी अलग अलग (चौथी व पांचवी बहिश्त में) अखण्ड है

112. ''एक चित ग्रह्या ब्रज को, ग्रह्या बुध रास रोशन।। बड़ी वृत 115/14'' के अनुसार रास लीला कहां अखण्ड है?

विकल्प 1. सबलिक ब्रह्म में **2.** केवल ब्रह्म में

113. ''या इंड कल्पांत करके, फेर अखण्ड किये मिने दिल।। क.हि. 20/25'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. नित्य वृंदावन को केवल ब्रह्म से नीचे सबलिक ब्रह्म में स्थानांतरित कर दिया गया **2.** नित्य वृंदावन के उस ब्रह्माण्ड का लय हो जाने (स्वप्न से जागने) के बाद दिल में अखण्ड कर दिया

114. निम्न में से कौन सा कथन सत्य है?

विकल्प 1. अखण्ड ब्रज व रास लीला में श्रीकृष्ण जी का एक ही स्वरूप अखण्ड है **2.** अखण्ड ब्रज में श्याम वर्ण बाल स्वरूप बाल मुकुन्द तथा अखण्ड रास में गौर वर्ण किशोर स्वरूप कृष्ण हैं

115. ''सो सुखे तुम कैसे पाओगे'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए, सुख सुविधाओं में रहते हुए भी अखण्ड के सुख प्राप्त कर सकते हो **2.** बिना किसी कष्ट त्याग संयम साधना के अखण्ड के सुख नहीं प्राप्त कर सकते

116. ''तुम वैभवें लगे रे विलास'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** आप सब संत महात्मा भक्त जन निष्काम भक्ति छोड़कर भौतिक सुखों में लिप्त हो 2. आप सब संत महात्मा भक्ति जन निष्काम भक्ति करते हुए परमात्मा के आनंद में मग्न हो

प्रकरण 14

117. ''जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस।'' के अनुसार मोक्ष किस प्रकार प्राप्त होगा?

विकल्प **1.** अपने आत्म स्वरूप की पहचान करने से
2. तरह तरह की वेश भूषा धारण करने से

118. ''चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल'' स्वच्छता

से भोजन बनाने से क्या लाभ होगा?

विकल्प 1. मन निर्मल हो जायेगा **2.** भोजन में कुछ सतोगुण आयेगा

119. ''जोलों प्रेम न उपजे पिउ सों, तोलों मन न छोड़े फेर'' हमारा मन कब भटकना छोड़ेगा?

विकल्प 1. सौ माला धारण करने से और द्वादश तिलक करने से

2. जब हमारे हृदय में परमात्मा का प्रेम आ जायेगा

120. ''तान मान कई रंग करो, अलापी करो किरंतन।'' कीर्तन गायन किस स्थिति में लाभदायक है?

विकल्प 1. शास्त्रीय संगीत, राग अलाप होने से

2. वैराग्य विरह सहित और अर्थ समझकर गाने से

121. ''उच्छव करो अंनकूट का, विविध करो प्रसाद।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. स्वादिष्ट 56 भोग लगाने से भगवान प्रसन्न हो जाते हैं

2. विरह–वैराग्य–श्रद्धापूर्वक अर्पित करने से भगवान भोग स्वीकार करते हैं

122. ''अर्थ करो द्वादस के'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. 12 मात्रा के कारण एक श्लोक के 12प्रकार के अर्थ हो जाते हैं

2. 12 मात्रा एक अक्षर के होते हैं और एक श्लोक में ऐसे 32 अक्षर होते हैं, इस कारण एक श्लोक के 384 प्रकार के अर्थ हो सकते हैं

123. ''उड़ो गड़ो चढ़ो पांच में'' में 'गड़ो' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. पाताल में चले जाना

2. जमीन में कुछ दिनों या महीनों के लिये दबा देने पर भी जीवित रहना

124. ''उड़ो गड़ो चढ़ो पांच में'' में 'चढ़ो पांच में'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. पांच तत्व के ब्रह्माण्ड में घूम आना

2. पांच तत्व के अन्य शरीरों में प्रवेश कर लेना

125. ''आगम भाखो मन की परखो, सूझे चौदे भवन । मृतक को जीवत करो'' आदि सिद्धि प्राप्त कर लेने से क्या प्रमाणित होता है?

विकल्प 1. कि वह साक्षात् परमात्मा है

2. ये सिद्धियां परमात्मा की प्राप्ति/साक्षात्कार में विघ्न रूप होते हैं

प्रकरण 15

126. ''पतित सिरोमन यों कहे जो मैं किए हैं बज्रलेप, मेरे साहेब सों द्वेष'' में पतित क्यूं कहा जा रहा है?

विकल्प 1. श्रीराजजी से द्वेष किया

2. 14 लोकों के मालिक विष्णु की पूजा छोड़ दिया

127. ''उलटा कोई नहीं रे यामें , पतित किने न केहेलाया'' संसार में कोई भी पतित क्यूं कहलाता है?

विकल्प 1. क्योंकि वह गलत मार्ग में है

2. क्यूंकि वह दुनिया से विपरीत मार्ग में है

128. 'महामाया आदिनारायण की शक्ति है'ये कथन सत्य है या असत्य?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

129.''बोहोत दौड़े सो सुन्य तोड़ी, आड़ी पड़ी निराकार''से क्या आशय है?

विकल्प 1. अंतरिक्ष में भटकने–दिशा भ्रम होने के कारण वे निराकार को पार नहीं कर पाये **2.** महामाया एक स्वाप्निक चेतना शक्ति है, जिसके अंशरूप सभी जीव उसमें समाहित हो (गल) जाते हैं?

130. ''सुन्य निराकार पार परआतम'' में किसके परात्म की बात कही है?

विकल्प 1. ब्रह्मात्माओं की **2.** समस्त जीव चेतनाओं की

131. ''बोहोत बरस मैं राखी अंदर, अब तो ढांपी न जाई।''में क्या छिपाने या बताने की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. महामति जी के अंदर श्रीराजजी विराजमान है, इस बात को

2. आत्मा परमात्मा के मूल स्वरूप धाम लीला के ज्ञान को

प्रकरण 16

132. ''दुख रे प्यारो मेरे प्रान को'' में कौन से दुख को प्राण से भी प्यारा कहा जा रहा है?

विकल्प 1. भौतिक सुखों के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले दुःखों को

2.श्रीराजजी के सेवा–समर्पण–साधना के मार्ग में प्राप्त होने वाले दुःखों को

133. ''जो मैं लियो है बुलाए'' में दुख बुलाने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. हमने परमधाम में श्रीराजजी से दुःख मांगा था

2. मैंने सेवा–समर्पण–साधना का मार्ग स्वयं चुना है

134. वैराग्य कब उत्पन्न होता है?

विकल्प **1.** भौतिक सुखों की नश्वरता और दुःखरूपता के ज्ञान सहित भौतिक दुःख प्राप्त होने पर 2.मात्र सांसारिक दुःख प्राप्त होने पर

135. ''जिन सुख पिउजी न मिले, सो सुख देऊं रे जलाए।'' में सुखों को जलाने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** भौतिक सुखों की चाहना और उपभोग दोनों का त्याग करना
2. मात्र भौतिक सुखों की चाहना छोड़ना (उपभोग कर सकते हैं)

136. ''जिन दुख मेरा पिउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए।।'' में कौन से दुःखों को बुलाया जा रहा है?

विकल्प 1. भौतिक सुखों के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले दुःखों को
2. प्रेम सेवा समर्पण साधना के मार्ग में प्राप्त होने वाले दुःखों को

137. ''दुख के भागे सब फिरें, कोई विरला साध निबाहे।।'' दुःख से भागने का प्रयास ना करने को ग्रंथों में क्या कहा गया है?

विकल्प **1.** तितिक्षा 2. शमन

138. ''दुख की प्यारी प्यारी पिउ की'' के अनुसार श्रीराजजी की प्रिय सखी (आत्मा) कौन होती है?

विकल्प 1. सांसारिक सुखों को चाहने वाले **2.** श्रीराजजी के मार्ग में प्राप्त होने वाले दुःखों को सहर्ष स्वीकार करने वाले

139. ''रात दिन अगनी जले, तब जाए नींद उड़ाए'' आशा तृष्णा किस प्रकार समाप्त हो सकती है?

विकल्प 1. एक दो बार दुःख प्राप्त होने पर
2. रात दिन दुःख प्राप्त होते रहने पर

140. ''महामत खेले अपने लाल सों, जो अछरातीत कह्यो।'' में इंद्रावती जी क्या कह रही हैं?

विकल्प **1.** श्रीराजजी के साथ ध्यान में परात्म स्वरूप में प्रेम आनंदमयी लीलाएं कर रही हैं 2. श्रीराजजी के स्वरूप में लीन हो गयी हैं

<u>प्रकरण 17</u>

141. ''सखी री आतम रोग बुरो लग्यो'' ''जिन पीठ दई परआतम'' में आतम रोग से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. प्रेम रोग **2.** आत्म विस्मृति का रोग

142. ''ए रोग क्यों ए ना मिटे, जो लों देखे ना मुख ब्रह्म'' के अनुसार निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. प्रेम का रोग श्रीराजजी के दर्शन से दूर होता है
2. आत्म विस्मृति का रोग श्रीराजजी के दर्शन से दूर होता है

143. ''सो दुख कैसे छोड़िए, जासों पाइए पिउ मनुहार'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. विरह का दुःख कैसे छोड़ा जाये
2. श्रीराजजी के सेवा साधना व जागनी कार्य को कैसे छोड़ा जाये

144. ''कहा करूं मैं तिन सुख को, आखिर जित जलन।'' के अनुसार भौतिक सुखों का परिणाम क्या होता है?

विकल्प **1.** रोग दुःख अशांति 2. प्रेम आनंद

145. ''ताथें सुख को छोड़ के, दुख ले सके सो ले।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए भी परमात्मा का साक्षात्कार प्राप्त हो सकता है **2.** भौतिक सुखों का त्याग अति आवश्यक है

146. ''इन दुख से कोई जिन डरो'' में कौन से दुःख से नहीं डरने कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी के मार्ग में प्राप्त होने वाले दुःखों से
2. सांसारिक भोगों के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले दुःखों से
3. विरह के दुःख से कोई मत डरो

147. ''दुखतें विरहा उपजे'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी के मार्ग में प्राप्त होने वाले दुःखों से विरह उत्पन्न होता है 2. विरह के दुःख से विरह उत्पन्न होता है

148. निम्न में से कौन सा कथन सत्य है?

विकल्प 1. मात्र विरह से प्रेम उत्पन्न हो जाता है **2.** विरह के साथ परमधाम, एवं वहां के स्वरूप व प्रेम लीलाओं का ज्ञान होना भी आवश्यक है

149. ''दुख तें अपने पिउ का, आवत विरह वैराग।।'' के अनुसार वैराग्य कैसे उत्पन्न होता है?

विकल्प 1. विरह के दुःख से वैराग्य उत्पन्न होता है

2. माया संसार से दुःख प्राप्त होने पर वैराग्य उत्पन्न होता है

150. ''सुख माया को मूल है, सो चाहे बढ़यो विस्तार।'' के अनुसार भौतिक सुख–सफलता प्राप्त होते रहने पर क्या होता है?

विकल्प **1.** आशा–तृष्णा अशांति और ज्यादा बढ़ते जाती है

2. तृप्ति होकर मन शांत हो जाता है

151. ''तिन साधो सुख तजिया, वास्ते अपने करतार।।'' के अनुसार परमात्मा के साक्षात्कार के लिये क्या आवश्यक है?

विकल्प 1. मात्र सुखों की इच्छा का त्याग पर्याप्त है

2. इच्छा के साथ–साथ भौतिक सुखों का भी त्याग आवश्यक है

152. ''ए दुख बातें सोई जानहीं, जाको आई वतन खुसबोए।'' के अनुसार दुःख का महत्व कौन जानेगा?

विकल्प **1.** जिसे दुःख–विरह में धणी का सुख प्राप्त हुआ हो

2. जिसके दिल में दुःख की स्थिति में सुख की आशा बनी रहती है

153. ''जो माया को सुख जानहीं, ताथें हुए बेमुख।'' के अनुसार धणी से कौन विमुख होता है?

विकल्प 1. जो माया–भौतिक सुखों को दुःखरूप जानते हैं

2. जो भौतिक सुखों को ही वास्तविक सुख समझते हैं

154. ''दुख तो मोहोंगे मोल को, मैं देख्या दिल ल्याए।'' के अनुसार धणी के मार्ग में आये दुःखों को कौन सहन–स्वीकार कर सकता है?

विकल्प **1.** जिनके दिल में धाम धणी की तड़प है

2. जो आराम से धाम धणी को प्राप्त करना चाहता है

155. ''ताथें दुख फेर फेर लिया, अब सुख लागत है जेहेर।'' के अनुसार सुख जहर के समान क्यूं लगने लगे?

विकल्प 1. भोगों के परिणाम स्वरूप रोग प्राप्त होने के कारण

2. धणी का दर्द विरह समाप्त हो जाने के कारण

156. ''वाको सो दुःख फेर फेर, हिरदे चढ़ चढ़ आए'' पुनः पुनः हृदय में कौन से अनुभव की यादें प्रकट हो जाती हैं?

विकल्प 1. दुःख के पल **2.** दुःख विरह में प्राप्त धणी के सुखों की यादें

प्रकरण 18

157. ''मैं तो बिगड़या विश्व थें बिछुरया'' में किस तरह बिगड़ने की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. बुरे कार्य करने लगा

2. कर्मकाण्ड, दिखावे की भक्ति, भोग विलासिता का मार्ग छोड़ दिया

158. ''जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा।।'' में 'वेद मर्यादा' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. वेदों के निर्देश

2. पंडितों द्वारा बनाये गये पूजा कर्मकाण्ड के नियम

159. उपरोक्त चौपाई में 'कुल मर्यादा' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. माता पिता का सम्मान **2.** कुल की परम्परा रीति रिवाज

160. ''लोक सकल दौड़त दुनियां को'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. संयमित साधनामय जीवन की तरफ बढ़ना

2. धन संपत्ति प्रतिष्ठा स्वादिष्ट भोजन आदि के पीछे भागना

161. ''मैं सब देखत हूं ए भरमना, सो इनों सत कर पाई ।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** सांसारिक सुख नश्वर व दुःखरूप हैं

2. भौतिक सुख शाश्वत हैं, शांति दायक हैं

162. ''मैं कहूं दुनियां भई बावरी, ओ कहे बावरा मोही।'' दुनिया में बांवरा किसे माना जाता हैं?

विकल्प 1. जो गलत मार्ग में है किन्तु बहुमत में है

2. जो सत्य मार्ग में होने पर भी अल्प मत में है

163. ''चित में चेतन अंतरगत आपे, सकल में रह्या समाई'' के अनुसार सभी प्राणियों के ह्रदय में जीव चेतना के रूप में व संसार के कण कण में किसका वास है?

विकल्प 1. परमात्मा **2.** ब्रह्मसत्ता

प्रकरण 19

164. ''मुझ जैसा दिवाना न कोई'' में 'दिवाना' किसे कहा जा रहा है?

विकल्प 1. भविष्य के लिये धन संपत्ति व सामाजिक प्रतिष्ठा का ध्यान

रखने वाले **2.** आत्म कल्याण–धणी की तड़प में सांसारिक लाभ–हानि, सम्मान–अपमान आदि का विचार नहीं करने वाले

165. ''मैं त्रिलोकी अगिन कर देखी'' स्वर्ग व वैकुण्ठ के सुखों को अग्नि के समान देखने का क्या कारण है?

विकल्प **1.** क्यूंकि वहां के सुख भी नश्वर अस्थायी हैं
2. क्यूंकि वहां भी बहुत सुख है

166. ''जब मैं मरम पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई।'' के अनुसार मोहजल का मर्म क्या है?

विकल्प **1.** संसार नश्वर, दुःखस्वरूप, बीमारी, बुढ़ापा, मृत्यु से युक्त है
2. संसार सुख रूप अखण्ड अविनाशी है

167. ''ए सूरे पांऊं धरें क्यों पीछे'' दुनिया वाले बहादुर किसे कहते हैं?

विकल्प **1.** जो दो नम्बर से धन कमाये और दिखावे की भक्ति करे
2. जो वैराग्य के कारण एक परमात्मा के मार्ग पर चल पड़े

168. ''इनमें से नाठया मैं निसंक कायर होए,.....सुन्य निरंजन छोड़ मैं न्यारा, जाए पड़या पार अखंड।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. माया से भागते भागते निराकार बेहद से परे परमधाम पहुंच गया
2. मृत्युलोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ, निराकार के नश्वर सुखों की चाहना छोड़कर परमधाम का ध्यान किया

169. ''अब तो कछुए न देखत मद में'' मद से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1.शराब तंबाकू आदि का नशा **2.** धन पद प्रतिष्ठा जवानी का नशा

<u>प्रकरण 20</u>

170. ''दुनी दुनी पें चाहे दुनियां'' के अनुसार दुनिया वाले दुनिया के गुरूजनों एवं देवी–देवताओं से क्या अपेक्षा रखते हैं?

विकल्प 1. ब्रह्मज्ञान **2.** मनोकामना

171. ''ताथें करामात ढूंढे'' के अनुसार दुनिया वाले किसकी खोज में रहते हैं?

विकल्प **1.** चमत्कारी सिद्ध गुरूजनों की 2. ब्रह्मज्ञान की

172.'पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिच्छा और मूंडें'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. गुरू और शिष्य दोनों मिलकर सत्य ज्ञान का प्रचार करते हैं

2. शिष्य अपने गुरू के विषय में चमत्कारिक बातों का प्रचार करते हैं, इस प्रकार दोनों मिलकर दुनिया वालों को ठगते हैं

173. ''साधो केहेर कही करामात'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. चमत्कारिक बातों से परब्रह्म स्वरूप सद्गुरू की पहचान होती है

2. सत्य ब्रह्मज्ञान से सद्गुरू की पहचान होती है

174. ''झूठी दृष्ट जो बांधी झूठ सों, ताथें दिल ना लगत क्यों ए सांचे'' का क्या आशय है?

विकल्प 1. सत्य ज्ञान को परखकर किसी को परमात्मा मानते हैं

2. चमत्कार के आधार पर किसी गुरू को परमात्मा मान लेते हैं, ज्ञान समझने की शक्ति उनमें नहीं होती है

175. ''महामत तासों कीजे मिलाप'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मात्र सद्गुरू के चरणों में आकर आशीर्वाद ले लो

2. सद्गुरू के चरणों में आकर उनसे ज्ञान प्राप्त कर लो

<u>प्रकरण 21</u>

176. ''मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन।।'' में निर्गुण से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणु

2. संसार के कण–कण में और सभी प्राणियों के हृदय में जीव चेतना के रूप में स्थित निराकार ज्योति स्वरूप ब्रह्मसत्ता

177. ''ऊपर तले मांहें बाहेर, खोज्या कैयों जन।'' में 'माहें'' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** शरीर के अंदर 2. ब्रह्माण्ड के अंदर

178. ''नेहेचल न्यारा सबन से'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** परमात्मा नश्वर स्वाप्निक जगत् से परे है

2. परमात्मा सभी प्राणियों के हृदय में है

179. ''निराकार कासों कहिए'' दुनिया वाले निराकार ब्रह्म किसे कहते हैं?

विकल्प **1.** संसार के कण–कण में और सभी प्राणियों के हृदय में जीव चेतना के रूप में स्थित निराकार ज्योति स्वरूप ब्रह्मसत्ता को

2. जगत् के चारों ओर स्थित अचेतन सूक्ष्म परमाणु को

180. ''कासों कहिए निरंजन'' में 'निरंजन' किसे कहा गया है?

विकल्प 1. अवयव से रहित अचेतन सूक्ष्म परमाणु

2. अवयव से रहित स्वाप्निक चेतना शक्ति/ब्रह्मसत्ता को

181. ''क्यों व्यापक क्यों होसी फना'' के अनुसार संसार के कण–कण में कौन व्यापक है?

विकल्प **1.** स्वाप्निक चेतना शक्ति/ब्रह्मसत्ता 2. कण कण में कोई ब्रह्मसत्ता नहीं है, जीव और प्रकृति – यहां मात्र दो ही तत्व हैं

182. ''क्यों सरूप है प्राकृत को'' प्रकृति (दृश्यमान जगत्) को वेदांत दर्शन में क्या माना गया है?

विकल्प 1. सूक्ष्म अचेतन परमाणु **2.** सर्परज्जुवत् असत्य

183. ''मोह अग्यान भरमना, करम काल और शून्य। ये नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** मोह अज्ञान भ्रम कर्म काल शून्य निराकार और निर्गुण – ये सारे नाम नींद के हैं 2. मोह, अज्ञान, भ्रम, कर्म, काल, शून्य, नींद– ये सारे नाम निराकार और निर्गुण के हैं

<u>प्रकरण 22</u>

184. ''अपनी छायासों आप बिगूती'' जीवों को माया की छाया क्यूं कहा गया है?

विकल्प 1. समस्त जीव माया (अचेतन सूक्ष्म परमाणु) के अंश हैं इसलिये

2. समस्त जीव चेतनाएं माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) के अंश हैं इसलिये

185. ''सत सब्द को कोई न चीन्हे'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. अखण्ड ज्ञान का महत्व नहीं समझते

2. ब्रह्मज्ञान के विषय में सत्य–असत्य का निर्णय नहीं कर पाते

186. ''सूने हिरदे नहीं संभार'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** उनका हृदय वैराग्य आत्मकल्याण की तड़प से रहित है, इसलिये उन्हें ज्ञान समझ में नहीं आता है

2. उनका हृदय ज्ञान समझता है किंतु याद नहीं रहता

187. ''स्यानप लेके कंठ बंधाए'' के अनुसार गले का फंदा क्या है?

विकल्प 1. बुद्धिमान ज्ञानवान होना **2.** मैं सबसे बड़ा ज्ञानी, ध्यानी,

ब्रह्मस्वरूप सद्गुरू हूं , ऐसा अहंकार करना

188. ''रे मूढ़मती या फंद में उरझे, उपजत नहीं विचार।'' से क्या सिखापन मिलता है?

विकल्प **1.** गलत ज्ञान उपदेश सुनकर भी संशय या जिज्ञासा नहीं उत्पन्न होता है 2. गुरू के वचनों के प्रति श्रद्धा रखते हुए उसे आंख मूंदकर मान लेना चाहिये।

189. ''तब बल ना चले इन नारी को'' माया को नारी क्यूं कहा गया है?

विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणु होने के कारण

2. परब्रह्म की एक शक्ति होने के कारण

190. ''महामत यामें खेलत पिया संग'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. महामति जी मात्र परमात्मा के स्वरूप का ध्यान कर रहे हैं

2. महामति जी परात्म स्वरूप में स्वयं को देखते हुए प्रियतम के साथ 25 पक्ष में प्रेममयी लीलाओं का ध्यान कर रहे हैं

<u>प्रकरण 23</u>

191.''ए सब कोई है स्याना'' में 'सयाने' शब्द से दुनिया की किस स्थिति का पता चलता है?

विकल्प 1. दुनिया वाले बुद्धिमान हैं **2.** दुनिया वालों को ब्रह्मज्ञान नहीं है, अंधभक्ति करते हैं, फिर भी स्वयं को महाज्ञानी समझते हैं

192. ''रे हो याही फंद में साध संत री, पुकार पुकार पछताना'' का क्या आशय है?

विकल्प 1. इस छलनी माया के फंदे में साधू संत भी फंसे हुए हैं

2. दुनिया वालों को साधू संतों ने भी माया की नश्वरता समझाने का प्रयास किया किंतु उनकी मेहनत व्यर्थ गयी

193. ''चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना।।'' चौपाई में 'चतुराई' शब्द का क्या आशय है?

विकल्प 1. श्रोताओं को लुभाने की कला **2.** सत्य ज्ञान कहने की कला

194. ''नहीं कोई नेह समाना।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. ज्ञान (वाणी मंथन, ब्रह्मज्ञान) प्रेम में बाधक है, ज्ञान की तरफ नहीं, प्रेम की तरफ बढ़ो

2. हृदय में प्रेम उपजाने के लिये ही ब्रह्मवाणी आयी है

195. ''अहनिस आवेस हुअड़ा अंग में'' महामति जी के अंदर कौन से आवेश (जोश) के होने की बात कह रहे हैं?

विकल्प 1. सत्ता के आवेश (जोश) **2.** प्रेम के आवेश (जोश)

196. ''महामत प्रेमें खेले पिया सों'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. आत्मा धणी के प्रेम में जागनी रास खेल रही है

2. ध्यान में स्वयं को सखी (परात्म) स्वरूप में देखते हुए धनी के साथ प्रेममयी लीलाएं कर रही हैं

<u>प्रकरण 24</u>

197. ''ए नाहीं दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ख्याल।।'' के अनुसार ये दुनिया बांवरी नहीं है तो क्या है?

विकल्प 1. बुद्धिमान **2.** दृश्य प्रपंच/स्वप्न दृश्य

198. ''ए रच्यो माया ख्याल।।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** ये दुनिया स्वप्न के समान अस्तित्वहीन है

2. ये दुनिया सारहीन व नश्वर है

199. ''जीव का घर है नींद में'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. जीव का शरीर, अंतःकरण, इंद्रियां, अचेतन सूक्ष्म परमाणु/मोहतत्व से बने हैं **2.** जीव चेतना, मोह सागर/महामाया/स्वाप्निक चेतना शक्ति का अंश रूप है

200. ''रे मन त्रिखा न बूझे तेरी झांझुए, प्रतिबिंब पकस्यो न जाए।''का क्या आशय है?

विकल्प 1. अयोग्य दुनिया वालों को बदला नहीं जा सकता

2. परमात्मा के संकल्प से चल रहे दृश्य को बदला नहीं जा सकता

201. ''जैसा जाग्रत देखत, तैसा नींद में देखत।'' अक्षरब्रह्म हमेशा से इस संसार रूपी खेल को जागृत अवस्था में देखा करते थे, मात्र इस ब्रह्माण्ड में वे फरामोशी में हैं।

विकल्प **1.** सत्य 2. असत्य

202. इस संसार रूपी स्वप्न के लिये कौन सा कथन सत्य है?

विकल्प 1. परमधाम में सखियों के चित्त में श्रीराजजी बसे हैं, इसलिये यहां माया में भी उनके दिल में श्रीराजजी का प्रतिबिम्ब है **2.** इस संसार रूपी स्वप्न में ब्रह्मप्रियाओं के, ना बुद्धि का ज्ञान है, ना चित्त के संस्कार हैं, ना मन का संकल्प–विकल्प है, मात्र हृदय दृष्टि खेल को देख रही है।

203. ''सत सब्द को सोई चीन्हे, जो होए वासना ब्रह्म।'' के अनुसार विभिन्न गुरूजनों के कथनों के मध्य सत्य कथन को कौन पहचानेगा?

विकल्प 1. सभी सृष्टि के लोग **2.** ब्रह्मसृष्टि

204. ''ए तो चौदे चुटकी में चल जासी'' के अनुसार 'चल जासी' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** सृष्टि का लय हो जायेगा/संसार स्वप्न दिखना बंद हो जायेगा 2. संसार को नष्ट कर दिया जायेगा

205. ''तूं उलट याको पीठ दे, प्रेमें खेल पियासों रंग।'' में पीठ देने से क्या आशय है?

विकल्प 1. मायावी जगत् को पीठ दे दो **2.** अयोग्य जिज्ञासा रहित दुनिया वालों को जगाने के लिये बहुत ज्यादा परिश्रम ना करो

206. ओ आए मिलेंगे आपही, जासों तेरा है सनमंध।'' के अनुसार कौन आकर मिलेगा?

विकल्प **1.** सुंदरसाथ 2. श्रीराजजी

<u>प्रकरण 25</u>

207. ''रस मगन भई सो क्या गावे।'' में 'गाने' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. किरंतन का गायन करना **2.** ब्रह्मज्ञान चर्चा करना

208. प्रेम में मग्न होने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** प्रियतम परब्रह्म के स्वरूप, प्रेम भरी बातों एवं प्रेममयी लीलाओं के चिंतन–ध्यान में मग्न होना 2. प्रेम में डूबने पर श्रीराजजी के सिवा कोई नहीं रहता, ना परमधाम रहता है ना स्वयं का अस्तित्व रहता है

209. सतोगुण प्रेम की स्वाभाविक अवस्था है?

विकल्प 1. सहीं **2.** गलत

210. ''बिचले गुन पख इन्द्री अंग'' में पक्ष से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** पुष्टि, मर्यादा, प्रवाह 2. कृष्ण पक्ष व शुक्ल पक्ष

211. मुख कौन सी इंद्रिय के अंतर्गत आता है?
विकल्प **1.** कर्मेंद्रिय 2. ज्ञानेंद्रिय

212. ''बिचली दिसा अवस्था चारों'' में वर्णित चार अवस्था कौन से हैं?
विकल्प **1.** जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया 2. जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरियातीत

213. ''नैनों नींद न आवे नीर।'' से आत्मा की किस स्थिति का वर्णन है?
विकल्प **1.** गहन विरह का 2. अत्यंत प्रसन्नता का

<u>प्रकरण 26</u>

214. ''खोज बड़ी संसार'' के अनुसार खोज किसकी करनी है?
विकल्प **1.** सत्य ब्रह्मज्ञान की/ब्रह्मज्ञान प्रदान करने वाले सद्गुरू की
2. ब्रह्मस्वरूप गुरू की, जिसके आशीर्वाद/कृपा से कल्याण हो जाए

215. छठे दिन की लीला में सद्गुरू का वास्तविक स्वरूप व ब्रह्मज्ञान का वास्तविक स्रोत क्या है?
विकल्प 1. प्रसिद्ध चमत्कारी बहुत शिष्य वाले गुरू **2.** तारतम ब्रह्मवाणी

216. सच्चे सद्गुरू की पहचान क्या है?
विकल्प 1. वेश भूषा एवं वक्तृत्व कला 2. चमत्कारों का प्रचार
3. ज्यादा शिष्यों की संख्या (भीड़) **4.** ब्रह्मज्ञान के प्रमाणिक वचन

217. ''भेखे बिगारयो वैराग। डिंभकाइए दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग।'' के अनुसार वैराग्य कैसे कलंकित हो गया है?
विकल्प **1.** वेशभूषा, आडम्बर, ब्रह्मानन्द में डूबे होने का दिखावा किंतु अंदर से अज्ञानता, धन व प्रतिष्ठा का मोह आदि विकार 2. मात्र वेशभूषा ने

218. ''उदर कारन बेचें हरी, मूढ़ों एही पायो रोजगार।'' से क्या सिखापन मिलता है?
विकल्प 1. ज्ञान प्राप्ति व प्रचार रोजीरोटी/आय के हेतु से कर सकते हैं
2. ज्ञान प्राप्ति और प्रचार को धन और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के उद्देश्य से करेंगे तो ब्रह्मज्ञान के गूढ़ रहस्य को नहीं जान सकते

219. ''सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी।।६।।'' वाणी मंथन, सेवा व चितवनि ना करने वाले, और झूठी चुगली, चापलूसी करने वालों को उनके गुनाहों से उनके ब्रह्मस्वरूप गुरू बचा लेंगे?
विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

220. ''जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्म सों पेहेचान।'' के अनुसार सद्गुरू की क्या पहचान है?

विकल्प **1.** जिनके हृदय की निर्मलता, साधना दुनिया के समक्ष वह प्रदर्शित ना करे 2. जिनके शिष्य उन्हें परमात्मा मानते हों, जिनके विषय में चमत्कारिक बातें प्रसारित की जाती हों

<u>प्रकरण 27</u>

221. वेदांत दर्शन में ब्रह्म किसे माना गया है?

विकल्प **1.** सभी प्राणियों के हृदय में जीव चेतना के रूप में स्थित एवं जगत् के कण–कण में स्थित ब्रह्मसत्ता को

2. मात्र जगत् के कण–कण में स्थित ब्रह्मसत्ता को

222. ''अय आत्मा ब्रह्म'' में 'आत्मा' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जीव चेतना 2. ब्रह्मात्मा

223. ''काल आवत कबूं ब्रह्म भवन में'' से क्या पता चलता है?

विकल्प 1. परमात्मा सभी प्राणियों के हृदय में रहता है

2. परमात्मा इस नश्वर जगत् से परे है

224. निजानंद सम्प्रदाय में किस वेद को माना जाता है?

विकल्प 1. यजुर्वेद 2. ऋग्वेद **3.** स्वसं वेद

225. माया को 'जगत् जनेता'' क्यूं कहा गया है?

विकल्प 1. माया (सूक्ष्म अचेतन परमाणु) से सृष्टि की रचना होती है

2. माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) सृष्टि की रचना करती है

226. ''सो कहावत बाल कुमार'' माया को बालिका, कुमारी, जोगिनी कहने का क्या कारण है?

विकल्प **1.** ये जगत् ब्रह्म के संकल्प से माया की शक्ति से उत्पन्न होता है

2. सूक्ष्म परमाणुओं के संगठन विघटन से जगत् की उत्पत्ति होती है

227. ''<u>ए कुंन केहेते हो गया</u>, सो कयामत को फना।। खुलासा 17/71'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** ये जगत् संकल्प मात्र से उत्पन्न होता है और संकल्प मात्र से ही लय हो जाता है

2. इस जगत् के सूक्ष्म परमाणु सुमंगला शक्ति में लीन हो जाते हैं

228. ''मात पिता बिन जनमी'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** ब्रह्म के संकल्प से सुमंगला शक्ति से माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) उत्पन्न होती है

2. सुमंगला शक्ति से अचेतन सूक्ष्म परमाणु उत्पन्न होते हैं

229. माया को अनादि कहने का क्या कारण है?

विकल्प 1. वह अनादि शक्ति है

2. वह अनादि काल से प्रकट और लय होती है

230. ''खेले तीनों काल मगन'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** तीनों कालों में माया ही लीला कर रही है

2. तीनों कालों में माया की ही लीला चल रही है

231. ''विष्णु ब्रह्मा रुद्र जनमें, हुई तीनों की नार।'' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** ब्रह्मा, विष्णु, महेश और उनकी पत्नियों के रूप में यही माया लीला कर रही है 2. मात्र उनकी पत्नियों के रूप में माया लीला कर रही है

3. माया के समान उनकी पत्नियां उन्हें स्नेहपाश में बांध रही हैं

232. ''देव दानव रिखि मुनि, ब्रह्मग्यानी बड़ी मत।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** ये सब माया के ही रूप हैं 2. ये सब माया के आधीन हैं

233. ''बरन चारों विद्या चौदे, ए पढ़ाए भली पर।''से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. चारों वर्णों के लोग वेद आदि 14 विद्या का अच्छी तरह से अध्ययन करते हैं **2.** माया वेद आदि 14 विद्या सबको पढ़ाती है अर्थात् उसके द्वारा भ्रमित करती है

234. ''खेल ऐसे अनेक रचे, नार निरंजन राए।।१४।।'' के अनुसार माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) किसकी स्त्री है?

विकल्प 1. आदिनारायण की अर्धांगिनी है

2. यह माया अव्याकृत में स्थित काल निरंजन की अर्धांगिनी है

235. ''खेल ऐसे अनेक रचे, नार निरंजन राए।।१४।।'' के अनुसार निरंजन की अर्धांगिनी कौन है?

विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणुओं का सागर

2. माया–स्वाप्निक चेतना शक्ति

236. ''ए काली किन पाई नहीं'' में माया को काली क्यूं कहा है?

विकल्प 1. उसके रंग के कारण

2. उसके अज्ञानता, विस्मृति आदि स्वभाव के कारण

237. ''सब छाया में रहे उरझाए'' दृश्यमान जगत् को माया की छाया क्यूं कहा गया है?

विकल्प 1. माया का प्रतिबिम्ब होने के कारण

2. माया शक्ति से उत्पन्न होने व इसके समान गुणधर्मी होने के कारण

238. ''बुधें सुनी न निसानी श्रवनों, तो क्यों कर जाइए तित।'' मन, चित्त, बुद्धि, वाणी की पहुंच ब्रह्म तक नहीं है, ये कथन कब तक के लिये है?

विकल्प **1.** तारतम ज्ञान अवतरण से पूर्व की बात है

2. तारतम वाणी भी उसी श्रेणी में आती है

239. ''चेतन व्यापी जो देखिए, सो भी उड़ावें तिन माहें।।१६।।'' में चेतन व्यापी से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. शरीर में व्यापक जीव चेतना से

2. जगत् के कण कण में और जीव चेतना के रूप में व्यापक ब्रह्मसत्ता

240. ''चेतन व्यापी जो देखिए'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. जगत् के कण कण में कोई चेतना शक्ति व्यापक नहीं है

2. जगत् के कण कण में ब्रह्मसत्ता (स्वाप्निक चेतना) व्यापक है

241. ''ना कछु ना कछु ए कहें, ओ सत–चिद–आनंद।'' में 'ना कछु' से क्या तात्पर्य है? दुनिया वाले ब्रह्म के विषय में क्या कहते हैं?

विकल्प **1.** ब्रह्म शून्य निर्गुण निराकार निरंजन ज्योति स्वरूप चेतन है

2. ब्रह्म सूक्ष्म परमाणुओं का महासागर है

242. ''असत सत को ना मिले'' के अनुसार ब्रह्म इस जगत् में क्यूं नहीं हो सकता?

विकल्प **1.** ब्रह्म सच्चिदानंद रूप जगत् असत् जड़ दुख को रूप

2. ब्रह्म सभी प्राणियों के हृदय में है

243. ''ए जो व्यापक आतमा'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. परमधाम की आत्मा से

2. कण कण में और जीव चेतना के रूप में विद्यमान ब्रह्मसत्ता से

प्रकरण 28

244. ''सास्त्र अर्थ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार।।१।।'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** शास्त्रों का मंथन करके भी वे ब्रह्म का निर्णय नहीं कर पाए
2. शास्त्रों का मंथन करके ब्रह्म का निर्णय तो किया, परंतु दर्शा नहीं पाये

245. ''माया मोह अहंकार थें, ए सबे उतपन।'' में 'अहंकार' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** आदिनारायण का संकल्प – एकोऽहम् बहुस्याम
2. आदिनारायण का स्वयं को बड़ा समझना

246. ''कोई कहे ब्रह्म आतमा'' के अनुसार कोई क्या कहता है?

विकल्प 1. ब्रह्मात्मा ब्रह्म के स्वरूप हैं
2. आत्मा (जीव चेतना) ब्रह्म के स्वरूप है

247. ''कोई कहे पर आतम'' के अनुसार कुछ लोग क्या मानते हैं?

विकल्प 1. परमधाम में स्थित परात्म ब्रह्म का स्वरूप है
2. जीव चेतना के मूल (कण–कण में स्थित ब्रह्मसत्ता) को ब्रह्म मानते हैं

248. ''कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग।।५।।'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प 1. सभी के हृदय में जीव चेतना के साथ ब्रह्म है
2. सभी के हृदय में स्थित जीव चेतना ही ब्रह्म है

249. ''कोई कहे ए सबे छाया, नांहीं यामें आप।।४।।'' में संसार को किसकी छाया कह रहे हैं?

विकल्प **1.** माया की 2. ब्रह्म की

250. ''कोई कहे ए तेज पुंज, याकी किरना सबे संसार।'' इस कथन के संदर्भ में कौन सा विश्लेषण सहीं है?

विकल्प **1.** ऐसा सम्भव नहीं है क्यूंकि सूर्य के गुण किरणों में होते हैं किंतु संसार में ब्रह्म के गुण नहीं हैं 2. ऐसा सम्भव है क्यूंकि ध्यान में जीव चेतना ज्योति स्वरूप में दिखता है

251. ''कोई कहे याको अंग न इन्द्री, निरंजन निराकार।।'' में 'निराकार' शब्द से वे क्या कहना चाहते हैं?

विकल्प 1. परमात्मा गोल या चौरस नहीं है

2. परमात्मा किसी भी प्रकार के शरीर वाला नहीं है (अशरीरी है)

252. ''कोई कहे ओ पुरूख उत्तम'' के अनुसार वे उत्तम पुरूष किसे मानते हैं?

विकल्प 1. अक्षरातीत परब्रह्म को **2.** योगेश्वर कृष्ण/नारायण को

253. ''कोई कहे आदे आद माता'' में वे 'आदि माता' वे किसे मानते हैं?

विकल्प **1.** माया–स्वाप्निक चेतना शक्ति 2. सुमंगला शक्ति

254. ''कोई कहे ए सबे काल'' वास्तव में वे 'काल' शब्द किसके लिये प्रयोग कर रहे हैं?

विकल्प 1. समय के लिये **2.** ब्रह्मसत्ता के लिये

255. ''कोई कहे ए सबे काल, करम सक्त उपाए।'' में काल के द्वारा कर्म उत्पन्न होने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसत्ता से ही सारे कार्य होना 2. समय के अनुसार कार्य होना

256. ''खेलावे अपने मुख में'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसत्ता के नियंत्रण में 2. ब्रह्म के मुख में

257. ''कोई करे काल को संजम'' संयम करने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** धारणा ध्यान समाधि का योग 2. धैर्य रखना

258. छः दर्शनों के सिद्धांतों में कोई भी आपसी मतभेद नहीं है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

259. निराकार का ध्यान करने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. क्षर जगत् के चारों तरफ स्थित अचेतन सूक्ष्म परमाणु का ध्यान

2. कण कण में एवं सभी प्राणियों के हृदय में जीव चेतना के रूप में स्थित ब्रह्मसत्ता का ध्यान

260. ''समझे बिना सुख पार को नाहीं, जो उदम करो कई लाख।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. ज्यादा ज्ञान (चर्चनी–25 पक्ष, शोभा व लीलाओं) की आवश्यकता नहीं, हृदय चक्र में ध्यान करते रहो

2. निजस्वरूप, परमधाम 25 पक्ष, श्रीराजजी के मूल स्वरूप और वहां होने वाली प्रेममयी लीलाओं का ज्ञान होना अति आवश्यक है

261. ''जो बतावे मूल अंकूर।'' मूल अंकूर की पूर्ण पहचान कैसे होती है?

विकल्प **1.** परमधाम में श्रीराजजी और ब्रह्मप्रियाओं के मध्य होने वाली प्रेममयी लीलाओं के ज्ञान से 2. श्रीराजजी के अतिरिक्त कोई नहीं है/श्रीराजजी भी नहीं हैं, इस ज्ञान से

262. ''आतम अर्थ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर।।१८।।'' के अनुसार तारतम ज्ञान प्राप्त होने पर क्या होता है?

विकल्प 1. परमधाम मूल मिलावे में पहुंच जाते हैं

2. परमधाम मूल मिलावे में बैठे होने का ज्ञान हो जाता है

<u>प्रकरण 29</u>

263. '''सृष्ट तीनों कही कबीर ने, <u>एक परमहंसो हंसो नाम</u>। तीसरी सृष्ट सब जीव की'' में परमहंस शब्द किसके लिये प्रयोग किया गया है?

विकल्प 1. श्रीप्राणनाथजी के लिये **2.** ब्रह्मसृष्टि के लिये

264. ''संत जी सुनियो रे, जो कोई हंस परम।''के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** दुनिया वालों ने सिद्ध चमत्कारी महापुरूषों के लिये परमहंस शब्द प्रयोग किया, जबकि यह ब्रह्मसृष्टि के लिये प्रयोग किया गया है।

2. जो चमत्कारी सिद्ध पुरूष हो उसे ही परमहंस कहा जा सकता है

265. ''नदी किलकिला तीर पे, <u>उतरे परमहंस आये।</u>'' इस चौपाई में परमहंस शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** सुंदरसाथ 2. सिद्धि प्राप्त सुंदरसाथ 3. प्राणनाथजी

266. पांचवे दिन की लीला में परमहंस का अर्थ सुंदरसाथ होता है और छठवे दिन की लीला में प्राणनाथ?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

267.''कोई कहे ए ब्रह्मकी आभा''इस मत का श्रीजी ने क्या जवाब दिया?

विकल्प **1.** तो विकारों से परिपूर्ण लीला कैसे हो रही है

2. परमात्मा सबके हृदय में सुषुप्ति/निष्क्रिय अवस्था में बैठे हैं

268. ''कोई कहे ए कछुए नाहीं, तो ए भी क्यों बनि आवे।'' में क्या सिद्धांत व उत्तर कहा जा रहा है?

विकल्प 1. यह संसार स्वप्न नहीं सत्य है **2.** यहां कुछ भी शक्ति नहीं है, ऐसा नहीं है, यहां कण कण में ब्रह्मसत्ता है

269. ''कोई कहे ए सबे ब्रह्म'' में क्या विचार/मत कहा जा रहा है?
विकल्प **1.** सबके हृदय में स्थित जीव चेतना ही ब्रह्म है
2. सबके हृदय में जीव चेतना के साथ ब्रह्म है

270. ''कोई कहे ए पुरुख प्रकृती'' सांख्य दर्शन के आचार्य पुरूख किसे मानते हैं?
विकल्प **1.** जीव चेतना के रूप में एवं कण कण में स्थित ब्रह्मसत्ता को
2. अव्याकृत ब्रह्म को

271. संसार में ब्रह्म के गुण क्यूं नहीं हैं?
विकल्प **1.** क्यूंकि संसार स्वप्न व ख्याल के रूप में बनता है
2. क्यूंकि संसार प्रत्यक्ष रूप में बनता है

272. सपना व ख्याल सूक्ष्म परमाणु से बनते हैं?
विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

273. ''कोई कहे ए सबे सुपना, न्यारा खावंद है और।'' इस विचार का श्रीजी ने क्या उत्तर दिया?
विकल्प 1. यह संसार स्वप्न नहीं सत्य है
2. ये संसार स्वप्न जब समाप्त होगा, तब ब्रह्म का स्वरूप कहां होगा?

274. ''उपर तले मांहें बाहेर, दसों दिसा सब माया।'' के अनुसार सर्वत्र क्या है?
विकल्प **1.** स्वाप्निक चेतना शक्ति 2. सूक्ष्म परमाणु

275. छः प्रमाणों में से कौनसा प्रमाण अकेले ही प्रमाणित माना जाता है?
विकल्प 1. प्रत्यक्ष प्रमाण **2.** शब्द प्रमाण

276. ''उतपन सारी आवटे, जो कछू कहिए वचन।'' शब्दों में जो कुछ कहा जाता है, वो उत्पत्ति लय वाला है। क्या तारतम वाणी भी इसी के अंतर्गत आती है?
विकल्प 1. हां **2.** नहीं

277. ''अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर।'' का क्या अर्थ है?
विकल्प 1. अहम् समाप्त होते ही ब्रह्म से एकरूपता हो जायेगा
2. स्वप्न में साक्षात् परमधाम का स्मरण होते ही स्वप्न समाप्त हो जाता है

278. ''कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत खोजी पर पर।'' वेदांतियों के

अनुसार 'अद्वैत' शब्द का क्या अर्थ होता है?

विकल्प 1. परमधाम में विराजमान परब्रह्म का स्वलीला अद्वैत स्वरूप
2. जीव रूप से तथा कण–कण में स्थित ब्रह्म (ब्रह्मसत्ता)

279. ''कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत खोजी पर पर।'' सांख्य दर्शन के अनुसार 'द्वैत' शब्द का क्या अर्थ होता है?

विकल्प 1. अव्याकृत मन पुरूष व सुमंगला शक्ति **2.** पुरूष (जीव रूप से एवं कण–कण में स्थित ब्रह्मसत्ता) और प्रकृति (सूक्ष्म परमाणु)

280. ''कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत खोजी पर पर।' तारतम वाणी के अनुसार 'द्वैत' शब्द का क्या अर्थ होता है?

विकल्प 1. जीव और प्रकृति (सूक्ष्म परमाणु) **2.** ब्रह्म से भिन्न गुणधर्मी माया

281. ''रसना मीठी सों कहें, उड़ जात सब द्वैत।। बी. 69/4'' में द्वैत का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. जीव और प्रकृति (सूक्ष्म परमाणु) **2.** ब्रह्म से भिन्न गुणधर्मी माया

282. ''कोई कहे अद्वैत के आड़े, सब द्वैतै को विस्तार।'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. ब्रह्म की ओट (संरक्षण) में जीव और प्रकृति का विस्तार है
2. हमारे और ब्रह्म के बीच में माया (मोह सागर) का विस्तार है

283. ज्ञान की सात भूमिकाओं में कैवल्य विदेहावस्था कौन सी भूमिका होती है?

विकल्प **1.** पांचवीं 2. सातवीं

<u>प्रकरण 30</u>

284. ''बाजीगरें बाजी रची, मूल माया तें मोह अहंकार।'' में मूल माया से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मोह तत्व **2.** सुमंगला शक्ति

285. ''जाको पेड़ प्रतिबिंब प्रकृती, पांच तत्व ही को आकार।'' में किसे किसका मूल कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** दृश्यमान जगत् (प्रकृति) का मूल, माया है
2. इस जगत् का मूल, कारण प्रकृति (सूक्ष्म परमाणुओं का महासागर) है

286. ''जाको पेड़ प्रतिबिंब प्रकृती'' में किसे किसका प्रतिबिम्ब कहा जा रहा है?

विकल्प 1. मूल प्रकृति का प्रतिबिम्ब कारण प्रकृति
2. अक्षर के चित्त के संस्कारों का प्रतिबिम्ब दृश्यमान जगत् (प्रकृति)

287. ''मांहें खेले निरगुन व्यापक, लिए माया मोह अहंकार।'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** संसार के कण–कण में जो माया/ब्रह्मसत्ता व्यापक है, वही सभी प्राणियों के हृदय में जीव के रूप में लीला कर रही है
2.शरीर में व्यापक जीव, माया–मोह के वशीभूत होकर लीला कर रहा है

288. ''लोक चौदे दसो दिस, सब नाटक स्वांग संसार।''का क्या आशय है?

विकल्प 1. ये माया नाटक के समान नश्वर है
2. दृश्यमान जगत् मिथ्या, बनावटी रूप वाला, झूठा, नाटक, स्वप्न है

289. ''क्या दानव क्या देवता'' में दानव किसे कहा गया है?

विकल्प 1. दो सींग वाला राक्षस **2.** तमोगुणी व्यक्ति

290. निम्न में से कौन सा कथन सत्य है?

विकल्प 1. माया का स्वभाव मात्र भ्रमित करने वाला होता है **2.**माया की शक्ति श्रीराजजी के दिल में लिये अनुसार भ्रमित या जागृत करती है

291. ''जल जैसे तरंग तैसे'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. सांसारिक जीव माया के स्वरूप नहीं होते हैं
2. सागर के जल व लहरों के समान माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) के अंशरूप जीवों में माया का ही गुण होता है

292. ''जो बंध बांधे बाप ने, बेटे चले जाए तिन लार।'' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** पूर्वजों ने जो परम्परा व सिद्धांत बनाया है, उनके वंशज उसी मार्ग पर चले जाते हैं
2. त्रिदेवों ने जो नियम बनाए हैं, दुनिया वाले उस पर चले जाते हैं

293. ''खोज खोज खट सास्त्र हुए'' किसमें खोजते हुए 6 शास्त्रों की रचना हुयी?

विकल्प **1.** वेदों में 2. 18 पुराणों में

294. ''किव कर नाम धरें अपने'' अनुसार कविता की रचना क्यूं करते हैं?

विकल्प **1.** बड़ा भक्त–संत कहलाने के उद्देश्य से
2. सबके आत्म कल्याण के उद्देश्य से

295. ''यामें जीव दोए भाँत के, एक खेल दूजे देखनहार।'' में 'देखनहार' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. ब्रह्मसृष्टि **2.** आत्म–साक्षात्कारी जीव

296. ''ऐसे खेल अनेक एक खिन में, करे अग्याएं करतार।'' यहां 'करतार' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अक्षरब्रह्म 2. अक्षरातीत परब्रह्म

297. निम्न में से किस सिद्धांत का वाणी में खण्डन किया गया है?

विकल्प **1.** अहम् ब्रह्मास्मि, तत्वमसि, खल्वमिदं ब्रह्म

2. आकाशफूल, खरगोश सींग, के समान संसार के मिथ्या होने का

<u>प्रकरण 31</u>

298. ''माया ईश्वर त्रिगुन हमथें, हमहीं रहे सबमें व्याप।'' में तथाकथिन वेदांती क्या कहना चाह रहे हैं?

विकल्प **1.** मैं ही संसार के कण–कण में व्याप्त हूं

2. वह ब्रह्म संसार के कण–कण में व्याप्त है

299. ''ईश्वर फिरे न रहें त्रिगुन'' वेदांत मत के अनुसार ईश्वर किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** ब्रह्म (ब्रह्मसत्ता) का प्रकृति/माया में आया अज्ञान दशा का रूप आदिनारायण 2. ब्रह्म का मूल स्वरूप

300. ''खेलें मोह में परे परवस मन। भोमका एक न चढ़ सकें'' अध्यात्म की पहली भूमिका क्या है, जो वे नहीं चढ़ सके?

विकल्प **1.** वैराग्य–मोक्ष की कामना 2. ध्यान की स्थिति

301. 'भोमका एक न चढ़ सकें, कहावें ईश्वर को महाकारन।'' ईश्वर व उसका महाकारण किसे कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** आदिनारायण को ईश्वर व कण–कण में स्थित ब्रह्मसत्ता को उसका महाकारण कहा जा रहा 2. आदिनारायण को ईश्वर व अव्याकृत ब्रह्म को उसका महाकारण कहा जा रहा

302. प्रारब्ध कर्म से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. जो कर्म कर तो लिया है किंतु उसका फल कब मिलेगा यह निश्चित नहीं हुआ है

2. जिन कर्मों का फल इस जन्म में मिलना निश्चित हो गया है

303. ''अद्वैत को प्रालब्ध लगावें'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. ब्रह्म को भी प्रारब्ध कर्म का उपभोग करना पड़ता है

2. ब्रह्म तीनों प्रकार के कर्मों से परे होता है

304. ''सुकमुनी बानी बोल्या वेदांत'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. शुकदेवजी ने वेदांत दर्शन की रचना की

2. शुकदेवजी ने रास पंचाध्यायी की रचना की

<u>प्रकरण 32</u>

305. ''सत सुपने में क्योंकर आवे, सत सांई है न्यारा।'' में क्या तर्क दिया जा रहा है?

विकल्प 1. ब्रह्म सभी प्राणियों के हृदय में है

2. ब्रह्म संसार के कण कण में है

3.संसार एक स्वप्न है, इसके अंदर साक्षात् स्वरूप ब्रह्म नहीं हो सकता

306. ''तुम बैकुण्ठ जमपुरी एक कर देखी'' उनके सिद्धांत के अनुसार क्या होना चाहिए?

विकल्प **1.** स्वर्ग–नर्क व वैकुण्ठ में समान सुख–दुख होना चाहिए

2. स्वर्ग–नर्क व वैकुण्ठ में समान सुख–दुःख नहीं होना चाहिए

307. ''यामें बड़भागी भए वल्लभाचारज'' वल्लभाचार्यजी को वेदांतियों से श्रेष्ठ क्यूं कहा गया है?

विकल्प **1.** बेहद मण्डल का ज्ञान होने से 2. परमधाम का ज्ञान होने से

308. ''बिना पुरान प्रकास न होई, सास्त्र बिना कौन माने।'' के अनुसार क्या सहीं है?

विकल्प **1.** सत्य का निर्णय करने के लिये धर्मग्रंथों के प्रमाण जरूरी हैं

2. प्रमाण जरूरी नहीं, श्रद्धा जरूरी है

309. ''काल आवत कबूं ब्रह्म भवन में'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** यदि इस शरीर या संसार में ब्रह्म होता तो इनका नाश–लय नहीं होता 2. ब्रह्म का धाम नाशवान हो सकता है किंतु ब्रह्म नहीं

310. ''तुम केवल काल तत्व ग्यानी'' काल तत्व किसे कहते हैं?

विकल्प 1. काल रूपी ब्रह्म का ज्ञान **2.** प्रलयाधीन तत्वों का ज्ञान

311. ''सब दरवाजे खोजे साधो'' साधु संत जनों ने किस प्रकार सत्य की खोज की?

विकल्प 1. निराकार से परे का ध्यान करके **2.** धर्मग्रंथों का अध्ययन और शरीर के अंगों (हृदय आदि चक्रों) में ध्यान करके

312. ''निराकार ब्रह्म' से वैदिक मत वालों का क्या तात्पर्य होता है?

विकल्प **1.** अशरीरी ज्योति स्वरूप सर्व व्यापक चेतन ब्रह्म

2. अचेतन सूक्ष्म परमाणुओं का सागर

313. ''यामें प्रेम लछन एक पारब्रह्म सों, एक गोपियों ए रस पाया।'' के अनुसार प्रेम लक्षणा भक्ति से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** प्रेम की स्वाभाविक स्थिति, जो आठों प्रहर बनी रहे

2. ध्यान करना

314. जागनी लीला में विहंगम मार्ग से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान, विश्वास व प्रेम का मार्ग

2. मात्र प्रेम का मार्ग

315. ध्यान नवधा भक्ति से परे है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

316. ''पार निकस के पूरन होइए, तब फेर सब दृष्टें देखाइए।।'' के अनुसार परब्रह्म की खोज कहां करनी है?

विकल्प **1.** नश्वर जगत् से परे 2. सभी प्राणियों (अपने) हृदय में

<u>प्रकरण 33</u>

317. ''रे जीव जी जिन करो यासों नेहड़ा।'' में क्या निर्देश है?

विकल्प **1.** अपने शरीर व संसार से प्रेम मत करो

2. सबसे पहले अपने शरीर से प्रेम करो

318. ''ए सूतेही पटकावहीं'' में सोने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. गहरी नींद में सो जाना

2. क्षणिक सुखों में मग्न होकर परमात्मा को भूल जाना

319. ''या रंग रसे जे भूलहीं, तिन करड़ी कसौटी होए'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. जो जीवन भर भौतिक सुखों में बितायेगा, वह आराम से रहेगा

2. जो परमात्मा की भक्ति करना भूलेगा, उसे बहुत दुःख उठाना पड़ेगा

320. ''ए अंधेरी है विकट, जाहेर रची जम जाल।'' के अनुसार यम का जाल क्या है?

विकल्प 1. ये शरीर **2.** भौतिक सुख

321. ''पर इन बांध्यो न कासों मन।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. सगे संबंधी कभी भी साथ छोड़ देते हैं

2. ये शरीर कभी भी बीमार मृत होकर जीव का साथ छोड़ देता है

322. हम भ्रमित हुए, इसमें किसकी गलती है?

विकल्प 1. सगे संबंधियों की, उन्होंने हमें भ्रमित किया **2.** हमने उनमें देह दृष्टि रखी, उनसे भौतिक सुखों की अपेक्षा रखी, हमारी गलती है

<u>प्रकरण 34</u>

323. ''सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज।'' सगे संबंधी इतना प्यार किससे करते थे?

विकल्प 1. जीव से **2.** देह से

324. ''मोसों पेहेचान ना कर सके, मेरा मेला तो अधखिन होए।'' देह के विषय में क्या पेहेचान करना है?

विकल्प **1.** देह नश्वर, क्षणभंगुर है 2. देह मौजमस्ती के लिये मिला है

325. ''तुम जान बूझ मोहे मोहीसों'' में क्या देखकर जीव, देह के प्रति मोहित होता है?

विकल्प **1.** युवावस्था, सुंदरता 2. बीमारी, बुढ़ापा

326. ''या घर बिना सो ना मिले, जो ढूंढ़ फिरो ब्रह्मांड।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. देवी देवताओं के तनों से भी परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है

2. मात्र मनुष्य तन से परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है

327. ''इन पिंड में ब्रह्म दृढ़ किया'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** इस शरीर के द्वारा ब्रह्म मिल सकता है, ऐसा दृढ़ किया

2. इस शरीर में ब्रह्म है, ऐसा निश्चित किया

328. ''ब्रह्म तो यामें न पाइए, ए क्यों कहिए ब्रह्म घर पिंड।'' से क्या

निश्चित होता है?

विकल्प **1.** इस शरीर (हृदय आदि चक्रों में) ब्रह्म नहीं है
2. ब्रह्म हाथ–पैर में नहीं है, दिल में है

329. ''इत कैयों कई बिध खोजिया, यामें ब्रह्म नहीं नेहेचल।'' के अनुसार सबने ब्रह्म की खोज कहां की, जहां उन्हें ब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुयी?

विकल्प **1.** शरीर के हृदय आदि चक्रों में 2. हाथ–पैर नस नाड़ियों में

330. ''कई ढूंढे मांहें बाहेर'' में 'माहें' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** शरीर के अंदर हृदय आदि चक्रों में 2. ब्रह्माण्ड के अंदर

331. ''कई ढूंढे मांहें बाहेर'' में 'बाहेर' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** शरीर के बाहर संसार के कण–कण में
2. क्षर ब्रह्माण्ड के बाहर

332. ''पांचो आए प्रले मिने, सब हो गयो निराकार'' इस चौपाई में निराकार से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** स्वप्न दृश्य दिखना बंद हो जाना
2. स्थूल परमाणु का सूक्ष्म परमाणु में रूपांतरित हो जाना

333. ''पारब्रह्म जित रेहेत हैं, तित आवे नाहीं काल।'' से क्या सिद्ध होता है?

विकल्प **1.** इस शरीर व संसार में परमात्मा नहीं हो सकता
2. संसार के कण कण में तो परमात्मा नहीं है किंतु इस शरीर के हृदय चक्र में परमात्मा रहता है

334. ''यामें अंतर वासा ब्रह्म का'' यहां 'अंतर' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. इस शरीर के हृदय आदि चक्रों में
2. इस शरीर व संसार से परे दिव्य परमधाम में

335. ''आंकड़ी अंतरजामी की, कबहूं न खोली किन।'' में 'अंतर्यामी' शब्द का क्या अर्थ होता है?

विकल्प **1.** सबके दिल की व संसार की बात जानने वाला परमात्मा
2. कण–कण में व सबके दिल में विराजमान परमात्मा

336. ''आद करके अब लों, खोज थके सब जन।'' योगी–तपस्वियों ने परमात्मा को कहां खोजा?

विकल्प **1.** इस शरीर के हृदय आदि चक्रों में 2. नश्वर जगत् से परे

337. ''घर ही में न्यारे रहिए, कीजे अंतर में बास।'' में क्या मार्गदर्शन है?
विकल्प 1. संसार के सुखभोगों को भोगते हुए वाणी मंथन चितवनि करें
2. संसार के सुख भोगों को भोगते रहो, परब्रह्म को दिल से याद कर लो
3. कर्तव्य कर्म करते हुए वाणी मंथन चितवनि के द्वारा अपनी सुरता हर पल परमधाम में रखें

338. ''या बिध मेला पिउ का, पीछे न्यारे नहीं रैन दिन'' में कौन सी स्थिति की बात है?
विकल्प **1.** दिन रात हर पल श्रीराजजी के स्वरूप, धाम व लीलाओं की याद स्वतः आते रहना 2. दिन रात वाणी मंथन चितवनि द्वारा श्रीराजजी को याद करने का प्रयास करना

339. ''पात्र होए पूरा प्रेम का, तिन का रस ताही में समाए।'' के अनुसार परमधाम के प्रेममयी लीलाओं का सुख कौन ले सकता है?
विकल्प 1. ईश्वरी सृष्टि व ब्रह्मसृष्टि **2.** मात्र ब्रह्मसृष्टि

340. ''महामत पिया संग विलसहीं, सुख अखंड इन पर।'' के अनुसार इंद्रावती आत्मा किसका ध्यान कर रही है?
विकल्प 1. मात्र स्वरूप का **2.** स्वरूप व लीलाओं का

<u>प्रकरण 35</u>

341. ''आप ओलखावी अलगो थयो अमथी'' का क्या अर्थ है?
विकल्प **1.** आप अपनी पहचान कराके अलग हो गये
2. आप अपनी पहचान नहीं कराते

342. 'कामिनी' किसे कहते हैं?
विकल्प 1. प्रेम का अहं रखने वाली आत्मा
2. प्रियतम के प्रेम की चाहना रखने वाली आत्मा

343. ''उदमाद अटपटा अंग थी टालीने'' में उद्‌माद से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** धणी के प्रेम का नशा 2. माया का नशा

344. ''हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही'' का क्या भावार्थ है?
विकल्प 1. हम भवसागर में डूबती हुई आत्माओं को हाथ पकड़कर बाहर निकालो **2.** हम भवसागर में डूबती हुई आत्माओं को अपनी शक्ति प्रदान करके माया से निकालो

प्रकरण 36

345. ''जुजवे पर्वतों पाड़या रे पुकार''' में जुदे–जुदे पर्वत का उदाहरण क्यूं दिया गया है?

विकल्प **1.** सूनसान अकेलापन दर्शाने के लिये
2. निराशा से परिपूर्ण दर्शाने के लिये

346. ''सुपनमां दुख सहया घणां रासमां'' में रास लीला को स्वप्न की लीला क्यूं कहा गया है?

विकल्प **1.** क्यूंकि रासलीला में हमारे संबंध की पहचान तो थी किंतु परमधाम और राजजी के मूल स्वरूप का ज्ञान नहीं था
2. क्यूंकि श्रीराजजी के मूल स्वरूप का ज्ञान तो था किंतु परमधाम का ज्ञान नहीं था

347. ''दंत तरणां लई तारूणी तलफियो'' दांत में तिनका लेने का क्या भाव है?

विकल्प 1. प्रार्थना करना **2.** हार मानकर शरणागत हो जाना

प्रकरण 37

348. ''बंध विना जाए बांधियो हार।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** संसार अस्तित्वहीन, स्वप्न है
2. संसार और माया–मोह का बंधन सत्य है

349. ''जेहेर चढ़यो हाथ पांउं झटकतियो'' कौन से जहर की बात है?

विकल्प 1. सर्प बिच्छू के **2.** मायावी विषय विकारों के

350. ''हुकम मोहथी नजर करो निरमल'' के अनुसार हृदय दृष्टि किस प्रकार निर्मल करने की बात कही गयी है?

विकल्प **1.** हुक्म से मोह माया का प्रभाव समाप्त करके
2. साधनाओं के द्वारा

351. ''छल मोटे अमने अति छेतरया'' माया ने किस प्रकार ठगा है?

विकल्प **1.** माया के झूठे दुःखरूप सुखों का आकर्षण दिखाकर
2. परमधाम के सुखों का लालच देकर

प्रकरण 38

352. ''केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार।'' में कौन सी अग्नि की बात कही जा रही है?

विकल्प **1.** विषय विकार 2. विरह की अग्नि

353. ''जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी, हठियो हरामी अंग इंद्री विकार'' विषय विकारों ने जीव पर किस प्रकार अत्याचार किया है?

विकल्प **1.** भोग के परिणाम स्वरूप रोग दुःख अशांति प्रदान करके
2. आर्थिक रूप से नुकसान कराके

354. ''कमसील काम कां कराव्या करतार।।'' के अनुसार किसने शर्मजनक कार्य करवाये हैं?

विकल्प **1.** श्रीराजजी के हुक्म से हुए हैं 2. मन शैतान ने करवाए हैं

355. ''गुण पख इंद्री वस करी अबलीस ने'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. मन रूपी इब्लिश ने हमारे गुण अंग इंद्रियों को वश में कर रखा है
2. श्रीराजजी ने हमारे गुण अंग इंद्रियों को इब्लिश/माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) के आधीन कर दिया है

356. ''सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस। जल थल सबों में ए कह्या, या को पूजें कर जगदीस।। मा.सा.3/2 के अनुसार इब्लिस से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** माया/स्वाप्निक चेतना शक्ति 2. मन, अज्ञानता, तमोगुण

प्रकरण 39

357. ''हांरे वाला कांरे आप्या दुख अमने अनघटतां, ब्राध लगाडी विध विध ना विकार।'' धाम धणी ने हमें दुःख किस प्रकार प्रदान किया?

विकल्प **1.** विषय विकारों में प्रवृत्त करके 2. विरह प्रदान करके

358. ''विमुख कीधां रस दई विरह अवला'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** ज्ञान से थोड़ा विरह प्रदान करके फिर विषय भोगों में प्रवृत्त कर दिया 2. दर्शन से दूर करके विरह में डूबा दिया

359. ''जागतां जनम रूडा खोया आवार'' ज्ञान समझने के बाद भी जीवन कैसे गंवा दिया?

विकल्प 1.ज्ञानचर्चा करके **2.** भौतिक सुखों में लिप्त होकर

360. ''त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां'' कहां त्राहि त्राहि करेंगे?

विकल्प **1.** परमधाम में कैसे मुख दिखायेंगे ये विचार कर यहां माया में त्राहि त्राहि कर रहे हैं/करेंगे

2. परमधाम में मुख दिखाते समय त्राहि त्राहि करेंगे

361. ''विरह थी विछोडी दुख दीधां विसमां'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. विरह देकर कठिन दुःख दिया

2. विरह से अलग करके भौतिक सुखों में लगाकर कठिन दुःख दिया

प्रकरण 40

362. ''स्वाद चढया स्वाम द्रोही संग्रामें'' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** प्रियतम को जानकर भी उन्हें छोड़कर माया में लिप्त हो गये

2. प्रियतम स्वामी से विद्रोह करके लड़ने को तैयार हो गये

363. ''कुकरम कसाब जुध कई करावियां, पलीत अबलीस अम मांहें बेसार'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. मन रूपी इब्लिश को हमारे अंदर बैठाकर हमसे धणी के विपरीत कर्म करवाये **2.** इब्लिश/माया को हमारे अंदर बैठाकर हमसे धणी के विपरीत कर्म करवाये

364. ''खरा ने खराब ए खलक खुआर'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** ये माया/इब्लिश पवित्र व्यक्ति से भी बुरे कर्म करवा के अपमानित करवा देती है

2. ये माया मात्र बुरे व्यक्ति से ही बुरे कार्य करवाती है

365. ''कहे महामती हूं गांऊं मोहोरे थई, पण विमुख विधो वीती सहु मांहें नर नार।' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. मायावी विकारों में लिप्त होने की बीतक मात्र कुछ सुंदरसाथ में बीती है

2. मायावी विकारों में लिप्त होने की बीतक सभी सुंदरसाथ में बीती है

प्रकरण 41

366. ''अंदर परदा उड़ाइया, तो भी न बदल्या हाल।'' में 'हाल' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मेरी रहनी नहीं बदली **2.** मेरी आत्मिक स्थिति नहीं बदली

367. ''इन इंद्रियन की मैं क्या कहूं ,एही भई आड़ी माया।'' में किसे धणी के दर्शन में आड़ी कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** इंद्रिय सुखों की चाहना 2. पंचभौतिक शरीर

368. ''कोई ऐसी अग्यां बल कुंन।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी के संकल्प/आदेश से कार्य कर रही माया की शक्ति
2. श्रीराजजी के हुक्म से बने संसार में माया की शक्ति

369. ''धनी आप दे करी आपसी'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. पांच स्वरूप अंदर आने से इंद्रावती, श्रीराजजी से भी बड़ी हो गयी **2.** पांच शक्तियां प्रदान करके श्रीराजजी ने इंद्रावतीजी को अपने समान बना लिया

<u>प्रकरण 43</u>

370. ''रसिया तमें केहेवाओ'' में रसिया से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** प्रेम व आनंद लेने व देने वाला 2. मात्र प्रेम व आनंद देने वाला

371. ''हूं माननी मान मूकी केम कहूं'' मानिनी किसे कहते हैं?

विकल्प **1.** प्रियतम से प्रेम का आग्रह चाहने वाली आत्मा को
2. अहंकारी आत्मा को

<u>प्रकरण 44</u>

372. ''हूं तो एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिऐं वहासो'' से क्या पता चलता है?

विकल्प 1. ज्ञान प्रेम में बाधक है
2. ज्ञान के द्वारा मान प्रतिष्ठा की चाहना रखना प्रेम में बाधक है

373. ''ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, जे ततखिण रंग पलटाओ।'' में 'रंग पलटाओ' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. पहचान छिपा दो **2.** प्रेम समाप्त कर दो

374. ''प्रीत पेहेलानी ओलखाणी'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** परमधाम के प्रेम को पहचान लिया
2. ब्रज रास के प्रेम को पहचान लिया

375. ''प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे।'' माया का

फेरा कब सफल होगा?

विकल्प **1.** माया में रहते हुए धाम के सुख प्राप्त करने से

2. माया के सुखों में मग्न रहकर

प्रकरण 45

376. ''म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इंद्रावती लागे चरणें।।'' में कौन सा मनोरथ पूरा करने की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. धन प्रतिष्ठा, भौतिक सुख

2. श्रीराजजी का दर्शन, परमधाम के सुख

प्रकरण 46

377. ''प्रीत प्रगट केम कीजिए, कीजिए तो छानी छिपाए,मेरे पिउ जी।'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** प्रेम की लीला दुनिया में प्रकट रूप से कैसे की जाये

2. प्रेम लीला का ज्ञान दुनिया में कैसे प्रकट किया जाए

378. ''मैं कुलवधुआ नार'' का क्या बातिनी अर्थ है?

विकल्प **1.** मैं प्रतिष्ठित कुल से हूं

2. मैं देवी देवताओं से आत्मा का संबंध मान रही हूं

379. ''तूं रोक रहयो मोहे राह में'' का बातिनी अर्थ क्या होगा?

विकल्प **1.** धन प्रतिष्ठा सगे संबंधियों के सारे मार्ग अवरूद्ध कर दिये

2. देवी देवताओं के पूजा का मार्ग बंद कर दिया

380. ''गलियन में दुरजन देखे'' में 'दुर्जन' का बातिनी अर्थ क्या है?

विकल्प **1.** बहुदेवपूजक, कर्मकाण्डी सकाम भक्त लोग

2. आपका बुरा चाहने वाले लोग

381. ''टोरयो नवसर हार'' का बातिनी अर्थ क्या है?

विकल्प 1. वाणी मंथन, सेवापूजा, जप तप छोड़कर ध्यान करने लगे

2. प्रेम की स्वाभाविक स्थिति को प्राप्त कर लिया

प्रकरण 47

382. ''मन ही में मन उरझाना'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** अक्षर के मन के स्वाप्निक रूप दुनिया वाले, अक्षर के मन में

चल रहे स्वप्न संसार में उलझ कर रह गये
2. सबके मन आदिनारायण में उलझ कर रह गये हैं

383. ''सब कोई देखे यामें मनुआ'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** संसार में अक्षर का मन ही विभिन्न रूपों में दिखायी देता है
2. सब लोग संसार में आदिनारायण को देखते हैं

384. ''ए खेल सकल है मन का'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. यह संसार आदिनारायण का खेल है
2. यह संसार अक्षर के मन अव्याकृत का खेल है

385. ''मन नेहेचल मन ही को नास।'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. सबके मन नश्वर हैं
2. अक्षर के मन का स्वाप्निक रूप ये संसार नश्वर है

386. ''मन ही बांधे मन ही खोले'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** अक्षर का मन अव्याकृत ही संकल्प से किसी को माया के बंधन में बांधता है, किसी को उससे मुक्त करता है
2. सांसारिक कामनाओं में फंसा मन जीव को बंधन में डाल देता है, इच्छा रहित मन मुक्त करता है

387. ''मन उपजावे मन ही पाले'' में मन से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. आदिनारायण **2.** अक्षर का मन अव्याकृत

388. ''मन को मन ही करे संघार'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** अंत में अक्षर के मन के संकल्प से, उसके मन का स्वाप्निक रूप संसार में लय को प्राप्त हो जाता है
2. सभी प्राणियों के मन का संहार अव्याकृत करता है

389. ''पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार''से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. 5 तत्व, 10 इंद्रिय, 3 गुण और निर्गुण निराकार की उत्पत्ति अक्षर के मन अव्याकृत से हुयी है **2.** 5 तत्व, 10 इंद्रिय, 3 गुण का सम्पूर्ण साकार जगत् व निर्गुण निराकार सब अक्षर के मन अव्याकृत के स्वरूप हैं

390. ''छोटा बड़ा मन भारी हलका'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** संसार की प्रत्येक वस्तु, चाहे छोटी हो या बड़ी, सब अक्षर का मन ही है 2. छोटे विचार वाले मन को छोटा

मन और श्रेष्ठ विचार वाले मन को बड़ा मन कहते हैं

391. ''मन ही जड़ मन ही चेतन'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. जीव की चेतना से युक्त मन चेतन और जीव की चेतना से रहित मन जड़ है **2.** संसार की प्रत्येक वस्तु, चाहे जड़ हो या चेतन, सब अक्षर के मन अव्याकृत का ही (स्वाप्निक) रूप है

392. ''एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा।'' में किस मन की बात है?

विकल्प **1.** अक्षर का मन अव्याकृत, जिसके विषय में कोई भी जान नहीं पाया 2. दुनिया वालों के मैले व निर्मल मन, जिन्हें कोई देख नहीं पाया

393. ''सब मन में ना कछू मन में'' खाली मन क्यूं कहा गया है?

विकल्प 1. माया की चाहना से रहित जीवों के मन को

2. स्वप्न संसार के आकाश फूल के समान अस्तित्वहीन होने के कारण

394. ''खाली मन मनही में ब्रह्म।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** स्वप्न संसार के कण कण में ब्रह्मसत्ता व्याप्त है

2. खाली मन में परब्रह्म विराजमान होते हैं

395. ''महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम।'' में किस मन को देखने की बात कही गयी है?

विकल्प 1. सभी मनुष्यों के मन को 2. आदिनारायण को

3. अक्षर के मन को

<u>प्रकरण 48</u>

396. ''अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए।'' में अमरपुर किसे कहा गया है?

विकल्प 1. स्वर्ग **2.** वैकुण्ठ

397. ''जीव रे चतुरमुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए।'' में किसे 14 लोक की सृष्टि का रचयिता कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** ब्रह्माजी 2. आदिनारायण

398. ''महामत रूदे रमे तांसों, उपजत जाकी इछाए।।६।।'' के अनुसार ये खेल किसके हुक्म से उत्पन्न हुआ है?

विकल्प 1. अक्षरब्रह्म **2.** अक्षरातीत श्रीराजजी

प्रकरण 49

399. ''एहनो नेहडो सुणीने हूं तो घणुऐं नाठी'' प्रेम की रीति क्या है?
विकल्प 1. जिन पर मेहर करते हैं, उन्हें जरा भी कष्ट नहीं होने देते
2. जिन पर मेहर करते हैं, उन्हें दुःख भी देते हैं

400. ''अमे माणस मांहें थी टलया'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. मैं अच्छे लोगों से अलग हो गयी
2. मैं मायावी चाहनाओं से युक्त मनुष्यों से अलग हो गयी

401. ''ओल्या वारसे वढसे खीजसे तमने'' के अनुसार दुनिया वाले क्यूं विरोध करेंगे?
विकल्प 1. हम गलत मार्ग पर चल रहे हैं इसलिये
2. उनके अनुसार बहुदेवपूजा और भौतिक सुखों के मार्ग पर ना चलने से

402. ''बाई रे गिनान सब्द गम नहीं नवधाने'' के अनुसार क्या सत्य है?
विकल्प 1. तारतम वाणी की भी पहुंच परमधाम तक नहीं है
2. धणीजी ल्याये धाम से वचन, जिनसे न्यारे ना होय चरन

403. ''हद छोडी वेहदमां भलया'' में बेहद से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. बेहद मण्डल **2.** परमधाम

प्रकरण 50

404. ''दुरजन देखतां अमने बोलावे'' में दुर्जन शब्द का क्या अर्थ होगा?
विकल्प 1. बुरे कार्य करने वाले लोग **2.** लोक वेद मर्यादा से युक्त लोग

405. ''नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज करे अमारी।'' से क्या आशय है?
विकल्प **1.** प्रतिदिन वाणी व चितवनि के माध्यम से हृदय धाम में आकर विराजमान हो जाते हैं 2. प्रतिदिन घर के सामने आ जाते हैं

406. ''आड़ज बांधे आवी'' बीच में रास्ता रोककर खड़े हो जाने से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** माया/भौतिक सुखों के सारे द्वार बंद कर देते हैं
2. मेरी स्वयं की इच्छा उनसे अलग होने की नहीं होती

407. ''हूं जांणूं रखे सासुडी सांभले'' यहां चिंता किस बात की है?
विकल्प **1.** सगे संबंधी समाज वाले हमारे पतिव्रता साधन के विषय में सुन

लेंगे तो विरोध करेंगे 2. मैंने परमात्मा को पा लिया है, और ब्रह्मस्वरूप हो गया हूं, जानकर विरोध करेंगे

प्रकरण 51

408. ''आज वधाई वृज घर घर, प्रगटया श्री नंद कुमार'' के अनुसार सभी ब्रजवासी किस बात की खुशी मना रहे थे?

विकल्प 1. श्रीराजजी का आवेश प्रकट होने की
2. नंदबाबा के पुत्र के जन्म के उपलक्ष में

409. ''ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** ब्रज में हुयी वह लीला अखण्ड हो गयी, उसका विस्तार जागनी लीला में होना है 2. वह लीला आज भी अखण्ड है, जिसमें श्रीराजजी, श्रीश्यामाजी व सखियां आज भी विराजमान हैं

410. ''ए प्रगटया पूरण पार ब्रह्म, महामती तणों आधार।''का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. ब्रज में प्रकट हुए श्रीकृष्णजी महामति जी के प्राणों के आधार हैं
2. महामति जी के हृदय में आत्मा के आधार परब्रह्म आवेश स्वरूप से प्रकट हुए हैं

प्रकरण 52

411. ''सतगुर मेरा स्याम जी'' के अनुसार हमारे सद्गुरू कौन हैं?

विकल्प **1.** मूल स्वरूप श्रीराजजी 2. श्रीकृष्णजी
3. सबके अपने अपने दीक्षा देने वाले गुरू

412. 'श्याम' शब्द ब्रज में श्रीकृष्णजी को क्यूं कहा गया?

विकल्प **1.** उनके काले रंग के कारण
2. वे परमधाम से आये हैं इस कारण

413. परमधाम में श्रीराजजी का वर्ण कैसा है?

विकल्प **1.** श्याम अर्थात् तपाये हुए कंचन के समान
2. श्याम अर्थात् काला

414. ''सो बुधजीऐं सास्त्र ले, सबहीं को काढयो सार।'' में बुद्ध जी किसे कहा गया है?

विकल्प 1. अश्वाफील को **2.** जागृत बुद्धि से युक्त श्री देवचंद्रजी को

415. ''जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन'' के अनुसार समस्त धर्मग्रंथों की रचना किसके लिये हुयी है?

विकल्प **1.** ब्रह्मात्माओं के लिये 2. जीव सृष्टि के लिये

416. ''ए माया जाकी सोई जाने, क्यों कर समझे और'' के अनुसार ये माया किसकी शक्ति है?

विकल्प **1.** ब्रह्म के हृदय की एक शक्ति है 2. स्वतंत्र शक्ति है

417. किल्ली ल्याए वतन थें, सब खोल दिए दरबार'' में किल्ली से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** तारतम ब्रह्मज्ञान रूपी चाबी 2. तारतम मंत्र

418. ''सब्द सुनाए सुक व्यास के, मोहे खिन में कियो उजास।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. श्रीदेवचंद्रजी भागवत कथा सुनाते थे

2. भागवत में वर्णित अखण्ड ब्रज रास के रहस्य समझाते थे

419. ''तो क्यों समझें जीव मोह क़े, जाको निद्रा मूल।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** समस्त जीवों की उत्पत्ति माया/स्वाप्निक चेतना से हुयी है

2. समस्त जीवों के तन मोहतत्व/अचेतन परमाणु से बने हैं

420. ''आवत दौड़े अंकूरी, ए ताए मिलसी निसान।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** समस्त धर्मग्रंथों के रहस्य ब्रह्मात्माएं ही समझ सकती हैं

2. धर्मग्रंथ ब्रह्मात्माओं के लिये नहीं आये हैं

421. ''अखंड सुख जाहेर कियो, मूल बुध प्रकासी'' में मूल बुध से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. अक्षर की मूल बुद्धि **2.** श्रीराजजी की निजबुद्धि

422. ''<u>पार बुध पाए पीछे,</u> याको होसी बड़ो मान।'' में 'पार बुध' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी की निजबुद्धि 2. अक्षर की बुद्धि

423. ''मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर। तारतमें सब सुध परी'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. तारतम वाणी अक्षर की बुद्धि से अवतरित हुयी है
2. तारतम वाणी से अक्षर की बुद्धि को ज्ञान हुआ है

424. ''मूल बुध असराफील, ए हमारी मिने हम।। सनंध 41/69'' में अश्राफील से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. अक्षर की बुद्धि **2.** श्रीराजजी की निजबुद्धि

425. ''बृज रास ए सोई लीला, सोई पिया सोई दिन।'' में 'सोई पिया' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. वही कृष्ण दुबारा आये हैं
2. वही श्रीराजजी का आवेश दुबारा आया है

426. ''ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।'' के अनुसार किसके अवतारों के मध्य ब्रह्मलीला छिप गयी थी?

विकल्प **1.** विष्णु के 22 वें अवतार कृष्ण अवतार के रूप में
2. विष्णु के दो अवतारों के मध्य
3. कृष्ण के दो अवतार के मध्य

427. ''सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।।'' महामति जी ने क्या पहचान प्रकट करी?

विकल्प 1. कृष्ण परमात्मा नहीं है, मैं हूं **2.** क्षर अक्षर से परे अक्षरातीत परब्रह्म का स्वरूप कैसा है एवं अभी उनका आवेश मेरे अंदर विराजमान है

428. ''लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।।२६।।'' कौन से दो नाम मिटाकर कौन सा नया ठाट किया?

विकल्प 1. हिन्दू मुसलमान समाप्त करके कृष्ण नाम से जाहिर हुए
2. कृष्ण और देवचंद्र नाम मिटाकर श्रीजी साहेब नाम से प्रसिद्ध हुए

429. ''सब पर हुआ कलश'' के अनुसार कया सत्य है?

विकल्प **1.** जागनी लीला ब्रज रास नौतनपुरी–तीनों लीलाओं से श्रेष्ठ है
2. ब्रज व रास लीला सबसे श्रेष्ठ है

<u>प्रकरण 53</u>

430. ''वादे सो ब्रोध बधारिया, करी अगनी उदेकार।'' द्वेष की अग्नि किस प्रकार प्रज्वलित हो जाती है?

विकल्प 1. निष्पक्ष समीक्षा करने से

2. अहंकार व स्वार्थ पूर्वक अपनी प्रशंसा व दूसरों की निंदा करने से

431. ''सो सत वानी सबों की करी, अब आए करो दीदार।।'' के अनुसार किसका दर्शन करना है?

विकल्प **1.** तारतम ज्ञान की सहायता से मूल स्वरूप का
2. महामति जी के तन का

432. ''अश्व उजले भए अस्वार।'' सफेद घोड़े से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. तारतम ज्ञान **2.** जागृत बुद्धि

<u>प्रकरण 54</u>

433. ''वेगे ने मिलो रे सैयों समें रास को''जागनी रास से क्या आशय है?

विकल्प 1. रास गरबा खेलना
2. जागृत होकर वाणी और चितवनि के द्वारा धणी के सुख लेना

434. ''याको क्यों कहिए अवतार'' अवतार किसे कहा जाता है?

विकल्प 1. श्रीप्राणनाथजी को **2.** जागृत बुद्धि को

435. पांच शक्ति में अक्षर की आत्मा और अक्षर की बुद्धि को अलग–अलग गिना गया है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

436. ''हुकम महंमद'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मुहम्मद साहब के अंदर जो अक्षर की आत्मा आयी थी
2. मुहम्म्द साहब के अंदर जो हुक्म की शक्ति आयी थी

437. ''तारतम अंग थयों विस्तार'' ''नूर हुकम बुध मूल वतन'' दोनों चौपाईयों के अनुसार 'नूर' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. अक्षर की आत्मा **2.** तारतम ज्ञान

438. ''इछा दया ने आवेस'' ''श्री धनी जी को जोश आतम दुल्हिन'' दोनों चौपाईयों के अनुसार जोश व आवेश अलग अलग सिद्ध होते हैं?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

439. ''इछा दया ने आवेस''''नूर हुकम बुध मूल वतन'' दोनों चौपाई के अनुसार 'हुक्म' का क्या अर्थ निश्चित होता है?

विकल्प 1. आवेश **2.** इच्छा

440. ''जोश कहिये ताकूं जान, आवेश मूल स्वरूप को मान।।122''
''जबराईल मेहेमद के माहीं, याथें आवेश मेहेमद पर आहीं।।126''
रोशननामा के उपरोक्त कथनों से क्या सिद्ध होता है?

विकल्प 1. जिब्रील अक्षर का आवेश है **2.** जिब्रील धणी का आवेश है

441. तारतम वाणी जड़ रूप में विद्यमान है, इसलिये तारतम ज्ञान को शक्ति नहीं माना जा सकता?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

442. ''एक इलम ले दौड़हीं, और ले दौड़े ग्यान।''से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** इल्म व ज्ञान पर्यायवाची शब्द हैं
2. इल्म व ज्ञान अलग अलग हैं

443. ''जोगमाया में खेल जो खेले, संग जोस धनी के भेले।'' ऐसा क्यूं कह दिया है?

विकल्प 1. क्योंकि जहां आवेश होता है वहां जोश भी होता है 2. क्यूंकि अंदर (इश्क का) आवेश होता है और बाहर (सत्ता का) जोश के द्वारा लीला प्रकट होती है **3.** क्यूंकि जोश और आवेश एक ही शक्ति है

444. ''जोत रसूल टापू मिने'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** रसूल साहब के अंदर स्थित श्रीराजजी के आवेश (जोश) ने ही ब्रज रास में लीला किया था 2. रसूल साहब के अंदर स्थित अक्षर की आत्मा ने ही ब्रज रास में लीला किया था

445. ''दिया जबराईलें आहार।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. जबराईल ने नूह नबी के बेटों को नया ब्रह्माण्ड बनाने का आदेश दिया **2.** जबराइल (धनी के जोश) ने सखियों को आत्मिक सुख प्रदान किया

446. ''जब जोश लियो खैंचकर'' चौपाई और तारतम की प्रणालिका के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** मूल स्वरूप ने कृष्ण के तन से जोश (आवेश) खींचकर राधा जी के तन में रख दिया 2. मूल स्वरूप ने कृष्ण के तन से जोश खींचा और आवेश राधा जी के अंदर रख दिया 3. मूल स्वरूप ने कृष्ण के तन से जोश और आवेश खींचा और उन दोनों शक्तियों को राधा जी के अंदर रख दिया

447. जबराईल यमुनाजी तक गया तो आगे लेने कौन आया?
विकल्प **1.** इश्क 2. आवेश

448. ''जोस मेहेर के अंग'' ''सो सब इस्क हक का'' के अनुसार क्या सत्य है?
विकल्प **1.** सत्ता का जोश (आवेश) प्रेम का अंश लिये हुए है
2. जोश सत्ता का स्वरूप है और आवेश प्रेम का

449. ''ऐसा जब दिल में आईयां, दिया जोस हकें बल।'' के अनुसार क्या सिद्ध होता है?
विकल्प 1. जहां आवेश होता है वहां जोश भी होता है
2. जोश व आवेश एक ही है, प्रदान करने पर ही वह प्राप्त होता है

450. ''एक सुरत दो बीच में, ए जो फिरे दरम्यान।'' जोश की शक्ति किन दो के बीच आती जाती है?
विकल्प 1. मुहम्मद और अक्षर ब्रह्म के बीच में
2. मुहम्मद और श्रीराजजी के बीच में

451. कौन सी शक्ति है, जिसे फरिश्ता भी कहा गया है और रूह भी?
विकल्प **1.** धणी का जोश 2. जागृत बुद्धि

452. ''आतम अक्षर जोस धनी धाम'' के अनुसार कृष्ण के तन में कौन सी शक्तियां थीं?
विकल्प **1.** आत्मा अक्षर और धणी का आवेश
2. आतम अक्षर और अक्षर का आवेश

453. ''इहां लग साथ जबराईल, पोहोंच्या इन मकान।'' चौपाई के अनुसार मुहम्मद की रूह के साथ जिब्रील कहां तक गया था?
विकल्प 1. सत्स्वरूप ब्रह्म तक **2.** अक्षर धाम/यमूनाजी तक

454. ''नूर मकान जिमी असल, असल बन चौफेर'' में नूर मकान से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. सत् स्वरूप ब्रह्म **2.** अक्षर धाम

455. ''नूरमकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित।'' में जबरूत किसे कहा गया है?
विकल्प 1. सत् स्वरूप ब्रह्म **2.** अक्षर धाम

456. ''सदरतुलमुंतहा थें, आवत नूरजलाल।'' में सिद्रतुलमुंतहा का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. सत् स्वरूप ब्रह्म **2.** अक्षर धाम

457. ''कह्या नूर पार अरस अजीम'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. सत्स्वरूप के पार अक्षरधाम **2.** अक्षरधाम के आगे रंगमहल

458. ''पांच फरिस्ते नूर से'' त्रिदेवों को किस नूर से कहा गया है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसत्ता रूपी नूर से 2. अक्षरधाम के नूर से
3. बेहद मण्डल के नूर से

459. ''तबक चौदे फरिस्ते, तिल जेता ना खाली मकान।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** संसार के कण–कण में विष्णु भगवान की चेतना/ब्रह्मसत्ता व्याप्त है 2. संसार के कण–कण में कोई शक्ति विराजमान नहीं है

460. ''तो पीछा फेरे हुकम, जो कोई दूसरा होए।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** संसार के कण–कण में एवं विष्णु भगवान सहित समस्त जीवों के अंदर परब्रह्म की ही सत्ता विराजमान है
2. अजाजील श्रीराजजी का ही स्वरूप है

461. ''नूर जोस अंग का जान'' ''नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर।'' ''नूर जोस चढ़ियो जोर'' में नूर जोश से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी के दिल का जोश 2. अक्षर के दिल का जोश

462. ''खुद खसम के अंग'' ''हक जोस जबराईल, जो आया नूर के पार'' क्यूं कहा है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी के जोश की शक्ति श्रीराजजी के अंतःकरण से आती है इसलिये
2. श्रीराजजी के जोश की शक्ति सत्स्वरूप से आती है इसलिये

463. ''यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल। सनंध 37/3'' जिब्रील/धणी का जोश दुनिया में कब कब आता है?

विकल्प 1. विहंगम मार्ग वालों को एकादश द्वार में ब्रह्म का दर्शन कराने के लिये **2.** मात्र ब्रह्मलीला के लिये

464. ''इनों की असल एक'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. विष्णु भगवान अक्षरधाम या सत्स्वरूप के रहने वाले हैं
2. विष्णु भगवान स्वाप्निक चेतना शक्ति के अंश हैं

465. जिब्रील परमधाम नहीं जा सका, ये कब की बात है?
विकल्प **1.** मेअराज के समय की 2. इस आखिरत की

466. अश्राफील परमधाम में भ्रमण किया, ये कब की बात है?
विकल्प 1. मेअराज के समय की **2.** इस आखिरत की

467. ''जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा आए। सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाये।।'' के अनुसार क्या सत्य है?
विकल्प 1. जिब्रील परमधाम नहीं जा सकता
2. खेल समाप्त होने पर अक्षर की आत्मा तो जुदा होगी, किंतु धणी के जोश की शक्ति हममें मिल जाएगी

468. '12,000 ब्रह्मात्माओं और मुहम्मद की तीन सूरतों को जिब्रील की पीठ पर बैठाकर अक्षर से पार ले जाने से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** जोश की शक्ति के द्वारा परमधाम की चितवनि में जाना
2. जिब्रील फरिश्ते के साथ सत्स्वरूप तक जाना

469. ''आई नूरबुध वैराट माहीं, विश्व करी सो निरविकार।'' के अनुसार जगत् में क्या/कौन आया?
विकल्प 1. अश्राफील **2.** दिव्य जागृत बुद्धि

470. ''छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगे गाऐं सो मंगल चार।।'' के किस समय की स्थिति है?
विकल्प 1. सातवें दिन की **2.** छठे दिन/जगत् के अंतिम समय की

471. ''एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील।'' में दज्जाल किसे कहा गया है?
विकल्प **1.** विष्णु के जीव/स्वाप्निक चेतना शक्ति को, जो सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान है 2. मन को

472. ''काटी करम फांसी दुनियां की'' श्रीप्राणनाथजी ने सबके कर्मबंधन किस प्रकार नष्ट किये?
विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान प्रदान करके 2. आशीर्वाद मात्र से

473. त्रिलोक से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. पृथ्वी, स्वर्ग, वैकुण्ठ **2.** पृथ्वी, अंतरिक्ष एवं द्यौः लोक

474. ''मिल के साथ आवे दौड़ता, मिने सकुंडल सकुमार।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** सकुण्डल व सकुमार जब जागृत होंगे, तो उस समय सभी ब्रह्मात्माएं भी जागृत हो जायेंगी

2. सभी सुंदरसाथ के साथ सकुण्डल व सकुमार भी जागृत होकर आयेंगे

475. ''निजधाम से आई सखियां, जुथ चालीस सहस्त्र बार।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** वर्तमान में 12,000 सखियां रंगमहल की प्रथम भूमिका के पांचवी गोल हवेली में विराजमान होकर खेल देख रही हैं

2. वर्तमान में अनंत सखियां पूरे परमधाम के प्रत्येक महल, हवेली, मंदिरों में विराजमान होकर खेल देख रही हैं।

476. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प **1.** श्रीराजश्यामाजी एवं सखियों का निवास स्थान रंगमहल है, बाकि 24 पक्षों में वे घूमने मात्र जाती हैं

2. श्रीराजश्यामाजी एवं सखियां पूरे परमधाम में निवास करती हैं

477. ''जो रूहें दरगाह मिने, कही महम्मद बारे हजार।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. परमधाम में अनंत सखियां हैं, इस संसार में 12,000 की सुरता को उतारा गया है **2.** रंगमहल (दरगाह) में 12,000 सखियां हैं

478. ''बृजलीला लीला रास मांहें, हम खेले जान के जार।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. रासलीला में हमें धणी की पूर्ण पहचान थी

2. रास लीला में धणी के मूल स्वरूप की पहचान नहीं थी, बांके बिहारी को ही अपना धणी माना था

479. सबको जागृत बुद्धि मिलने की लीला कौन से दिन की है?

विकल्प **1.** छठे दिन के अंतिम समय की 2. सातवें दिन की

480. ''सत्तर बरस लों आग जलाए'' ''सत्तर बरस पुल सरात के कहे'' ''पुलसरात दुख कहिए क्यों कर, काफर जलें जुलजुले आखिर''

दुनिया वाले 70 वर्ष तक कौन सी आग में जलेंगे?

विकल्प **1.** भूकंप आदि मायावी दुखों विपदाओं के 2. मात्र पश्चाताप होगा

481. ''पीछे असराफीलें किए निरमल'' ''बुधजी देएंगे खोल के द्वार'' का क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. अश्राफील सबको जागृत बुद्धि प्रदान करेगा
2. श्रीराजजी के हुक्म से सबको जागृत बुद्धि प्राप्त हो जायेगी

482. ''धोए हाथ और हथियार'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान का पूर्ण रूप से प्रचार हो गया (युद्ध समाप्त, विजय प्राप्त हो गया) 2. अन्य ग्रंथों की महत्ता समाप्त हो गयी

483. ''महामत जागसी साथ जी भेले, जहां बैठे मिने दरबार।'' में दरबार से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. पूरा परमधाम **2.** मूल मिलावा–पांचवी गोल हवेली

<u>प्रकरण 55</u>

484. ''आए आगम बानी इत मिली'' में आगम वाणी से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. तारतम वाणी
2. धर्मग्रंथों में लिखी कलियुग–आखिरत से संबंधित भविष्यवाणी

485. बुद्ध निष्कलंक स्वरूप के तलवार से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** तारतम ज्ञान 2. जागृत बुद्धि

486. ''पेहेले मंडल में मांगी मुझे'' ब्रज रास में विवाह नहीं होने का क्या बातिनी अर्थ है?

विकल्प 1. राधा से सगाई हुयी थी, परंतु शादी नहीं हुयी थी
2. ब्रज रास में निजघर व मूल स्वरूप की पहचान नहीं थी

487. ''सो आए ब्याही इत'' यहां आकर विवाह करने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** इंद्रावती के हृदय धाम में आकर विराजमान हो जाना
2. सबसे प्रत्यक्ष रूप से विवाह करना

488. ''बिन थलिऐ विवाह हुआ'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. झूठा शादी हुआ **2.** इस स्वप्न संसार में विवाह हुआ

489. ''रच्यो सो नेहेचल ठाट।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. चारों स्वरूपों रूपी चारों स्तम्भों में निस्बत की पहचान हुयी है
2. चारों स्तम्भों रूपी चारों लीलाओं में धणी का ऐश्वर्य प्रकट हुआ है

490. ''ब्याही बारे हजार को, और हजार चौबीस।'' ईश्वरी सृष्टि से विवाह करने का क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अक्षर ब्रह्म को प्रेम लीला का सुख प्रदान करना
2. ईश्वरी सृष्टि को अपनी अंगना बना लेना

491. ''तीन फेरे दुलहे पीछे फिरी, चौथे फेरे आगल भई'' चौथे फेरे में आगे होने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. श्रीराजजी ने इंद्रावती को अपने से भी बड़ी शोभा दे दी (उनके अंदर पांच स्वरूप विराजमान हो गये)
2. श्रीराजजी उनके अंदर विराजमान हो गये, तथा अपने समान शोभा प्रदान किया (आप सरीखडी कीधी)

492. ''धनी मेरा प्रभु विश्व का'' के अनुसार प्रभु (सत्ता) के भाव से कौन देखेगा?

विकल्प 1. ब्रह्मसृष्टि **2.** ईश्वरी व जीव सृष्टि

493. ''असुर केते कहूं पीर कई, केते कहूं पैगंमर।'' में पैगम्बर से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मुहम्मद साहब, ईसा मसीह, मूसा पैगम्बर
2. अन्य पैगम्बर, संदेशवाहक

494. ''बाघ बकरी एक संग चरें, कोई न करे किसी सों बेर।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. हिन्दू मुसलमान अमीर गरीब साथ–साथ खाना खायेंगे
2. संसार में इस हद तक शांति छा जायेगी कि बाघ और बकरी भी एक साथ घास चरेंगे

495. ''सनमुख सब एक रस भए, भाग्यो सो विश्व को ब्रोध।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. सभी के अंदर एक ही परमात्मा है, ऐसा मानने लग गये
2. सभी प्राणनाथजी की ज्ञानचर्चा सुनकर एक समान विचारधारा वाले (ज्ञान व प्रेम में एक समान) हो गये

496. ''बुधजीऐं उड़ायो उनमान।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. बुद्ध निष्कलंक स्वरूप ने सभी ग्रंथों का ज्ञान समाप्त कर दिया
2. बुद्ध निष्कलंक स्वरूप ने अनुमानजनित ज्ञान समाप्त कर दिया

497. ''मुक्त दई सब जीवों को, पावें पसु पंखी नर नार।'' से क्या सिद्ध होता है?

विकल्प **1.** पशु पक्षी आदि समस्त जीव भी मोक्ष प्राप्त करेंगे
2. पशु पक्षी का अर्थ अमीर व गरीब हिन्दू मुसलमान है

498. ''देख खेल हंस चलसी'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए और श्रीराजजी को याद करते हुए आनंद से चलेगे **2.** संयमित जीवन जीते हुए धाम धणी के प्रेम व आनंद में मग्न होकर चलेंगे

<u>प्रकरण 56</u>

499. ''भई नई रे नवों खंडों आरती'' यह आरती पूर्ण रूप से कब घटित होगी?

विकल्प 1. बहिश्तों में अखण्ड होने के बाद सातवें दिन में
2. छठे दिन/जगत् के अंतिम समय में सबको जागृत बुद्धि मिलने पर

500. ''भई नई रे नवों खंडों आरती'' यह आरती पूर्ण रूप से कब घटित होगी?

विकल्प **1.** अक्षर ब्रह्म के जागृत होने से पहले
2. अक्षर ब्रह्म के जागृत होने के बाद

501. ''सखी आप पिया पर वारती'' श्रीजी की पहचान करके सर्वप्रथम कौन समर्पित होगा?

विकल्प 1. योगी तपस्वी लोग **2.** ब्रह्मसृष्टि

502. ''दुष्टाई सबों की संघारती'' का क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. श्रीप्राणनाथजी समस्त दुष्टों का नाश करेंगे **2.** श्रीप्राणनाथजी सबके अंदर स्थित अवगुणों और अज्ञानता का नाश करेंगे

503. ''मिने सूरत पिया की विराजती।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** श्रीजी समस्त ब्रह्ममुनियों के मध्य विराजमान हैं
2. श्रीजी समस्त जीवों के बीच में विराजमान हैं

504.''ब्रह्मांड में नौबत गाजती।''सारे संसार में किसकी गर्जना हो रही है?
विकल्प 1. नगाड़ों की **2.** ब्रह्मवाणी की

505. निरंजन किसे कहते हैं?
विकल्प **1.** अवयव से रहित निराकार
2. अंगों से रहित परब्रह्म का मारफत स्वरूप

506. ''चेतन व्यापी भए निहाल'' से क्या आशय है?
विकल्प 1. शरीर में व्याप्त जीव **2.** संसार के कण–कण में व्याप्त चेतना

507. ''सैन्या सहित आए त्रिपुरार'' 'त्रिपुरारी' किसे कहा जाता है?
विकल्प **1.** शंकर भगवान 2. विष्णु भगवान

508. ''यों आए सुक व्यास बड़ी मत'' में बड़ी मत किसे कहा गया है?
विकल्प **1.** शुकदेव जी और व्यास जी 2. महामति जी

509. ''चार आश्रम और चार वरन'' में चार आश्रम से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. चारों धाम **2.** ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास आश्रम

510. अर्हन्ती किसे कहा जाता है?
विकल्प 1. सन्यासियों को **2.** जिन्न की पूजा करने वालों को

511. ''बहत्तर फिरके आए अथर वेदी।'' अथर्ववेद वाणी में बातिनि रूप से किसे कहा गया है?
विकल्प 1. चौथे वेद को **2.** कुर्आन को

512. ''आए सकल कैदी और बे कैदी'' बेकैदी किसे कहा जाता है?
विकल्प **1.** अज्ञानजनित रीति–रिवाजों को ना मानने वालों को
2. शरीयत/कर्मकाण्ड को मानने वालों को

513. ''लीला खेलें अखंड रास विलास'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** वाणी, सेवा, चितवनि द्वारा धाम के सुख लेना
2. गरबा डांडिया खेलना

514. ''पिया हुकमें गावें महामत'' कौन किसके हुक्म से वाणी का उच्चारण कर रहा है?
विकल्प **1.** मूल स्वरूप श्रीराजजी के हुक्म से इंद्रावती
2. मूल स्वरूप श्रीराजजी के हुक्म से प्राणनाथजी

प्रकरण 57

515. ''ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार'' आज हमें किसका दीदार करना है?

विकल्प 1. मिहिरराजजी/महामति जी के तन का
2. तारतम ज्ञान की सहायता से मूल स्वरूप अक्षरातीत का

516. ''अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार।'' में श्रृंगार से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ईमान समर्पण प्रेम नम्रता आदि का श्रृंगार सज कर आये
2. अच्छे अच्छे कपड़े और श्रृंगार सज कर आये

517. ''जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब।'' यहां किस लीला की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. दुनिया में ब्रज रास जागनी लीला होने की
2. परमधाम की लीलाओं के ज्ञान की

518. ''जिन भान्यो उलटो फेर'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अज्ञानता से युक्त असत्य मार्ग में भटकना
2. जन्म मृत्यु का चक्र

519. ''प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि, और ब्रह्म वतन।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. ब्रह्म, ब्रह्मसृष्टि व परमधाम दुनिया में प्रकट हो गये
2. ब्रह्म, ब्रह्मसृष्टि व परमधाम का ज्ञान दुनिया में प्रकट हो गया

520. ''महामत इन प्रकास थें, अखंड किए सब जन।'' दुनिया किस प्रकार अखण्ड हुयी?

विकल्प **1.** ब्रह्म और परमधाम के ज्ञान के प्रकाश से 2. मात्र आशीर्वाद से

प्रकरण 58

521. ''छूटत है रे खरग छत्रियों से'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. क्षत्रियों ने युद्ध का कार्य बंद कर दिया है
2. मुगलों के विरूद्ध वे युद्ध के लिये हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं

522. ''तामें उत्तम हिंदू धरम'' हिन्दू धर्म को अन्य धर्मों से उत्तम क्यूं कहा गया है?

विकल्प **1.** सात्विक सदाचारी संस्कार के कारण

2. निराकारवादी वैदिक मत के कारण

523. ''पन ने धारी रे पन इत ले चढ़या'' के अनुसार औरंगजेब ने कैसी प्रतिज्ञा की थी?

विकल्प 1. उसने इमाम महदी से मिलने का प्रण लिया

2. उसने हिन्दू धर्म का नाश करने का प्रण लिया

524. औरंगजेब मंदिरों एवं मुर्तियों को क्यूं तोड़ता था?

विकल्प 1. इमाम महदी की खोज में

2. बुतपरस्ती के विरोध में

525. ''फिरत आप रे ढिंढोरा पुकारता, है कोई देव रे समरथ।।'' के अनुसार औरंगजेब किस बात का ढिंढोरा पिटवाता था?

विकल्प **1.** किसी हिन्दू राजा के अंदर सामर्थ्य–साहस हो तो आकर मुझसे युद्ध करे 2. हिन्दूओं में इमाम महदी जाहिर हो गये हों तो वे मेरे पास आयें

526. ''असुर सत रे धरम जुध मांगहीं'' में धर्मयुद्ध मांगने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. इमाम महदी से मिलाओ या युद्ध करो

2. मुसलमान बन जाओ या युद्ध करो

527. ''होत है एकाकार'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. सब एकरूप होते जा रहे हैं

2. अत्याचार के कारण हिन्दू मुसलमान बनते जा रहे हैं

528. ''पीछे रे बल कब करोगे'' में साधु संतों से किस प्रकार का बल करने कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** धर्मरक्षा हेतु हिन्दूओं को जागृत कर एकजुट करने की

2. सबमें एक वैदिक मत का प्रचार करने का

529. ''सिध ने साधो रे संतों मंहतो'' ''कहां गई करामत'' में सिद्ध योगी, चमत्कारी पुरूष कहलाने वालों से क्या कहा जा रहा है?

विकल्प 1. युद्ध लड़ने आप भी जाओ **2.** आपके अंदर इतनी ही शक्ति है, तो अपनी शक्ति से विजय दिला दो

530. ''हरिद्धार ढहाए रे उठाए तपसी तीर्थ'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. औरंगजेब हिन्दूओं पर कोई अत्याचार नहीं करता था

2. औरंगजेब हिन्दूओं पर बहुत अत्याचार करता था

531. ''सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुर की'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. हिन्दू मुगलों की सेवा करते थे

2. हिन्दू मुगल सेना में शामिल होकर हिन्दूओं पर अत्याचार करते थे

532. 'जिज्या' कर लगाने के पीछे औरंगजेब का क्या उद्देश्य था?

विकल्प 1. राज्य व्यवस्था के लिये धन एकत्र करना

2. गरीब हिन्दूओं को मुसलमान बनाना

533. ''अर्थ अंदर का कोई न पावे'' धर्मग्रंथों के गूढ़ार्थ को किस प्रकार समझा जा सकता है?

विकल्प 1. तप साधना के द्वारा **2.** जागृत बुद्धि के द्वारा

534. ''सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के'' छत्रशालजी ने कौन सी सेवा सिर पर ली?

विकल्प 1. ज्ञान चर्चा की

2. सत्य निजानन्द मार्ग के संरक्षण व प्रचार व्यवस्था की

535. ''बेगेने पधारो रे बुध जी या समे'' यहां बुद्ध जी से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. बुद्ध निष्कलंक स्वरूप जगत् में पधारिये

2. जागृत बुद्धि सबके हृदय में प्रवेश कीजिये

<u>प्रकरण 59</u>

536. ''काढ़यो अहंकार मूल मोह मन को'' सभी विकारों का मूल क्या है?

विकल्प 1. धन सम्पत्ति

2. इस झूठे शरीर व संसार के प्रति मैं व मेरा की भावना

537. ''तब पेहेचान भई सकल, हुए सब सर्वग्यन।'' ये कब का वर्णन है और किस प्रकार सम्भव होगा?

विकल्प 1. वर्तमान में श्रीजी की चर्चा सुनकर

2. जगत् के अंत में सबको जागृत बुद्धि प्राप्त होने पर

538. ''देत दीदार सबन को सांई, जिनहूं जैसा चाह्या।।'' ये कहां की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. परमधाम मूल स्वरूप की **2.** श्रीजी की

539. ''देत दीदार सबन को सांई, जिनहूं जैसा चाह्या।।'' श्रीजी ईसाईयों के लिये क्या हैं?

विकल्प 1. दूसरे ईसा Second christ

2.ईसा मसीह का पुनः आगमन Second coming of christ

540. ''जगंनाथ बुध जी जागनी'' में जगन्नाथ किसे कहा गया है?

विकल्प 1. विष्णु **2.** सारे जगत् के स्वामी अक्षरातीत परब्रह्म

541. ब्रह्मात्माओं की जमात को मूसा का 71 वां फिरका, ईसा का 72 वां फिरका एवं मुहम्मद का 73 वां फिरका क्यूं कहा गया है?

विकल्प 1. दूसरे ईसा, दूसरे मूसा और दूसरे मुहम्मद को मानने के कारण

2. उनके उपदेशों को तो हम मानते ही हैं, साथ ही वही शक्ति अब महामति जी के अंदर दुबारा आयी है इसलिए

542. ''साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत ।'' में महामत किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** पांचों शक्तियों से युक्त इंद्रावतीजी को

2. श्रीप्राणनाथजी को, महामतिजी और प्राणनाथ एक ही हैं क्योंकि श्रीराजजी की शक्ति होने से ही तो महामति कहा गया है

543. ''निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. महामति जी के तन में विराजमान उपरोक्त शक्तियों का सबको अनुभव हो रहा है

2. अंत में सारी दुनिया को उपरोक्त शक्तियां (आंशिक रूप से) प्राप्त होंगी, जिससे वे एक परमात्मा की पहचान करके उनकी शरण में आयेंगे

<u>प्रकरण 60</u>

544. ''कुली बल देखो रे'' में कुली से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** माया दज्जाल की शक्ति 2. अज्ञानता 3. मन

545. ''ए जो देखन आइयां तुम।'' ब्रह्मात्माएं किस प्रकार आयी हैं?

विकल्प 1. तन से **2.** सुरता से 3. चेतना से

546. ''सत ढांप्या पीठ देवाई पिया को, झूठ ल्याया नजर'' के अनुसार माया ने धाम धणी को किस प्रकार पीठ दिलाया?

विकल्प **1.** ब्रह्मप्रियाओं के हृदय में झूठे मायावी दृश्य उपस्थित करके

2. इस संसार में सत्य ज्ञान को छिपा दिया

547. ''नेहेचल घर थें आइयां खेल देखने, सत सरूप परवान।'' में 'सत् स्वरूप से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. सत स्वरूप ब्रह्म **2.** सत्य अविनाशी स्वरूप वाली ब्रह्मप्रियाएं
3. परमसत्य (मारफत स्वरूप) ब्रह्मात्माएं

548. ''बिन वाए चढ़या बगरूला'' बिना हवा का आंधी के उदाहरण से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. अज्ञानता से युक्त संसार **2.** अस्तित्वहीन माया जगत्

549. ''सबको देखे बिन आंखें। खिन में फिरवले सब लोकों, पांऊ बिना बिन पांखें'' किसके विषय में कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** कण–कण में व्याप्त माया शक्ति के विषय में, जिसके नियंत्रण में सब कुछ है 2. समस्त संसार में व्याप्त अज्ञानता के लिये

550. ''जाकी अग्याएं अगनी चले, चले जिमी और जल'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. अज्ञान को माया/दज्जाल कहा गया है
2. माया एक शक्ति है, जिसके नियंत्रण में पांचों तत्व भी होते हैं

551. ''अंदर जो बांधे या विध, कही ना जाए करामात।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** हमारे विचार विकार भी माया की शक्ति से उत्पन्न होते हैं
2. माया कोई शक्ति नहीं है, हम ही सब करने वाले हैं

552. ''राज करे सिर सबन के, चलावत ज्यों जित जाने।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** माया एक शक्ति है, जो संसार के सभी प्राणियों को अपनी इच्छा अनुसार कर्म करवा रही है 2. माया मात्र अज्ञानता है

553. ''उदयो लोभ विखे रस विखया'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. सांसारिक विषय **2.** इंद्रियों के विषय रूपी विष

554. ''बाढ़ी व्याध स्वाद गुन इंद्री'' विषय विकार किस प्रकार बढ़ गये?

विकल्प 1. रजोगुण तमोगुण बढ़ने से **2.** माया की शक्ति बढ़ने से

555. ''खिन सज्जन खिन दुस्मन'' इस चौपाई में किसकी बात कही जा

रही है?

विकल्प **1.** एक ही व्यक्ति क्षण में सज्जन व क्षण में दुर्जन हो जाता है
2. कोई व्यक्ति सज्जन व कोई व्यक्ति दुर्जन हो जाता है

556. ''दिवाना दाना प्रवीन'' के अनुसार दाना–बुद्धिमान किस प्रकार हो जाते हैं?

विकल्प 1. अज्ञान रूपी माया के कारण दिखावे के ज्ञानी बन जाते हैं
2. दाना बुद्धिमान भी माया की शक्ति से ही होते हैं

557. ''ना कछू चोर न कोई साधू'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** वास्तव में ना कोई चोर है, ना कोई साधु, ये सारा दृश्य प्रपंच है 2. अज्ञानता के कारण कोई चोर व कोई साधू बन जाता है

558. ''वेद कतेब सास्त्र सबे मुख, जुगें लिए सब जीत।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** माया ने वेद–कतेब के सभी ज्ञाताओं को अपने वश में किया है
2. माया ने वेद के अतिरिक्त अन्य ज्ञाताओं को अपने वश में किया है

559. ''चौदे लोक अग्याकारी, सिर सबन के हुकम।'' का क्या आशय है?

विकल्प 1. चौदह लोकों के सभी प्राणी अज्ञानता में डूबे हैं
2. चौदह लोकों के समस्त प्राणियों के सिर पर माया/स्वाप्निक चेतना शक्ति का हुक्म चलता है

560. मारकण्ड दृष्टांत में धोबी धोबन व चारों बच्चों के अंदर जीव चेतना कहां से आयी थी?

विकल्प **1.** सभी के अंदर नारायण भगवान की शक्ति ही चेतना रूप से स्थित थी
2. सभी के अंदर अलग अलग जगह से चेतना आयी थी

561. ''छूट गई मरजाद'' कौन सी मर्यादा छूट गयी?

विकल्प 1. मात्र धर्म की **2.** धार्मिक सामाजिक नैतिक पारिवारिक सभी

562. ''ढाहे तीरथ प्रासाद'' यहां क्या तोड़ने की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. मंदिर तीर्थ स्थान **2.** मंदिरों तीर्थ स्थानों की मर्यादा

563. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. धणी ने कलियुग को आदेश दिया कि ब्रह्मात्माओं को अपने

जाल में फंसाये रखना **2.** श्रीराजजी की इच्छानुसार माया शक्ति ब्रह्मात्माओं को भुला रही है

564. ''बुध जी धनी हुकम मांहें, फरिस्ता असराफील।'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्रीप्राणनाथजी के अंदर जागृत बुद्धि का फरिश्ता अश्राफील विराजमान है

2. जागृत बुद्धि मूल स्वरूप अक्षरातीत के आदेश के आधीन है, जिसे कुर्आन में संकेतों में अश्राफील फरिश्ता कहा गया है

565. अश्राफील फरिश्ते के द्वारा दूसरा सुर फूंकने से क्या आशय है?

विकल्प 1. अश्राफील फरिश्ता पूरे संसार में ज्ञान का फैलाव कर देगा

2. धणी का आदेश/संकल्प होते ही सारी दुनिया को जागृत बुद्धि प्राप्त हो जायेगी

566. ''कलपे जुथ जान ब्रह्मसृष्ट के, मिले नूर बुध हुकम।।'' ये शक्तियां किसे मिलने की बात है?

विकल्प **1.** समस्त सुंदरसाथ को 2. मात्र इंद्रावती जी को

567. ''अश्राफील जबराईल, भेज दिया आमर। निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बंदो पर।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** जोश व जागृत बुद्धि की शक्ति सभी आत्माओं को प्राप्त होती हैं

2. जोश व जागृत बुद्धि की शक्ति मात्र इंद्रावती को प्राप्त होगी

<u>प्रकरण 61</u>

568. ''साहेब तेरी साहेबी भारी।'' में 'साहेबी' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. महिमा **2.** दायित्व

569. ''तिन सबकी सोभा ले स्याम, आया महंमद पर।''का क्या आशय है?

विकल्प 1. उन सभी पैगम्बरों की शोभा समाप्त करके श्रीकृष्ण के तन में स्थित परब्रह्म के जोश की शक्ति अरब में आयी

2. उन सभी पैगम्बरों की शोभा लेकर श्रीकृष्णजी के तन में स्थित परब्रह्म के जोश (आवेश) की शक्ति अरब में आयी

570. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. उन पैगम्बरों में परमात्मा की कोई शक्ति नहीं थी इसलिये उनकी महिमा समाप्त हो गयी

2. उन पैगम्बरों ने परमात्मा के जोश के द्वारा ही परमात्मा के विषय में प्रमाण लिखा था इसलिये उनकी शोभा लेकर आने की बात लिखी है

571. ''नूर नामे में पैगंमर, एक लाख बीस हजार।'' में किन पैगम्बरों की बात है?

विकल्प 1. 12,000 ब्रह्मात्माओं की **2.** सृष्टि के प्रारम्भ से आये पैगम्बरों की

572. ''सो महंमद कासिद होए के, ले आया फुरमान।'' तारतम वाणी के अनुसार मुहम्मद साहब कौन थे?

विकल्प 1. संदेशवाहक/रसूल **2.** स्वयं खुदा/धाम धनी

573. ''वास्ते हमारे हम में, पोहोंचाय हैं निसान।।'' मुहम्मद साहब किनके वास्ते कुरान (हकीकत के 30 हजार हर्फ) लाये?

विकल्प 1. दुनिया वालों के लिये **2.** ब्रह्मसृष्टि के लिये

574. ''रूह अल्ला किल्ली अल्लाह थें, ले उतरे चौथे आसमान।'' ईसारूहूल्लाह शब्द मूलतः कहां का है?

विकल्प **1.** कुर्आन पाक का 2. तारतम वाणी का

575. कुर्आन, बाईबिल, और वाणी के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. दूसरे ईसा आयेंगे

2. ईसा मसीह/ईसा रूहूल्लाह दुबारा आयेंगे

576. '' 1 Thessalonians 4:16 - For the Lord himself shall descend from heaven with a shout, with the voice of the archangel, and with the trump of God...., में 'Lord' शब्द का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. स्वयं परमेश्वर **2**. स्वयं ईसा मसीह

577. सात कलमें वाले पैगम्बरों में ईसारूहूल्लाह किसे कहा गया है?

विकल्प 1. श्रीदेवचंद्रजी को **2.** ईसा मसीह को

578. ''कलीम अल्ला कह्या मूसे को'' कलीमुल्लाह का क्या अर्थ होता है?

विकल्प **1**. खुदा से बात करने वाला 2. खुदा का दोस्त

579. बाईबल ओल्ड टेस्टामेंट के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. सीने पर्वत पर खुदा का नूर देखकर मूसा पैगम्बर बेहोश हो गये

2. सीने पर्वत पर खुदा के नूर से मूसा ने बहुत सी बातें की, बेहोश नहीं हुए

580. 'खलीलुल्लाह' किसे कहा गया है?
विकल्प 1. नूह नबी को **2.** इब्राहिम पैगम्बर को

581. 'खलीलुल्लाह' का अर्थ क्या होता है?
विकल्प 1. खुदा से कलाम करने वाला **2.** खुदा का दोस्त

582. ''आए ईसा नूह नबी इमाम'' आदि के महामति जी के अंदर आने की बात किस कारण कही जा रही है?
विकल्प **1.** वही जोश की शक्ति दुबारा आने के कारण, उनकी शोभा महामति जी में घटित करने के लिये 2. श्रीजी की शरण में उनके आने के कारण, इमाम महदी के अंदर कोने में बैठे रहने के लिये

583. 'वली' शब्द का क्या अर्थ होता है?
विकल्प **1.** वारिस 2. संदेशवाहक

584. नूह नबी के नाम के आगे कौन सा कलमा लगता है?
विकल्प 1. नूह नबीउल्लाह **2.** नूह नज़ीउल्लाह

585. 'नज़ीउल्लाह' का क्या अर्थ होता है?
विकल्प **1.** अल्लाह का घनिष्ठ मित्र 2. अल्लाह का नबी

586. ''सो आदम सफी अल्लाह।'' 'शफीउल्लाह' का क्या अर्थ होता है?
विकल्प **1.** खुदा जैसी सूरत वाला प्रथम शख्स/जीव
2. खुदा जैसी शक्ति वाला

587. खुदा जैसी सूरत वाला सृष्टि का प्रथम शख्स कौन है?
विकल्प **1.** आदिनारायण 2. स्वयम्भुव मनु 3. वैवस्वत मनु

588. निम्न में से क्या सत्य है?
विकल्प **1.** सृष्टि में एक ही आदम होता है
2.हर मन्वन्तर में आदम बदलते रहते हैं

589. तारतम वाणी के अनुसार सृष्टि के अंत में किसको जागृत बुद्धि मिलेगी, जिसके पश्चात् सारी दुनिया को जागृत बुद्धि मिल जायेगी?
विकल्प 1. आदिनारायण को **2.** विष्णु भगवान को

590. निम्न में से क्या सत्य है?
विकल्प 1. सबका मन ही शैतान है

2. सब जीवों के दिलों में शैतान विराजमान है

591. ''चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत अजाजील।'' के अनुसार अजाजील कौन है?

विकल्प **1.** वैकुण्ठ में विराजमान विष्णु भगवान

2. वैकुण्ठ में विराजमान आदिनारायण

592. सभी जीव चेतनाओं का मूल उद्‌गम स्थान कहां है?

विकल्प 1. सभी जीव चेतनाओं का मूल आदिनारायण है

2. सुमंगला शक्ति का स्वाप्निक रूप माया/मोह/स्वाप्निक चेतना

593. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प **1.**महामति जी के तन में विराजमान जागृत बुद्धि आदि शक्तियों के द्वारा कुर्आन के रहस्य खुल रहे हैं 2. अश्राफील फरिश्ता श्रीप्राणनाथजी के अंदर विराजमान होकर ज्ञान रूपी सुर फूंक रहा है

594. ''जबराईल जोस धनी का, सो आया गिरो जित।'' के अनुसार 'जोश' की शक्ति कहां आयी?

विकल्प 1. महामति जी के अंदर **2.** सुंदरसाथ के अंदर

595. ''हुए जाहेर नूरजमाल'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. श्रीप्राणनाथजी के स्वरूप में अक्षरातीत जाहिर हो गये

2. अक्षरातीत परब्रह्म का स्वरूप धाम लीला का ज्ञान दुनिया में जाहिर हो गया

596. ''जो कोई कहावे बुजरक, सब आए मिले इन ठौर।'' में 'बुजरक' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. दुनिया में जो प्रतिष्ठित हैं

2. साधना, भक्ति, तपस्या के क्षेत्र में जो महान् हैं

597. कुर्आन के अनुसार महामति जी की शोभा किस प्रकार बढ़ती है?

विकल्प **1.** मुहम्मद हकी सूरत कहने से 2. इमाम महदी कहने से

598. ''दुनियां उठाई पाक कर'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. अखण्ड होने के पश्चात् सबको जागृत बुद्धि प्राप्त होगी

2. जागृत बुद्धि प्राप्त होने के बाद सब अखण्ड होंगे

599. ''लीला तीनों थिर होएसी, अखण्ड इन प्रकार। निमख एक ना विसरसी,

रेहेसी दिल में सार।। क. हि. 23/101 के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** अक्षर के हृदय में जागनी लीला भी अखण्ड होगी
2. अक्षर के हृदय में मात्र जीव अखण्ड होंगे

600. ''तब याद किया सुपन को, उठी आठों भिस्त'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** अक्षर ब्रह्म जागृत होने के बाद स्वप्न को याद करेंगे, तब आठों बहिश्तें अखण्ड होंगी 2. अक्षरातीत परब्रह्म अक्षर ब्रह्म को आदेश देंगे, जिससे वे दुनिया को अखण्ड कर देंगे

601. ''हिरदे मांहें नूर के, लिए नजर तले हजूर।'' यहां 'नूर नजर'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अक्षर की हृदय दृष्टि 2. तारतम ज्ञान की दृष्टि

602. ''रोसनी पार के पार की, दई साहेब नाम धराए।'' के अनुसार श्रीराजजी ने इंद्रावतीजी को अपना क्या नाम प्रदान किया?

विकल्प **1.** श्रीजी साहेब 2. श्रीकृष्ण 3. श्रीदेवचंद्र

603. ''भई दुनियां साफ मुसाफ से'' में 'मुसाफ' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. तारतम वाणी **2.** कुर्आन पाक

604. ''आस पुराई इन की'' महामति जी के तन से अक्षर की कौन सी आशा पूर्ण करवायी?

विकल्प **1.** रंगमहल के अंदर की प्रेमलीला देखने की
2. युगल स्वरूप का नख से शिख तक का श्रृंगार मात्र देखने की

<u>प्रकरण 62</u>

605. ''ना चाहों मैं बुजरकी'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** मान प्रतिष्ठा नहीं चाहती 2. ज्ञान नहीं चाहिये

606. ''इलम चातुरी खूबी अंग की'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** ज्ञान प्रवचन करने/समझाने का सामर्थ्य
2. वक्तृत्व कला, ज्ञान ना होने पर भी तर्क–वितर्क करना

607. ''एही अंकूर साथ कारने, करत मिलाप अंतराए।'' के अनुसार धणी के दीदार में क्या बाधक है?

विकल्प 1. धणी ने जो अपनी शोभा दे दिया

2. ज्ञानचर्चा के पश्चात् प्राप्त होने वाली प्रतिष्ठा

608. ''एही खूबी मेरे अंग को, देत नाहीं दरद।'' किस खूबी के कारण दर्द नहीं उत्पन्न हो पा रहा है?

विकल्प **1.** ज्ञानचर्चा की विशेषता होने के कारण

2. आचरण नहीं होने के कारण

609. ''फेर श्रवना देवें आतम को, एही परदा नाम खुदाए।'' का क्या अर्थ होगा? किस कारण दर्शन नहीं हो पा रहा है?

विकल्प 1. उस ज्ञान को आचरण में ना लाने के कारण से

2. श्रवणा (कान) प्रशंसा सुनकर जीव तक पहुंचाता है तो अहंकार हो जाता है इस कारण

610. ''एही बुजरकी साथजी, भया गले में तौक'' में बुजरकी से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ज्ञान, तप, साधना, ध्यान में स्वयं को बड़ा मानने का भाव

2. धाम धणी ने अपनी जो शोभा प्रदान की है

611. ''मैं परबोधों जान वतनी, मोहे बंधन भयो इन रीत।'' के अनुसार क्या बंधन हो गया है?

विकल्प **1.** उनके हित की भावना से चर्चा सुनाना, उनसे दिल लगाना

2. आचरण में ना लाना

612. ''बोझ अपनों निज वतन को, सो सब मेरे सिर दियो।'' में किस तरह के बोझ की बात कही गई है?

विकल्प **1.** ब्रह्मात्माओं के जागनी की जिम्मेदारी 2. श्रीराजजी की शोभा

613. ''तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और न जानूं बात'' कहने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

विकल्प **1.** मैं अंगना हूं ना कि खाविंद 2. मैं आपकी अंगना हूं बस

614. ''अल्ला आसिक मासूक महंमद'' इस्लामिक ग्रंथों में किसे अल्लाह का माशूक कहा गया है?

विकल्प **1.** मुहम्मद सल्ल. 2. मूल स्वरूप श्रीश्यामाजी

615. कुर्आन के अनुसार निम्न में से किसकी महिमा सर्वोपरि है?

विकल्प 1. इमाम महदी **2.** मुहम्मद सल्ल. 3. ईसारूहूल्लाह

616. ''सोई भाईयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा मैं।। मा. सा. 6/32'' के अनुसार मुहम्मद साहब के द्वारा कहे गये हकीकत के सांकेतिक वचनों के अर्थ कौन खोलेगा?

विकल्प **1.** स्वयं मुहम्मद साहब हकी सूरत के रूप में
2. इमाम महदी साहब

617. ''ए तीनों सिफतों भया रसूल,ए सजीवन मोती कह्या अमोल।'' अनमोल सजीवन मोती किसे कहा गया है?

विकल्प 1. मुहम्मद हकी सूरत/महामतिजी को **2.** मुहम्द की तीनों सूरतों को

618. अल्ला मुहबा मासूक, सो खासी खसम दिल। तो नाम धराया रसूले, आसिक अपना असल।।सनंध 1/1 के अनुसार मुहम्मद सल्ल. को माशूक कहने का कारण क्या था?

विकल्प **1.** उनके अंदर श्रीश्यामाजी की आत्मा होना
2. उनके अंदर अक्षर की आत्मा होना

619. ''नूर पार थें रसूल आवही'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. सत्स्वरूप से परे अक्षरधाम से रसूल साहब आये
2. अक्षरधाम से परे रंगमहल से रसूल साहब (रूह) आये

620. अरब की लीला के समय सभी सखियों की सुरता कहां थीं?

विकल्प 1. परमधाम में ही मूल तनों में थीं, वे जागृत थीं
2. सुषुप्ति अवस्था में श्रीराजश्यामाजी के साथ मुस्तफा के तन में थीं, मूल तनों से उनकी सुरता निकल चूकी थी

621. महामति जी किनके सांकेतिक वचनों के गूढ़ार्थ खोल रहे हैं?

विकल्प **1.** मुहम्मद साहब के 2. श्री देवचंद्रजी के

622. ''नूर अनामिन अल्ला तो कह्या, कुल सैयन मिन्नूरी। मा.सा. 3/118'' में 'सैंयन' शब्द किसके लिये प्रयोग किया गया है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसृष्टि के लिये 2. जीव सृष्टि के लिये

623. जिब्रील (धणी का जोश) मुहम्मद की किस रूह को पहचानने के कारण रंगमहल नहीं जा सका?

विकल्प **1.** श्रीश्यामाजी की आत्मा 2. अक्षर की आत्मा

624. ''तेरी उमतें गुनाह कर लिया।। ब.क.6/12'' ब्रह्मात्माओं को

मुहम्मद सल्ल. के अंदर आयी किस रूह का उम्मत कहा गया है?

विकल्प 1. अक्षर ब्रह्म की **2.** श्रीश्यामाजी की

625. ब्रह्मात्माओं के फरामोशी की चाबी किसका दिल है?

विकल्प 1. अक्षर ब्रह्म का **2.** श्रीश्यामाजी का

626. ''इन उमत भाईयों वास्ते, महंमद आये तीन बेर।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. तीन मुहम्मद आये **2.** मुहम्मद तीन बार आये

627. मुहम्मद सल्ल. के अंदर आयी कौन सी रूह मोमिनों की चिंता कर रही है?

विकल्प **1.** श्रीश्यामाजी की 2. अक्षर ब्रह्म की

628. ''कह्या सुरत मेहमद बसरी, सों वासना श्यामाजी की खरी'' ये कौन से ग्रंथ की चौपाई है?

विकल्प 1. श्री कुल्ज़म स्वरूप **2.** नवरंग स्वामी कृत रोशननामा

प्रकरण 63

629. ''जिन सुध सेवा की नहीं'' कहने का क्या भाव है?

विकल्प 1. वे आलस्य के कारण सेवा नहीं करते

2. वे मान–सम्मान के उद्देश्य से दिखावे की सेवा–प्रशंसा करते हैं

630. ''कमर बांधे देखा देखी, जाने हम भी लगे तिन लार।'' के अनुसार वे किनकी देखा–देखी करते हैं?

विकल्प 1. निःस्वार्थ सेवा–साधना करने वाले सुंदरसाथ की

2. दिखावा निंदा चापलूसी करने वाले सुंदरसाथ की

631. ''ए चले चींटी हार ज्यों, बांधे ऊंट कतार।।'' के अनुसार वे दिखावे (निंदा चापलूसी) के गलत मार्ग का अनुसरण क्यूं करते हैं?

विकल्प **1.** वैराग्य, वाणी मंथन और निःस्वार्थ सेवा–साधना के मार्ग पर चलना उनके लिये सम्भव नहीं होता है

2. सत्य ज्ञान व सत्य मार्ग उन्हें प्राप्त नहीं हो पाता है

632. ''इन लोकों की मैं क्या कहूं ,जो जाए पड़े मुख काल।'' में किनकी बात कही जा रही है?

विकल्प 1. जो जीव काल के आधीन जन्मते–मरते रहते हैं

2. जो भौतिक सुखों को ही लक्ष्य मानकर दिखावे की भक्ति करते हैं

633. ''दूध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपर का फैन''के अनुसार फेन क्या है?

विकल्प 1. वाणी मंथन, निःस्वार्थ सेवा, ध्यान, छल–कपट रहित रहनी

2. दिखावे की सेवा, झूठी प्रशंसा–निंदा करके मान–प्रतिष्ठा कमाना

634.. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. ये लोग अध्यात्म की उच्च अवस्था पाने का प्रयत्न तो करते हैं किंतु प्राप्त नहीं हो पाता **2.** वैराग्य ज्ञान भक्ति से रहित होने के कारण दिखावा निंदा चुगली चापलूसी का मार्ग अपना लेते हैं

635. ''लेने को बुजरकियां, सेवें चातुरी चैन।'' में 'चैन' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. उच्च पदों को प्राप्त करने के लिये ये लोग चतुराई पूर्वक आराम से सेवा करते हैं **2.** मान–सम्मान प्राप्त करने के लिये कपटपूर्वक दिखावे की सेवा, चुगली, चापलूसी करते हैं

636. ''खुस बखत होवें खैंच में'' का क्या आशय है?

विकल्प 1. वे आपसी खैंचातान में खुश होते हैं **2.** आनंद के समय भी वे सच्चे सुंदरसाथ की निंदा चुगली करने लगते हैं

637. ''क्या मूरख क्या समझू , सबे लगे दुख देन।'' में समझू से क्या आशय है?

विकल्प **1.** मान प्रतिष्ठा झूठा है जानकर भी उसकी चाहना करना

2. वैराग्य, ज्ञान व भक्ति से युक्त सुंदरसाथ भी राजनीति करता है

638. ''सनमुख होए सेवा करें''वे श्रीजी के समक्ष सेवा किसलिये करते हैं?

विकल्प 1. अपनी विनम्रता दर्शाने के लिये

2. श्रद्धा–सेवा का दिखावा करने के लिये

639. ''निपट नजीकी सेवहीं, दौड़े एक दूजे पें लेन।'' ऐसे लोग एक–दूसरे से सेवा किस प्रकार लेते हैं?

विकल्प **1.** सच्चे व्यक्ति पर आरोप लगाकर, निंदा चुगली करके

2. प्रेमपूर्वक सेवा करने की भावना से

640. ''मन वाचा कर सेवहीं, गलित गात रोवें नैन।'' निर्मल सुंदरसाथ भी खैंचमखैंच में किस प्रकार प्रवेश कर जाता है?

विकल्प **1.** जब उस पर झूठा आरोप लगाया जाता है, और उसके साथ

न्याय नहीं होता है 2. उसका लक्ष्य शुरू से ही गलत होता है

641. ''सेवक कई समझावहीं, साखी सबे मुख केहेन।'' इतना समझाने पर भी वे दिखावा करने वाले क्यूं समझ नहीं पाते हैं?

विकल्प **1.** वैराग्य ज्ञान भक्ति से रहित होने के कारण, उनका लक्ष्य ही गलत होता है

2. वैराग्य ज्ञान व भक्ति होने के बाद भी वे खैंचमखैंच करते हैं

642. ''कबीरा आप ठगाईये, और ना ठगिये कोय।'' के अनुसार शांति किसमें है?

विकल्प 1. दूसरों के प्रति झूठी निंदा चुगली करने में

2. स्वयं दुःख सहन कर लेने में

643. ''अर्थ अंदर का लेवहीं, समझें इसारत सेन।'' इतना ज्ञान समझने पर भी विवाद में क्यूं पड़ जाते हैं?

विकल्प 1. क्योंकि इतना ज्ञान समझने वाले भी खींचतान की अग्नि में जल रहे होते हैं **2.** संसार में सत्य ज्ञान कहने पर, देखादेखि वालों से विवाद हो ही जाता है

644. ''अंदर बाहेर उजले, दोष देखें सब ऐन।'' जो हृदय व आचरण से निर्मल हैं, ऐसे ध्यानी साधक भी किस विकार से ग्रस्त हो जाते हैं?

विकल्प 1. दूसरों की निंदा करने का उनका स्वभाव होता है

2. स्वयं को बड़ा और दूसरों को छोटा समझने के अहंकार से

645. निम्न में से सहीं सिद्धांत क्या है?

विकल्प **1.** हारे से होए जीत 2. छल–कपट करे से होए जीत

646. ''क्यों ए न खुले मूल नैन।'' में 'मूल नैन' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** परात्म भाव आना, परात्म भाव से सबसे प्यार करना

2. सबके अंदर एक चेतना को देखना

647. ''साथें लई लीक जाहेरी, सो उतरी लीक थें लीक।'' में प्रसंग अनुसार जाहेरी लकीर से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** दिखावे की सेवा भक्ति चापलूसी चुगली करना

2. कर्मकाण्ड की राह पर चलना

648. ''कहां कुलफ किल्ली कल गत।'' कौन सा ताला है और उसकी

चाबी क्या है?

विकल्प **1.** अज्ञान रूपी ताला एवं तारतम ज्ञान रूपी चाबी
2. कर्मरूपी ताला एवं पुण्य रूपी चाबी

649. ''ए जान बूझ तो भूलहीं, जो इनका कछू न बसाए।'' वे असत्य मार्ग का अवलम्बन क्यूं करते हैं?

विकल्प **1.** वैराग्य, वाणी मंथन, निःस्वार्थ सेवा, ध्यान के मार्ग में चल ही नहीं पाते 2. वे कर्मकाण्ड छोड़ नहीं पाते

650. ''राह जुदी दोऊ पेड़ से'' में प्रसंग अनुसार कौन से दो मार्गों की बात है?

विकल्प 1. ब्रह्मसृष्टि व जीवसृष्टि का मार्ग **2.** दिखावे की भक्ति, और वैराग्य, ज्ञान से युक्त प्रेम का मार्ग

651. ''दौड़त हैं निस वासर, किन पट न टाल्यो जाए।'' कुछ सुंदरसाथ दिन–रात प्रयास करते हैं, फिर भी क्या कमी रह जाती है

विकल्प 1. वे चितवनि नहीं करते **2.** वे माया के किसी ना किसी विकार (तृष्णा) से ग्रस्त हो ही जाते हैं

652. ''इंद्रावती तो केहेवहीं, जो दोउ बिध करी चेतन।।'' में दोऊ विध से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जाहेरी दिखावे के मार्ग और निःस्वार्थ सेवा के मार्ग का अंतर समझा दिया 2. निजघर व सांसारिक कर्तव्यों का मार्ग समझा दिया

<u>प्रकरण 64</u>

653. ''ए भोम देखी पामो त्रास।'' इस संसार के किस रहस्य को जानकर भयग्रस्त हो जाते हैं?

विकल्प **1.** नश्वरता एवं दुःखरूपता 2. संसार एक सुखप्रद स्थान है

654. ''वैष्णवो सत वस्त एक देखाडयूं, बीजो कहयो सर्वे नास।'' के अनुसार सुबोधिनी टीका में कौन सी एक सत्य वस्तु दर्शायी गयी है?

विकल्प **1.** अखण्ड रास 2. परमधाम

655. ''नाम तत्व कहयूं श्री कृष्ण जी, जे रमे अखंड लीला रास।'' के अनुसार श्रीकृष्ण नाम तत्व कहां है?

विकल्प 1. परमधाम में **2.** नित्य वृंदावन (बेहद मण्डल) में

656. ''एहने सरणे सोप्या वैष्णवने'' वल्लभाचार्य जी ने वैष्णवों को किसकी शरण में सौंपा है?

विकल्प 1. अक्षरातीत परब्रह्म के **2.** रासविहारी श्रीकृष्ण के

657. ''पुरुखपणें ए दृष्टें न आवे, ए अबलापणें लीजे अंग।'' यह कथन कहां के लिये है?

विकल्प **1.** अखण्ड रास के लिये
2. अखण्ड ब्रज व रास दोनों के लिये

658. ''गुण मुख बोली भलूं न मनावूं , अवगुण न राखूं छानो।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. किसी के अवगुण ना बोलकर मात्र प्रशंसा ही करते रहना चाहिये **2.** किसी की झूठी प्रशंसा करना और उनके अवगुण ना कहना उसके हित में नहीं है

659. ''पतलीने तमें पगला भरिया'' के अनुसार व्यभिचारिणी मार्ग क्या है?

विकल्प **1.** बहुदेव पूजा 2. अज्ञानता

660. ''अमृत ढोली ने विख पीधूं '' में विष किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** विषय रूपी भौतिक सुखों का विष 2. निंदा आरोप

661. ''अंध थके तमें ए निध खोई, जे तमने सत स्वामिऐं दीधी।'' में 'सत स्वामी' किसे कहा गया है?

विकल्प 1. वल्लभाचार्य जी को **2.** सत्य परब्रह्म को

662. ''जे स्वामी अविचल सुख आपे, तेहने तमें कां निंदावों।'' के अनुसार वैष्णव किसकी निंदा किस प्रकार करवा रहे हैं?

विकल्प **1.** वल्लभाचार्य जी की निंदा अपनी रहनी के द्वारा
2. श्रीकृष्णजी की निंदा बहुदेव पूजा के द्वारा

663. निम्न में से पतिव्रता साधन क्या है?

विकल्प 1. भौतिक सुखों का उपभोग भी करते रहो और भक्ति भी
2. वैराग्य विरह से युक्त संयमित जीवन जीना

664. ''सत कहे संतोख उपजे'' मन में शांति कब होती है?

विकल्प **1.** सत्य ज्ञान कहने से, चाहे किसी को अच्छा लगे या ना लगे
2. किसी को प्रसन्न करने के लिये उसके अनुरूप असत्य ज्ञान कहना

प्रकरण 65

665. ''ए माया आद अनाद की'' में 'अनाद' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. अनादि ब्रह्म की माया

2. अनादि काल से बनने मिटने वाली माया

666. ''निरगुन सरगुन होए के व्यापक'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. निर्गुण माया सगुण के अंदर व्यापक है

2. निर्गुण (कण कण में स्थित शक्ति) और सगुण(साकार–दृश्यमान) के रूप में माया (स्वाप्निक चेतना शक्ति) ही विराजमान है

667. मोह सागर/महामाया के लिये 'शून्य' शब्द क्यूं प्रयोग किया जाता है?

विकल्प **1.** उसकी संकल्प रहित, निष्क्रिय (साम्यावस्था) अवस्था के कारण

2. अचेतन सूक्ष्म परमाणु होने के कारण

668. ''सास्त्रों जीव अमर कह्यो'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. जीव जन्मता और मरता है, आत्मा जन्म मरण से परे है

2. जीव चेतना को ही शुद्ध अवस्था में आत्मा कहते हैं, जिसका नाश नहीं होता, अपने मूल सुमंगला शक्ति में लीन हो जाती है

669. ''और प्रले प्रकृत कही'' में प्रकृत से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मोह तत्व **2.** मूल प्रकृति

670.''प्रकृति पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।''में प्रकृति से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** मूल प्रकृति–सुमंगला शक्ति

2. अचेतन सूक्ष्म परमाणु रूप मोह तत्व

671. ''ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम।।१०'' सबलिक ब्रह्म में किसकी परात्म कहा जा रहा है?

विकल्प 1. आदिनारायण की सुरता का

2. त्रिदेवों सहित समस्त जीव चेतनाओं का

672. ''इन कादर की कुदरत, ऐसा रखत है बल'' में 'कादर की कुदरत' किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** मूल प्रकृति 2. अचेतन सूक्ष्म परमाणु रूप मोह तत्व

673. ''हबीब बताया हादिएं, मेरा ही मुझ पास।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** मूल मिलावे में धाम धणी हमारे अत्यंत समीप हैं

2. श्रीराजजी हमारे शरीर के प्राणनली–शहरग के नजदीक हैं

674. ''हम सेहेरग से नजीक, बैठे आगे हक। बी. 17/10'' चौपाई से क्या आशय है?

विकल्प 1. हम श्रीराजजी के प्राणनली के अत्यंत समीप हैं

2. हम प्राणनली की बारीकी से भी अत्यंत समीप, श्री राजजी के समक्ष मूल मिलावे में विराजमान हैं।

675. ''रूह तन की असल अर्स में, अर्स ख्वाब नहीं तफावत।'' परमधाम व संसार में क्यूं दूरी नहीं है?

विकल्प **1.** क्यूंकि ये संसार ख्वाब है

2. क्यूंकि इस संसार के कण–कण में श्रीराजजी हैं

676. ''केवल ब्रह्म अक्षरातीत'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. केवल ब्रह्म ही अक्षरातीत है

2. मात्र अक्षरातीत ही परब्रह्म है

677. ''महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** सभी ब्रह्मात्माएं श्रीराजजी के अंगरूपा हैं

2. सभी ब्रह्मात्माओं के रूप में श्रीराजजी ही हैं, सखियां हैं ही नहीं, कोई लीला भी नहीं हैं

<u>प्रकरण 66</u>

678. ''जो कोई अहेल किताब।'' के अनुसार समस्त धर्मग्रंथों के असली वारिस/रहस्य जानने वाले कौन हैं?

विकल्प **1.** ब्रह्मात्माएं 2. उन धर्मों के अनुयायी

679. तारतम ज्ञान प्राप्त हो गया, ये कैसे माना जाये?

विकल्प **1.** वाणी की चौपाईयां हमें स्वतः समझ आने लगें

2. चौपाईयों का अर्थ पढ़कर व याद करके चर्चा करने लगें

680. ''तुम ताले लिख्या नूरतजल्ला'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. श्रीराजजी का दर्शन तुम्हारे भाग्य में है

2. श्रीराजजी की प्रेममयी लीलाओं का सुख तुम्हारे भाग्य में है

681. ''ए सब सुख लेवे मोमिन'' समस्त धर्मग्रंथों के सुख कौन लेगा?

विकल्प 1. सभी अपने अपने धर्मग्रंथों का सुख लेंगे
2. ब्रह्मसृष्टि ही सभी धर्मग्रंथों के सुख लेगी

682. ''ना छूटी सरीयत करम की'' शरीयत किसे कहते हैं?
विकल्प 1. सेवा पूजा करना व वाणी का पाठ पढ़ना कर्मकाण्ड है
2. बिना ज्ञान के सांसारिक कामनाओं के लिये दिखावे की भक्ति करना

683. ''ना छूटी तरीकत उपासन'' तरीकत किसे कहते हैं?
विकल्प **1.** बिना ब्रह्मज्ञान के, निष्काम सच्चे दिल की बंदगी को
2. ब्रह्मसहित सच्चे दिल से निष्काम भक्ति

684. ''ए जो उरझे बीच में, इनका सुन्य मकान'' दुनिया वाले शून्य निराकार से आगे क्यूं नहीं जा पाते हैं?
विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान व बेहद का अंकूर ना होने के कारण
2. मन व इंद्रियों की साधना करने से

685. 'आड़ी पड़ी निराकार'' निराकार को मानने वाले उसका कहां ध्यान करते हैं?
विकल्प **1.** संसार के कण कण में ब्रह्मसत्ता का व सबके हृदय में स्थित जीव चेतना का 2. क्षर जगत् के चारों ओर स्थित मोह तत्व (अचेतन सूक्ष्म परमाणु) का

686. ''मोहतत्व क्यों ए न छूटहीं, कह्या परदा ऊपर आसमान।।४।।'' के अनुसार अखण्ड में जाने का पर्दा क्या है?
विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणु **2.** नींद/स्वाप्निक चेतना शक्ति/माया

687. ''दूजी कुरसी इत तरीकत'' तरीकत की पहुंच कहां तक होती है?
विकल्प **1.** वैकुण्ठ, निराकार 2. बेहद मण्डल

688. ''हकीकत मारफत की, ना किन किया बयान।।'' में मारफत से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. जिसमें श्रीराजजी के सिवा कोई नहीं रहता
2. परमधाम की खिल्वत में होने वाली प्रेममयी लीलाएं

689. ''एह सिफायत के सुकन, महंमद सुने जो कान।'' तीस हजार शफाअत/मारफत के शब्द कौन से हैं?

विकल्प 1. श्रीराजजी के सिवा कोई नहीं है, ऐसा दर्शाने वाले
2. परमधाम की खिल्वत में होने वाली प्रेममयी लीलाओं के

690. ''जो औलाद आदम हवा की'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** आदिनारायण के संकल्प से उत्पन्न हुयी जीव सृष्टि
2. मनु और श्रद्धा से उत्पन्न हुए मनुष्य

691. ''पातसाह अबलीस दिल पर'' के अनसार इब्लिश कौन है?
विकल्प 1. मन ही इब्लिश है **2.** हृदय में स्थित जीव चेतना को माया/स्वाप्निक चेतना का अंश होने से इब्लिश कहा है

692. ''जहां कछुए है नहीं, सब कहें बेचून बेचगून।'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. मोहतत्व कोई शक्ति नहीं है
2. मोहतत्व में कोई तत्व, स्वरूप नहीं, उसमें ब्रह्म के कोई गुण नहीं

693. ''सून्य निराकार निरंजन'' दुनिया वाले किसे कहते हैं?
विकल्प 1. क्षर जगत् के चारों ओर घेर कर आये अचेतन सूक्ष्म परमाणु को
2. संसार के कण–कण में तथा सभी प्राणियों के हृदय में जीव चेतना के रूप में विराजमान ब्रह्मसत्ता को

694. ''आसमान जमीन के बीच में जो कुछ है, सो सब हुक्म का बांधा है'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** संसार के कण–कण में व्याप्त हुक्म/ब्रह्मसत्ता के आधीन सब चल रहा है 2. संसार के कण–कण में कोई भी शक्ति नहीं है, सब अपने आप चल रहा है

695. जो रूह हमारी आवे खेल में, तो खेल रहे क्यों कर'' के अनुसार इस स्वप्न संसार में परात्म से क्या आया है?
विकल्प 1. परात्म की चेतना **2.** परात्म के दिल की नजर

696. ''इत रूह न कोई रूहन की'' चौपाई के अनुसार स्वाप्निक तन में परात्म से क्या नहीं आया?
विकल्प **1.** परात्म की चेतना 2. परात्म का दिल

697. ''तो मोमिन तन में हुक्म, फैल करे लिये रूह हुज्जत'' में हुक्म से क्या तात्पर्य है, जो मोमिनों के स्वाप्निक तन में रूह का दावा लेकर कार्य (आचरण) कर रहा है?

विकल्प 1. श्रीराजजी की इच्छा **2.** ब्रह्मसत्ता

698. ''हक हुकम तो है सबमें'' में 'हुक्म' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. परब्रह्म की इच्छा **2.** ब्रह्मसत्ता

699. पृथ्वी आदि सभी ग्रह अंतरिक्ष में किस प्रकार घूम रहे हैं?

विकल्प 1. चुम्बकत्व के आकर्षण में घूम रहे हैं

2. ब्रह्मसत्ता के द्वारा घूम रहे हैं और नियंत्रित हो रहे हैं

700. ''अर्ज करी वास्ते उमत, पोहोंच के हक हजूर'' मेअराज में मुहम्मद की रूह ने खुदा से किसके लिये अर्जी किया?

विकल्प 1. तत्कालीन मुहम्मद की जाहिरी उम्मत के लिये

2. मुहम्मद के भाई मोमिन/ब्रह्मात्माओं के लिये

701. ''पिउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप।'' ''पांचों रोज रब्ब के, दिखावत कर प्यार।'' अरब वालो स्वरूप में श्रीराजजी नहीं थे?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

702. ''सो जाहेरी सब जानत, जो ले खड़े सरीयत।'' जाहेरी लोग क्या जानते हैं?

विकल्प 1. हकीकत मारफत की सारी बातें

2. खुदा द्वारा 90,000 हर्फ बातें कहे जाने का विवरण

703. ''और मुदा बिलंदी गुझ रख्या' आत्म कल्याण का सबसे मुख्य मुद्दा क्या है?

विकल्प **1.** हकीकत व मारिफ्त (परमधाम की शोभा स्वरूप व लीलाओं) का ज्ञान 2. तरीकत और सिद्धियां

704. ''भिस्त दरवाजे कायम, सबको देसी खोल'' श्रीप्राणनाथजी बहिश्त के सुखों का दरवाजा किस प्रकार खोलेंगे?

विकल्प **1.** परिक्रमा सागर सिनगार की वाणी के द्वारा

2. मात्र श्रद्धा–भक्ति का दिखावा करने से

705. कुरान पाक में लिखा है कि अल्लाह तआला आखिरत में दुनिया में इमाम महदी के रूप में आयेगा?

विकल्प 1.सत्य **2**. असत्य

706. कुर्आन–हदीसों में लिखे जाहिरी वर्णन के अनुसार खुदा का दीदार

होने की बात कहां की है?

विकल्प 1. दुनिया की **2.** मैदान ए हश्र की

707. इमाम महदी (महामतिजी) के हृदय सिंहासन पर विराजमान होकर खुदा तआला कौन सा न्याय कर रहे हैं?

विकल्प **1.** प्रथम न्याय सत्य–असत्य ज्ञान का निर्णय

2. द्वितीय न्याय – जोश के द्वारा कर्मों का न्याय

708. ''ए सब उम्मत कारने, आखिर करी सरत'' में उम्मत किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसृष्टि 2. जाहिरी मुसलमान

709. ''सो हुकम हादी का छोड़ के'' के अनुसार जाहिरी मुसलमान किस हादी का आदेश नहीं मान रहे?

विकल्प **1.** मुहम्मद साहब द्वारा कुर्आन–हदीसों में दिये गये निर्देशों का

2. श्रीप्राणनाथजी का

710. ''बीच अंधेरी सुन्य के, जाए जल बिन गोते खाए''से क्या आशय है?

विकल्प **1.** स्वप्न संसार के कण–कण में व सभी प्राणियों के हृदय में ब्रह्म का स्वरूप मानकर भटक रहे 2. क्षर जगत् के चारों ओर आये काले घेरे– अचेतन सूक्ष्म परमाणु में गोते खा रहे हैं

711. ''जिनके दिलों, कानों और आंखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प **1.** खुदा ने उन्हें ब्रह्मज्ञान समझने की शक्ति नहीं दी

2. माया की आसक्ति के कारण उन्हें कुछ नहीं दिखायी देता

712. ''ए सदी अग्यारहीं बीच में, होसी दोजख भिस्त सबन।'' में दोजख से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. नरकाग्नि प्रदान की जायेगी

2. भौतिक सुखों में डूबने और खुदा को भूलने से अनेकों दुःख, विभीषिकाएं आयेंगी जिससे सबको अपनी भूलों का पश्चाताप होगा

713. ''दिया दोऊ हाथों कर, सिर साहेबें खिताब।'' का क्या आशय है?

विकल्प 1. श्रीराजजी ने अपने दोनों हाथ महामति जी के सिर पर रखा

2. पांचों शक्तियों द्वारा वेद–कतेब का ज्ञान प्रदान करके

प्रकरण 67

714. ''वाटडी विसमी रे साथीडा वेहदतणी'' बेहद का रास्ता कैसा है?

विकल्प 1. सकाम भक्ति/कर्मकाण्ड का 2. निष्काम भक्ति का
3. ज्ञान सहित निष्काम भक्ति का

715. ''खांडानी धारे रे एणी वाटें चालवूं '' तलवार धार क्यूं और किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** कष्ट अपमान सहन करते हुए भी सत्य मार्ग पर निष्काम भाव से चलते रहना
2. भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए दिखावे की भक्ति करते रहना

716. ''आडी ने आडी रे अगनी जोने पर जले'' में किस प्रकार के अग्नि की बात कही गयी है?

विकल्प 1. अज्ञानता की **2.** कसौटी–दुःखों की 3. विरह की

717. ''इहां हस्ती थई ने एणी वाटे हींडवूं '' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** घण्टी लगे हाथी के समान किसी के द्वारा की गई निंदा–आरोप की तरफ ध्यान नहीं देना
2. हाथी के समान मस्ती भरी चाल चलना

718. ''पेंसवूं सुईना नाका मांहें।'' सुई के छिद्र में प्रवेश करने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अहंकार शून्य होकर इतना छोटा हो जाना कि सूई के छेद में से भी प्रवेश करके निकल जायें
2. चित्त को एकाग्र करके ध्यान में डूब जाना

719. ''काम नहीं रे इहां कायर तणूं '' में कायर किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** थोड़े से दुःख से जिसका वैराग्य व विश्वास डगमगा जाये
2. जो गृहस्थ छोड़कर सन्यास ले ले

720. ''स्वांत लई ने सेहेजल सुखमां, प्रघल जाय रे प्रवाहे।।'' में स्वांत लेने से क्या आशय है?

विकल्प **1.** जन्म मरण जरा व्याधि की चिंता किये बिना भौतिक सुखों के मार्ग में शांतिपूर्वक चलते जाते हैं 2. शांतिपूर्वक श्रीराजजी के मार्ग पर बढ़ते जाते हैं

721. ''ते तो आकार करे रे जोने उजला, माहें तो अधम अंधार।'' के अनुसार ऊपर से स्वच्छ किंतु अंदर क्या स्थिति है?

विकल्प **1.** भौतिक सुखों की तृष्णा व अज्ञान अंधकार
2. ज्ञान विश्वास व प्रेम

722. ''भेख ने बनावो रे अनेक विधना, पण मूके नहीं वेहेवट।'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** अनेक प्रकार की आकर्षक वेशभूषा बनाते हैं, किंतु माया का स्वभाव (आशा–तृष्णा) नहीं जाता
2. वेश भूषा से समाज में प्रतिष्ठा मिलती है

723. ''वेहद वाटे रे कपट चाले नही, राखें नहीं रज मात्र।'' में क्या निर्देश है?

विकल्प **1.** अखण्ड मोक्ष के मार्ग में थोड़ा भी कपट नहीं चल सकता
2. जागनी/धर्म कार्य में थोड़ी बहुत राजनीति/कपट चलता है

<u>प्रकरण 68</u>

724. ''अटकलें ए केम पांमिए'' ''पार जवाय पूरण दृष्टे'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. अखण्ड सुख–मोक्ष प्राप्त करने के लिये ज्यादा ज्ञान की आवश्कता नहीं होती **2.** अखण्ड सुख–मोक्ष पाने के लिये पूर्ण ज्ञान होना अति आवश्यक है

725. ''एणे पगले न पोहोंचाय, जिहां चोकस न कीजे चित मारा संमंधी।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** ज्ञान के विषय में चित्त में दृढ़ता और संशय रहित होना आवश्यक है 2. दृढ़तापूर्वक परमात्मा का ध्यान करना चाहिए

726. ''जिहां अटकल तिहां भ्रांतडी'' अटकल का अर्थ क्या होता है?

विकल्प **1.** अनुमान 2. संशय

727. ''वाट विना इहां चालवूं , अने पग विना करवूं पंथ।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मोहतत्व अचेतन सूक्ष्म परमाणुओं का सागर है, जिसके बीच में कोई रास्ता नहीं है **2.** ये संसार स्वप्न मात्र है और हमें अपने मूल तन में मूल मिलावे में जागृत मात्र होना है

728. ''जागी साख्यात बेठा थैए, त्यारे आगल पूरण पारब्रह्म।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. आत्मा जागृत होकर अपने हृदय चक्र में पूर्णब्रह्म का साक्षात्कार कर लेती है **2.** मूल मिलावे में जागृत होने पर सामने साक्षात् धाम धणी का दर्शन होगा

729. ''वचने कामस धोई काढिए, राखिए नहीं रज मात्र'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** ज्ञान से हृदय निर्मल होकर वैराग्य विश्वास प्रेम उत्पन्न होता है 2. ज्ञान शुष्क होता है, गुड़ गुड़ कहने से मूंह मीठा नहीं होता है

730. ''बेहद थे पिउ आये के, बेहद साथ खेलाया।'' में बेहद का क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** परमधाम 2. बेहद मण्डल

731.''अनेक जाओ वैकुण्ठ पार'' वैकुण्ठ से पार जाने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** विष्णु भगवान की साकार भक्ति छोड़कर, हृदय चक्र और कण–कण में स्थित ब्रह्मसत्ता का ध्यान करना
2. क्रमशः ऊपर की ओर चढ़ते हुए वैकुण्ठ से ऊपर जाना

732. ''लोही मांस न रहे अंग ऊपर, वचमां स्वांस न खाय।'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** रक्त मांस सुखने पर भी, इतना कष्ट होने पर भी, बीच में विश्राम नहीं लेना, साधना नहीं छोड़ना 2. प्राणवायु को दसवें द्वार पर रोकने से श्वांस लेने की जरूरत नहीं पड़ना

733. ''तिहां पंथ न थाय पग थोभ बिना, साध इहां जईने समाय।।'' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** स्वाप्निक चेतना शक्ति/माया में जीव चेतना समाहित हो जाते हैं
2. अचेतन सूक्ष्म परमाणु में जाकर जीव चेतना समाहित हो जाते हैं

734. ''चाल्या आघा जोवा माहें सुंन'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** साकार 14 लोक की प्रत्येक वस्तु का विश्लेषण करने के बाद हृदय चक्र और कण कण में स्थित चेतना/ब्रह्मसत्ता का ध्यान करने लगे 2. ऊपर की तरफ चलते हुए सबसे

ऊपर आये फिर शून्य निराकार को देखने लगे

735. ''सुन्य जोयूं घणूं श्रम करी'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. शून्य को पार करने का प्रयास किया

2. शून्य/ब्रह्मसत्ता का अच्छे से ध्यान किया

736. ''त्यारे नाम धराव्या निगम'' निगम किसे कहा जाता है?

विकल्प 1. वेदों को **2.** उपनिषद, दर्शन आदि व्याख्यान ग्रंथों को

737. ''सनंध न लाधी सुन्य तणी, त्यारे कहीनें वल्या अगम।।'' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** शून्य के विषय में भी अच्छे से नहीं जान पाये

2. शून्य से आगे का ज्ञान नहीं जान पाए

738. ''कल्प विरिख तिहां वेद थयो'' यहां कल्प वृक्ष किसे और क्यूं कहा जा रहा है?

विकल्प 1. वेदों को – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी फल देने के कारण

2. वैदिक व्याख्यान ग्रंथों को – कटाक्ष करते हुए

739. ''ए रस सनमुख साध लई ने, वैकुण्ठ सुन्य समाय।'' इस प्रकरण की 17–23 चौपाईयों का सार क्या है?

विकल्प **1.** जो वैदिक ग्रंथ निराकार से परे का ज्ञान नहीं दे सके, उनका सार कहलाने वाले श्रीमद्भागवत से कैसे पार हो सकते हैं

2. वेदों के सार भागवत का रहस्य ना समझने से कोई निराकार से आगे नहीं जा पाता है

<u>प्रकरण 69</u>

740. ''सुन्य मंडल सुध जो जो मारा संमंधी, आ इंडू जेहेने आधार।'' ये ब्रह्माण्ड किसके आधार पर खड़ा है?

विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणु रूपी महाशून्य के

2. स्वाप्निक चेतना शक्ति रूपी महाशून्य के

741. ''इहां आद अंत नहीं'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** अनंत विस्तार वाले क्षर जगत् के कण–कण में ब्रह्मसत्ता होने से ही ऐसा कह रहे हैं 2. शून्य–अचेतन परमाणु के लिये कह रहे, जो क्षर जगत् के चारों ओर घेरकर आया है

742. ''निराकार आकार नहीं'' ऐसा किसके लिये कह सकते हैं?
विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणु **2.** माया शक्ति

743. ''न सब्द सोहं आकास जी।।'' 'सोहम्' का वास्तविक अर्थ क्या होगा?
विकल्प 1. मैं ही सच्चिदानंद परब्रह्म हूं
2. कण कण में जो ब्रह्मसत्ता है, मैं भी वही हूं

744. ''भंग न कांई अभंग जी।।'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प **1.** स्वाप्निक चेतना शक्ति को ना भंग कहा जा सकता है ना अभंग
2. अचेतन सूक्ष्म परमाणु अभंग/अविनाशी हैं

745. ''एणें ठेकांणें बेठी अछती, बांधी ने हथियार जी।'' में 'एणे ठेकाणे' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1.शून्य मण्डल में माया की शक्ति विराजमान है
2. हद–बेहद के बीच में माया/नींद (शून्य) की शक्ति विराजमान है

746. महाशून्य व महामाया (कालमाया) अलग अलग हैं ?
विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

747. ''आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख। अंग न इन्द्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख।।'' कि. 27/5 में किसका वर्णन चल रहा है?
विकल्प 1. महाशून्य रूप अचेतन सूक्ष्म परमाणु का **2.** माया शक्ति का

748. ''निराकार आकार नही'' ''अजवास न कांई अंधार'' ''नहीं गुन निरगुन'' ''इहां रूप न रंग नहीं'' आदि गुण किसके हो सकते हैं?
विकल्प **1.** माया/स्वाप्निक चेतना शक्ति के
2.अचेतन सूक्ष्म परमाणु के

749. ''नारी है पर नाहीं आकार।। कि. 27/8'' में निराकार किसे कहा जा रहा है?
विकल्प **1.** माया शक्ति को 2. अचेतन सूक्ष्म परमाणु रूप महाशून्य को

750. 'खेल ऐसे अनेक रचे, नार निरंजन राए'' से क्या आशय है?
विकल्प **1.** माया की शक्ति अनेक ब्रह्माण्डों की रचना करती है
2. अचेतन सूक्ष्म परमाणु रूप माया संसार की रचना करती है

751. ''ए बल जोजो बलवंती नूं , एहनो कोई न काढे पार जी।'' में किसे पार करने की बात है?

विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणुओं रूपी शून्य को पार करने की

2. माया शक्ति/ब्रह्मसत्ता से आगे का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सके

752. ''एहनो बोली मारे प्रताप जी। आ पांचो एहनी छाया पड़ी छे'' में किसे किसकी छाया कहा जा रहा है?

विकल्प 1. पाचों तत्व को शून्य रूप अचेतन सूक्ष्म परमाणुओं की

2. दृश्यमान जगत् को माया शक्ति की

प्रकरण 70

753. ''हवे वासना हसे जे वेहदनी, ते जागीने जोसे निरधार।'' के अनुसार बेहद की वासना क्या करेगी?

विकल्प **1.** सत्य–असत्य का विचार करके सत्य ग्रहण करेगी

2. किसी की बातों को बिना विचारे देखादेखी विश्वास करेगी

754. ''एहमां वासना पांचे प्रगट थई ,रची रामत देखाडी रूडी पेर।'' पंच वासनायें दुनिया में किसलिये आयी हैं?

विकल्प **1.** प्रमाण देकर सत्य की पहचान कराने

2. माया का खेल दिखाने के लिये

755. ''जावूं अछर ने पार।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. सत्स्वरूप से परे अक्षरधाम

2. अक्षरधाम से परे अक्षरातीत के रंगमहल

756. छठे दिन की लीला में वास्तविक सद्गुरू कौन है?

विकल्प 1. अपने अपने सभी गुरू **2.** तारतम ब्रह्मवाणी

757. ''जो माहें निरमल बाहेर दे ना देखाई'' के अनुसार सच्चे सद्गुरू की पहचान क्या है?

विकल्प 1. आकर्षक वेशभूषा, प्रसिद्धि, भीड़ वक्तृत्व कला होनी चाहिये

2. हृदय से निर्मल, ब्रह्मज्ञानी, ध्यानी होकर भी, बाहर स्वयं को प्रदर्शित करने का प्रयास, दिखावा ना करे

758. ''हवे एणे चरणें तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह।'' छठे दिन की लीला में पूर्ण सुख किस सद्गुरू के द्वारा मिल सकता है?

विकल्प **1.** ब्रह्मवाणी के द्वारा 2. अपने अपने सभी गुरू के द्वारा

759. ''तमें गिनान तणो अजवास लईने, उपलो टालो छो अंधेर।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. शुष्क ज्ञान लिया लेकिन रहनी में नहीं आये

2. वैराग्य विरह पूर्वक ज्ञान को ग्रहण नहीं किया

760. ''निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए जांहें।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जहां मूल मिलावे में हम धणी के चरणों में विराजमान हैं, वहां जागृत हो जायेंगे

2. आत्मा के धाम हृदय में युगल स्वरूप की छबि बस जाती है

<u>प्रकरण 71</u>

761. ''हद पार बेहद है, बेहद पार अक्षर। अक्षर पार वतन है'' में ''अक्षर पार वतन'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. बेहद मण्डल से परे परमधाम **2.** अक्षरधाम से परे रंगमहल

762.''जाकी असल चौथे आसमान''में 'चौथे आसमान' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. परमधाम **2.** रंगमहल

763. ''इनों काम हाल सब नूर के'' में 'हाल' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** आत्मिक स्थिति 2. रहनी–आचरण

764. ''इनों काम हाल सब नूर के'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प 1. इनका कार्य व्यवहार पूर्णतः स्वच्छ और पारदर्शी होता है

2. उनकी रहनी और आत्मिक स्थिति ज्ञान, विश्वास व प्रेम से परिपूर्ण होती है

765.''लोक जिमी आसमान के, साफ जो करसी सब।'' कैसे साफ करेंगे?

विकल्प 1. कृपा दृष्टि से **2.** तारतम ज्ञान प्रदान करके

766. ''गिरो उठाई अदल से, वास्ते पैगंमरों।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. न्याय लीला से पूर्व ब्रह्मात्माओं को मूल मिलावे में उठा दिया जायेगा **2.** दुनिया के दूसरे न्याय से पूर्व ब्रह्मात्माओं को (जागृत बुद्धि व जोश प्रदान करके) जागृत कर दिया जायेगा

767. ''देवें ग्वाही आखिर को, ऊपर मुनकरों।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** मोमिन न्याय के दिन, मुनकरों के विरूद्ध, पैगम्बर के पक्ष में गवाही देंगे 2. मुनकरों के विरूद्ध पैगम्बर गवाही देंगे

768. ''करें इमारत भिस्त की, कोसिस सिफत कामिल।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. ब्रह्ममुनि न्याय के दिन जीवों की प्रशंसा करके बहिश्तें दिलवायेंगे

2. ब्रह्ममुनि जीवों को ब्रह्मज्ञान प्रदान करके बहिश्ते दिलवाएंगे

769. ''देवें खुसखबरी खुदा तिनको, जिनके नेक अमल।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** उत्तम रहनी वाले मोमिनों को खुदा अखण्ड सुखों की शुभ सूचना देते हैं 2. उत्तम रहनी वाले जीवों को खुदा मुक्ति स्थानों की शुभ सूचना देते हैं

770. प्रथम न्याय की लीला क्या है?

विकल्प **1.** तारतम ज्ञान के द्वारा धर्मग्रंथों के रहस्य स्पष्ट करना

2. सबको अखण्ड मोक्ष प्रदान करना

771. दूसरा न्याय सबके कर्मों का किस प्रकार होगा?

विकल्प 1. एक के बाद एक गवाही व सबूतों के आधार पर खुदा के द्वारा प्रकट रूप से

2. जोश की शक्ति से सबके कर्म उनके चेहरों पर झलकने लगेंगे

772. ''अकलें भई लोक में, सब होवें एक दीन'' ये कौन से दिन की लीला है?

विकल्प **1.** छठवे दिन के अंतिम समय की 2. सातवें दिन की

773. ''बनी असराईल जिकरिया...''में 'बनी असराईल' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. इब्राहिम के पुत्र असराईल

2. इब्राहिम के पौत्र, याकुब/असराईल के वंशज यहूदी (हिन्दू)

774. ''एक गाजी बनी असराईल नें, लोहा बांधा महिने हजार।'' के अनुसार श्रीदेवचंद्रजी को क्या कहा गया है?

विकल्प 1. असराईल/याकूब 2. इब्राहिम

3. बनी असराईल (हिन्दूओं में आये ब्रह्ममुनियों) का एक योद्धा को कहा गया है, जो समस्त गाजियों (ब्रह्ममुनियों) की सरदार (मुखियां) हैं

775. ''गिरो बनी असराईल'' के अनुसार निम्न में से क्या सत्य है?
विकल्प 1. इब्राहिम देवचंद्रजी को और असराईल प्राणनाथजी को व बनी असराईल सुंदरसाथ जी **2.** हिन्दूओं में आये सुंदरसाथ को बनी असराईल व देवचंद्रजी को बनी असराईल का एक योद्धा कहा है

776. ''गिरे भुने मुरग आसमान से'' का बातिनी अर्थ क्या है?
विकल्प **1.** तारतम ब्रह्मवाणी 2. भोज्य पदार्थ

777. ''खुदा देवे साहेदी खुदाए की'' यहां किनकी बात चल रही है?
विकल्प **1.** मुहम्मद तीनों सूरतों क 2. मात्र हकी सूरत की

778. ''अलिफ लाम मीम'' का क्या अर्थ होता है?
विकल्प **1.** बशरी मलकी हकी सूरत 2. सत चित आनंद

779. ''भई चिन्हार महंमद मुसाफ'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** मुहम्मद तीनों सूरतों एवं कुर्आन के गूढ़ रहस्यों की पहचान हुयी
2. श्री प्राणनाथजी एवं तारतम वाणी की महिमा का पता चला

<u>प्रकरण 72</u>

780. ''बाईबिल में परमेश्वर की संतान किसे कहा गया है?
विकल्प **1.** ब्रह्मसृष्टि को 2. जीव सृष्टि को

781. मोमिनों के लिये दुनिया कैसी है?
विकल्प **1.** कैदखाना के समान 2. जन्नत के समान

782. ''जंजीरा मुसाफ की'' प्रकरण किसके तन से अवतरित हुआ था?
विकल्प 1. श्रीछत्रशालजी के **2.** महामति जी के

783. धर्मग्रंथों में ब्रह्मसृष्टि के लिये निम्न से कौन सा नाम प्रयोग नहीं किया गया है?
विकल्प 1. गुह्यः प्रजा **2.** हंस 3. परमहंस 4. परमेश्वर की संतान

<u>प्रकरण 73</u>

784. निराकार निरंजन शून्य काल आदि शब्द दुनिया वाले वास्तव में किसके लिये प्रयोग करते हैं?
विकल्प 1. ब्रह्म के लिये **2.** ब्रह्मसत्ता के लिये
3. अचेतन सूक्ष्म परमाणुओं के लिये

785. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प **1.** जीव चेतना शुद्ध अवस्था में परात्म भाव से चितवनि करता है, तो सुरता को वैसा ही अनुभव होता है 2. आत्मा चितवनि में जीव को छोड़कर परमधाम जाकर आनंद प्राप्त करती है

786. ''जो अनुभव होत है आतमा, सो नाहीं जीव को इत।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** जीव चेतना की शुद्ध अवस्था में चितवनि द्वारा प्राप्त आनंद का अनुभव जीव भाव की अवस्था में कम हो जाता है

2. आत्मा ध्यान में जो आनंद प्राप्त करती है, वापस आने पर दासी के समान जीव को थोड़ा सा दे देती है

787. ''रस परआतम पोहोंचाए'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. परआतम यहां के सुख–दुख से पूर्णतया परे है

2. जीव के सुख–दुःख का सारा अनुभव सुरता के माध्यम से परात्म तक पहुंचता है

788. ''परआतम के अंतस्करन, जेती बीतत बात। तेती इन आतम के करत अंग साख्यात।। किरं. 82/13'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. परात्म से ही सुख आत्मा में आता है फिर जीव में आता है

2. कार्य की प्रेरणा परात्म से आत्मा के स्वाप्निक तन/जीव के दिल में आती है

789. ''जो कछू पिंड ब्रह्मांड की, सब फना कही सास्त्रन।'' से क्या निष्कर्ष निकलता है?

विकल्प **1.** शरीर और संसार नश्वर है इसलिये इनमें परमात्मा नहीं हो सकता 2. शरीर और संसार तो नश्वर है किंतु शरीर के हृदय चक्र में ब्रह्म रहता है

790. ''केहेनी लीला अछरातीत की, जो परआतम के पार।।१३।।'' में 'लीला' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** परात्म से परे दिव्य परमधाम में होने वाली लीला व स्वरूप

2. परात्म से परे मात्र श्रीराजजी का स्वरूप

791. ''आतम रोग मिटावने, ए सुख कहों मांहें सब्द।'' में आत्म रोग से

क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. श्रीराजजी की चाहत **2.** आत्म विस्मृति

792. ''साथ मेरा ब्रह्मसृष्ट का, तिन हिरदे साफ करन।'' में किसका हृदय साफ करने की बात कही जा रही है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसृष्टि के जीव का 2. ब्रह्मसृष्टि की सुरता का

793. ''जीव सृष्ट बैकुंठ लों'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. जीव चेतनाएं आदिनारायण के अंशरूप हैं

2. जीव चेतनाएं विष्णु भगवान के अंशरूप हैं

794. ''सृष्ट ईश्वरी अक्षर'' दूसरी बहिश्त में कौन अखण्ड होगा?

विकल्प **1.** ईश्वरी सृष्टि के जीव 2. अक्षर की सुरताएं

795: ''पर जीव सृष्ट क्यों पावहीं, जिनकी अकल है तुच्छ।।'' के अनुसार शास्त्रों में लिखी बातें दुनिया वाले क्यूं समझ नहीं पाये?

विकल्प 1. शास्त्रों में लिखा ज्ञान स्वप्न बुद्धि का है इसलिये

2. दुनिया वालों के पास स्वप्न बुद्धि थी इसलिये

796.''कलजुग असुराई मेट के,पार पोहोंचावसी त्रिगुन'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. सभी पापियों का वध करके

2. पाश्विक वृत्ति व अज्ञानता का नाश करके

797. ''कौल किया आखिर आवने, दीदार होसी सब जहान।।३४।।'' कुर्आन हदीसों के अनुसार ये कब की बात है?

विकल्प 1. इमाम महदी के रूप में आने की बात है

2. मैदाने हश्र में न्याय के सिंहासन पर विराजमान होने की बात है

798. 'आदम शफीउल्लाह' अर्थात् खुदा जैसी सूरत वाला पहला जीव से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** खुदा की सूरत है तब तो आदम की सूरत हुयी 2. खुदा बेचूं (शून्य, निरंजन), बेचगूं (निर्गुण), बेशबी (निराकार), बेनिमून (उपमा से रहित) है

799. ''तुम रब से कलाम करोगे और बेहिज़ाब दीदार भी करोगे।'' हदीस से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** अल्लाह शुद्ध साकार (किशोर) स्वरूप है 2.अल्लाह निराकार है

800. उत्पत्ति 5/1:– ''आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने

मनुष्य की सृष्टि की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** परमेश्वर दिव्य किशोर स्वरूप वाला है
2. परमात्मा का स्वरूप निराकार है

801. ''लिख्या है फुरमान में, खुदा काजी होसी आखिर।'' खुदा सभी के कर्मों का न्याय किस प्रकार करेंगे?

विकल्प **1.** जोश की शक्ति के द्वारा 2. एक एक करके गवाहों के द्वारा

802. ''जरे जरे हिसाब लेय के'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. एक एक प्राणी का हिसाब लिया जायेगा
2. एक एक छोटे से छोटे कर्म का हिसाब लिया जायेगा

803. ''पोहोंचावे किसमत कर।'' का क्या अभिप्राय है?

विकल्प **1.** सबको जागृत बुद्धि प्रदान करके अखण्ड मुक्ति का सौभाग्य प्रदान करेंगे 2. सबको उनके कर्मों के अनुकूल बहिश्तों में अखण्ड करेंगे

804. ''सो समया सरतें सब लिखी, बीच अथर्वन। कहावें पढ़े महंमद के पर पावें ना आकीन बिन।'' में अथर्ववेद का बातिनी अर्थ क्या है?

विकल्प 1. अथर्ववेद **2.** कुर्आन पाक

805. अथर्ववेद/वेदों में जगत् के अंतिम समय में परब्रह्म और उनकी आत्माओं के प्रकटन की भविष्यवाणी लिखी है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

<u>प्रकरण 74</u>

806. ''त्रिगुन लेहेरी निरगुन की'' से क्या अर्थ है?

विकल्प 1. अचेतन सूक्ष्म परमाणुओं की लहरें तीन गुणों के रूप में
2.माया/स्वाप्निक चेतना शक्ति की लहरें तीन गुणों के रूप में

807. ''ऊपर तले मांहें बाहेर, गए कर कर खाली विचार।'' माहें बाहेर से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. पृथ्वी में और निराकार में **2.** शरीर के अंदर हृदय आदि चक्रों में एवं शरीर के बाहर संसार के कण–कण में

808. ''जीवें आतम अंधी करी, मिल अंतस्करन अंधेर।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. जीव चेतना ने ब्रह्मात्मा को अंधा कर दिया

2. आत्मा/शुद्ध चेतना इस शरीर, अंतःकरण, इंद्रियों से जुड़कर अज्ञान दशा को प्राप्त हो गयी

809. ''पुरुख प्रकृति यामें फिरें'' में पुरूष किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** जीव चेतना 2. आदिनारायण

810. ''देत काल परिकरमा इनकी, दोऊ तिमर तेज देखाए।'' में 'काल' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसत्ता 2. समय

811. ''गुन पख इन्द्री रोसन'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. तीनों गुण–सत, रज व तम व तीनों पक्ष–पुष्टि, मर्यादा, प्रवाह – सभी ज्ञान से प्रकाशित हो गये **2.** गुण सतोगुण हो गया, पक्ष–प्रवाह व मर्यादा से हटकर पुष्टि हो गया तथा इंद्रियां बहिर्मुखी से अंतर्मुखी हो गयीं

812. ''सास्त्रों आगूं यों कह्या, धनी ले आवसी जाग्रत बुध'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. अश्राफील फरिश्ता जागृत बुद्धि लेकर आयेगा
2. धणी जागृत बुद्धि लेकर आयेंगे

813. ''और सबे विध समझी, पर लग्या न कलेजे घा।।२१।।'' दिल में चोट नहीं लगने का क्या कारण है?

विकल्प 1. ज्ञान **2.** हुक्म

814. ''ए काल द्वैत को कोहै'' में 'द्वैत' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. जीव व प्रकृति का काल कौन है
2. ब्रह्म से भिन्न माया का काल कौन है

<u>प्रकरण 76</u>

815. ''निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।'' में 'निजनाम' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. तारतम मंत्र **2.** तारतम ब्रह्मज्ञान

816. ''मुक्त देसी ब्रह्माण्ड को, आए ब्रह्म आतम सत।।१।।'' ब्रह्मात्माएं दुनियां को किस प्रकार मुक्ति देंगी?

विकल्प 1. मात्र कृपा दृष्टि से **2.** ब्रह्मज्ञान के द्वारा

817. सारी दुनिया किस कारण मुक्ति प्राप्त नहीं कर पा रही थी?
विकल्प **1.** ब्रह्मज्ञान के अभाव में 2. तारतम मंत्र के अभाव में

818. ''नजर छोड़ो री झूठ सुपन, आए देखो सत वतन।।'' में क्या कहा जा रहा है?
विकल्प **1.** भौतिक सुखों की आशा–चाहना छोड़ो, वैराग्य से युक्त होकर परमधाम का ध्यान करो 2. सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए श्रीराजजी का ध्यान करो

819. ''सत धनी सों करों हांस, पीछे करो प्रेम विलास।'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प **1.** परमधाम के प्रेममयी लीलाओं की चितवनि ब्रह्मसृष्टि के लिये अतिआवश्यक है 2. परमधाम के प्रेममयी लीलाओं की चितवनि नहीं करेंगे तो भी चलेगा

820. ''सत बरनन कीजो एह, उपजे सत प्रेम सनेह।'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प 1. परमधाम की शोभा स्वरूप लीलाओं के पठन–वर्णन से कुछ लाभ नहीं होता **2.** परमधाम की शोभा, स्वरूप, लीलाओं के पठन–वर्णन से प्रेम उत्पन्न होता है (यदि वैराग्य हो तो)

821. ''सत साथ सों करो प्रीत, देखो सत घर की ए रीत।।'' में क्या कहा जा रहा है?
विकल्प **1.** स्वयं को परात्म स्वरूप में देखते हुए ध्यान में परमधाम के मूल स्वरूप सुंदरसाथ से प्रेम करो 2. यहां के सुंदरसाथ से प्रेम करो (यहां प्रेम नहीं सेवा करनी है, यहां सेवा ही प्रेम है)

822. ''रूत रंग रस नए नए, अलेखे सदा सुख कहे।''से क्या आशय है?
विकल्प 1. परमधाम में ऋतुएं अपने समय से आती जाती हैं
2. परमधाम में ऋतुएं इच्छानुसार आती जाती हैं

823. माया की आशा–तृष्णा कब समाप्त हो सकती है?
विकल्प **1.** परमधाम के सुख हमारे हृदय में बस जाने पर
2. तारतम मंत्र प्राप्त कर लेने पर

824. ''देखो झूठी फेर फेर मारे, सत सुख बिना कोई न उबारे।'' झूठी माया पुनः पुनः किस प्रकार दुःखी करती है?

विकल्प **1.** पुनः पुनः सांसारिक सुखों की आशा उत्पन्न करके
2. तन, धन, प्रतिष्ठा का नुकसान करके

<u>प्रकरण 77</u>

825. ''सुध न रही वृद्धि हान'' वास्तविक लाभ किसमें है?
विकल्प **1.** निःस्वार्थ सेवा, वाणी मंथन, चितवनि
2. निंदा चुगली मान प्रतिष्ठा में

826. ''मांहो मांहें कई प्रीत रीतसों, खेले हंसें रस रंग।''से क्या आशय है?
विकल्प 1. कई सुंदरसाथ आपस में हंसी मजाक निंदा चापलूसी करते रहते हैं
2. कई सुंदरसाथ एक दूसरे की निःस्वार्थ सेवा, ज्ञानचर्चा–चितवनि करते हुए आनंदपूर्वक रहते हैं

827. ''हम सैयों को पेहेचान पेड़ की'' यहां 'पेड़' शब्द से क्या आशय है?
विकल्प **1.** मूल स्वरूप 2. आवेश स्वरूप

828. ''नाहीं सनेह सुख साथ सों'' का क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. इन्हें सुंदरसाथ के प्रेम का सुख प्राप्त नहीं हो पाता है
2. उन्हें ना सुंदरसाथ से प्रेम होता है और ना ही उनकी सेवा में खुशी प्राप्त होती है

829. ''तो भी छूटे न दुख अगिन'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** असत्य आचरण, निंदा–चुगली, राग–द्वेष, दिखावा–चापलूसी नहीं छूटती 2. दुख रूपी अग्नि नहीं छूटती

830. ''जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंए कर।'' में ''आग' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. मायावी दुःख **2.** झूठी निंदा–चुगली–चापलूसी, छल–कपट के परिणाम स्वरूप प्राप्त दुःख

831. ''सामें पूर जो चढ़या होसी, सो केहेसी तिखाई मोह जल'' से क्या आशय है? किसके विपरीत चलने की बात कही जा रही है?
विकल्प **1.** भीड़, दिखावा, परम्परा, स्थानवाद, व्यक्तिवाद के
2. मात्र भौतिकवाद के

प्रकरण 78

832. विष्णु भगवान ने वैकुण्ठ लोक की रचना कब की थी?
विकल्प 1. सृष्टि के प्रारम्भ में
2. लक्ष्मी जी से विवाह के पश्चात् उन्हें प्रसन्न करने के लिये

833. अपने मुख से अपनी तारीफ करने व दिखावा करने से क्या हानि होती है?
विकल्प 1. मान प्रतिष्ठा मिलता है, कोई हानि नहीं है
2. मन की निर्मलता प्रभावित होती है

834. ''कहा कहूं कुकरम तिनके, जो माहें रेहे के खोवत।'' के अनुसार अपना जीवन किसमें गंवा रहे हैं?
विकल्प 1. सांसारिक कार्यों में
2. छल–कपट, झूठी निंदा–प्रशंसा, दिखावे में

835. ''कई दौड़त मुझ देखत'' वे किस प्रकार दौड़ लगा रहे थे, जिस कारण उन्हें सफलता नहीं मिली?
विकल्प **1.** दिखावे की श्रद्धा, भक्ति, निंदा–चुगली, चापलूसी द्वारा
2. सच्चे हृदय से सेवा, वाणी मंथन, चितवनि करते हुए

836. ''कैयों जनम सुफल किए, ऐसा पिउ का समया पाए'' उन्होंने अपना जीवन कैसे सफल किया?
विकल्प **1.** श्रीजी से ब्रह्मज्ञान चर्चा सुनकर, चितवनि करके, छल कपट निंदा चुगली से दूर रहकर
2. मात्र श्रीजी की सेवा करके, निंदा चुगली चापलूसी करके

837. ''कई छिपे रहे माहें दुस्मन'' वे किसके दुश्मन हैं?
विकल्प **1.** सत्य शांति व प्रेम के 2. श्रीजी व सुंदरसाथ के

838. ''चाल उलटी चल देखावहीं'' से क्या आशय है?
विकल्प 1. भौतिक सुखों में डूबे रहते हैं **2.** वाणी मंथन, सेवा, चितवनि की बजाय झूठी निंदा चुगली चापलूसी दिखावे में लगे रहते हैं

839. ''सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावे करनी माफक।।१३।।'' के अनुसार क्या सत्य है?
विकल्प 1. इस संसार में सभी सुंदरसाथ को समान शोभा, श्रीराजजी का

सुख प्राप्त होता है **2.** इस संसार में त्याग, सेवा–समर्पण, साधना के अनुसार ज्ञान, श्रीराजजी का सुख व शोभा प्राप्त होता है

840. ''जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छल को बल'' माया की शक्ति कौन बतायेगा?

विकल्प 1. जो दिखावा, झूठी प्रशंसा–निंदा करते हुए भीड़ के पीछे–पीछे चला जाएगा **2.** जो वैराग्य, वाणी मंथन, निःस्वार्थ सेवा, निष्कपट रहनी–साधना के सत्य मार्ग पर चलेगा

<u>प्रकरण 79</u>

841. ''ए बानी समया फजर, हुई तुमारे कारने'' ये सम्पूर्ण ब्रह्मवाणी दुनिया में किसके लिये आयी है?

विकल्प 1. जीवसृष्टि के लिये **2.** ब्रह्मसृष्टि के लिये

842. ''करे फैल पसु परवान।'' पशु के समान आचरण क्यूं कहा है?

विकल्प 1. चार पैर व पूंछ होने के कारण
2. मात्र खाने, सोने व बच्चा पैदा करने का लक्ष्य होने के कारण

843. ''और सृष्ट जो ईश्वरी, कही जाग्रत सृष्ट आतम।'' ईश्वरी सृष्टि को जागृत सृष्टि क्यूं कहा है?

विकल्प 1. क्यूंकि वे अक्षर ब्रह्म की सुरताएं हैं
2. क्यूंकि उनके अंदर ब्रह्मज्ञान होता है, वे अंधभक्ति नहीं करतीं

844. ''चले फुरमान हुकम।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ईश्वरी सृष्टि ब्रह्मवाणी के निर्देशानुसार आचरण करती है
2. ईश्वरी सृष्टि देखादेखी आचरण करती है

845. ''छोड़ मांहें बाहेर दृष्ट अंतर, परआतम धनी संग।।१२।।'' ब्रह्मात्माओं की दृष्टि कहां रहती है?

विकल्प 1. शरीर के हृदय चक्र में
2. परमधाम में स्वयं को परात्म स्वरूप में देखते हुए धणी के साथ

846. ''कृपा माफक करनी'' का सिद्धांत किस सृष्टि पर लागू होता है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसृष्टि 2. जीव सृष्टि

847. ''ए दोऊ माफक अंकूर के'' में 'दोऊ' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. कृपा और करनी

2. कृपा करनी माफक व कृपा माफक करनी

848. ''ए माफक कृपा करनी भई, करने खुसाली खेलि।'' कें अनुसार कृपा के अनुसार करनी किसे खुश करने के लिये हुयी है?

विकल्प **1.** ब्रह्मसृष्टि 2. जीव सृष्टि

849. ''करनी कर्म कछु ना रह्या'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** प्रियतम परब्रह्म की कृपा के कारण जीवसृष्टि को बहिश्तें मिलेंगी 2. प्रियतम परब्रह्म की कृपा के कारण जीवसृष्टि की रहनी ब्रह्मसृष्टि जैसी हो जाएगी

850. ''सृष्ट ईश्वरी कही अंकूरी, औरों अंकूर दिए कई।'' में ईश्वरी सृष्टि द्वारा किसे अंकुर देने की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. अपने जीवों को **2.** अन्य जीवों को

851. ''सो तीनों रोसन भए, चढ़ते तराजू बखत।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** रहनी (वैराग्य, ज्ञान, विश्वास, प्रेम, सेवा) की कसौटी पर तीनों सृष्टियों की पहचान स्पष्ट हो जाएगी 2. बहिश्तों में अखण्ड होने के बाद तीनों सृष्टियों की पहचान स्पष्ट हो जायेगी

852. ''नफा नसल न नाते रीस।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. सुंदरसाथ के रिश्तेदारों को भी न्याय के दिन लाभ मिलेगा
2. अपने कर्मों का फल स्वयं ही भुगतना पड़ेगा

853. ''अव्वल मध और आखिर, सनमुख सदा हजूर।।'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** हम सृष्टि के आदि मध्य अंत सभी समयों में धणी के समक्ष मूल मिलावे में ही विराजमान रहे हैं 2. संसार में धणी हमारे समीप रहे हैं

854. ''सांच झूठ जैसा जिनों, चढ़ आया तराजू दिल'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. न्याय के तराजू में सच और झूठ साफ नजर आ जायेगा
2. न्याय के दिन धणी के जोश के द्वारा सबके दिल में स्थित अच्छे–बुरे कर्म उनके चेहरे पर प्रकट हो जायेंगे

855. ''कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनुभव सौ बेर।'' में 'अनुभव' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** चमत्कारिक रूप से श्रीराजजी का कोई अनुभव

2. ज्ञान का अनुभव

<u>प्रकरण 80</u>

856. ''मेरे मीठे बोले साथ जी'' में ''मीठे बोले'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** परिक्रमा सागर सिनगार की वाणी से

2. मीठी मीठी बातें करने से

857. ''प्रेमैं में मगन होइयो'' किसमें मग्न होने कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** प्रेममयी स्वरूप व लीलाओं के चिंतन–ध्यान में

2. श्रीराजजी के किसी भी अंग में एक बिंदू के ध्यान में

858. ''खुल्या दरवाजा धाम।'' परमधाम की वाणी से कौन सा दरवाजा खुल गया?

विकल्प 1. सर्वरस सागर का दरवाजा खुल गया

2. परमधाम के अखण्ड सुखों का दरवाजा खुल गया

859. ''दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर'' किस क्षेत्र में दौड़ लगाना है?

विकल्प **1.** परिक्रमा, सागर, सिनगार की वाणी पठन, सेवा और चितवनि तीनों क्षेत्र में

2. मात्र चितवनि करना है

860. ''बन विसेखे देखिए, माहें खेलन के कई ठाम।'' में क्या निर्देश है?

विकल्प **1.** पूरे परमधाम में होने वाली प्रेममयी लीलाओं का ध्यान करना है

2. मात्र मूल मिलावे का ध्यान करना है

861. ''मन के मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास।।'' कौन से मनोरथ पूर्ण करना है?

विकल्प 1. मात्र श्रीराजजी के दर्शन का

2. श्रीराजजी के दर्शन, उनके साथ प्रेम भरी बातें व प्रेममयी लीलाओं का

862. ''आनंद वतनी आइयो, लीजो उमंग कर।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** वाणी में परमधाम का आनंद आ गया, उसे ग्रहण कीजिये

2. परमधाम का आनंद दिल में आ गया, उसे ग्रहण कीजिये

863. ''''हक सुराही बका खिल्वत में, ए इलम पिलावे सराब।।'' से क्या सिद्ध होता है?

विकल्प 1. वाणी शुष्क ज्ञान मात्र है, ज्यादा पढ़ने की आवश्यकता नहीं है

2. वाणी पढ़ने से धणी/परमधाम का प्रेम आनंद प्राप्त होता है

864. ''दरदी विरहा के भीगल, जानों दूर थें आए विदेसी।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. परमधाम का ध्यान करते रहने से विरह नहीं होता है, घर जाने की जल्दी नहीं होती है

2. परमधाम के ध्यान करते रहने से विरह बढ़ते जाता है, परमधाम में शीघ्र जागने की इच्छा होती है

865. ''घर उठ बैठे पल में, रामत देखाई ऐसी।।१३।।'' चौपाई में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** धणी के ताली बजाते ही एक ही पल में सभी सखियां मूल मिलावे में जागृत हो जायेंगी

2. चितवनि में ऐसा लगता है कि हम परमधाम में ही बैठे हैं

866. ''उठ के नहाइए जमुना जी, कीजे सकल सिनगार।'' में कहां की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. चितवनि की **2.** परमधाम में जाग्रत होने के बाद की लीला की

867. ''विलास करो विध विध के, जागो अपने तन।'' में कहां की बात कही जा रही है?

विकल्प **1.** परमधाम में शीघ्र जागृत होने के लिये प्रेरित किया जा रहा है

2. चितवनि में जागने कहा जा रहा

<u>प्रकरण 81</u>

868. ''सो धनिएं बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन।'' धणी ने हमें कौन सी शक्ति प्रदान की, जिससे हमने सारी दुनिया को भव से पार कर दिया?

विकल्प **1.** तारतम ज्ञान, जागृत बुद्धि, जोश, हुक्म 2. मात्र तारतम ज्ञान

869. ''सबके हक हमको किए'' ''तुमें खुदा कर पूजसी'' ''तिन सब के खुदा तुमको किए'' के अनुसार सारी दुनिया किसे पूजेगी?

विकल्प 1. हमारे जीवों को **2.** हमें

870. ''सब तले तुमारे इजन।। सिन. 27/127'' बहिश्तों में सारी दुनिया किसके आधीन रहेगी?

विकल्प **1.** ब्रह्मसृष्टि के 2. ब्रह्मसृष्टि के जीवों के

871. ''लीला तीनों थिर होएसी'' से क्या आशय है?
विकल्प **1.** अक्षरब्रह्म के हृदय में जागनी लीला भी अखण्ड होगी
2. अक्षरब्रह्म के हृदय में जागनी लीला के जीव मात्र अखण्ड होंगे

872. ''ऐसी बड़ाई दई हम गिरो को, और किए औरों के अधीन।'' ब्रह्मसृष्टि को किसके आधीन कर दिया?
विकल्प 1. आदिनारायण के **2.** स्वाप्निक चेतना शक्ति के

873. ''चौदे भवन को दिया आकीन, सो भी कहे गिरो बल दिया।'' किस प्रकार दुनिया वालों को विश्वास दिया?
विकल्प **1.** उन्हें जागृत बुद्धि प्रदान करके
2. चमत्कार दिखाकर

874. ''ऐसे इंड में चींटी बराबर, हम गिरो हुई उद्योत।'' में चींटी बराबर' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** अल्प सामर्थ्य में 2. अल्प संख्या में

875. ''एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** विरह में तन से चेतना निकल जाये
2. विरह में तन से सुरता निकल जाये

<u>प्रकरण 82</u>

876. ''ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी बीतक।'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प 1. धणी मात्र सेवा या ध्यान की योग्यता के कारण प्राप्त होते हैं
2. धणी का सुख सांसारिक योग्यता के अहंकार से नहीं प्राप्त होता बल्कि निसबत के कारण धणी की मेहर से प्राप्त होता है

877. ''और मेहेर ए देखियो, कर दियो धाम वतन।'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. उन्होंने दिव्य परमधाम को हमारा घर बना दिया
2. दिव्य परमधाम के हमारे निजघर होने का ज्ञान करा दिया

878. ''तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात।।१३।।''से क्या आशय है?
विकल्प 1. जैसी प्रेरणा परआतम से आती है, वैसा आत्मा का तन करता है, जीव का तन या पंचभौतिक तन नहीं **2.** जैसी प्रेरणा परआतम से आती है, वैसा हमारा स्वाप्निक तन कार्य करता है

879. ''तन असल तले कदम के, और उपज्या तन सुपना।''''दोऊ तन

तले कदम के, आतम परआतम।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प **1.** परात्म के स्वाप्निक तन/दिल को ही आत्मा का तन/दिल कहा गया है 2. पंचभौतिक तन, जीव का तन व आत्मा का तन– सब अलग अलग होता है

880. ''बिन कसनी बिन भजन, दियो धाम धनी खसम।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. बिना कसनी व बिना भजन के धाम धणी प्राप्त करा दिया

2. तारतम ज्ञान से हमारे निजस्वरूप, निजघर व शाश्वत धाम धणी की पहचान करा दिया

881. ''ना जप तप ना ध्यान कछू , ना जोगारंभ कष्ट।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. कोई जप, तप, ध्यान नहीं करना है, भौतिक सुखों का सेवन करते हुए दिखावे की भक्ति करते रहना है

2. तामसिक तप नहीं करना है, ज्ञान व वैराग्य सहित वाणी मंथन, त्याग–संयम, स्मरण–ध्यान आदि साधना करना है

882. ''सो देखाई बृज रास में, एही वतन चाल ब्रह्मसृष्ट।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. कृष्ण के भजन गाना है **2.** प्रत्येक कार्य करते हुए श्रीराजजी की ही कामना व ध्यान होना चाहिए

883. ''चलत चाल घर अपने, होए न कसाला किन।'' वाणी मंथन, त्याग–सेवा–संयम–ध्यान ब्रह्मसृष्टि के लिये कष्ट का विषय है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

884. ''सोई मिलना परआतम का, सब सुखै के सनेह।'' से क्या आशय है?'

विकल्प 1. धणी के प्रेम में खो जाने पर सुरता (आत्मा) अपने मूल तन परात्म से मिलती है **2.** किस प्रकार हम (हमारी परात्म) धणी से प्रेमपूर्वक मिलते हैं हम सखियों में आपस में कैसा सनेह है

<u>प्रकरण 83</u>

885. ''अखंड में याद देने, ए जो बैन बजायो।'' यहां बांसुरी बजाने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ब्रह्मवाणी रूपी बांसुरी 2. रास लीला वाली बांसुरी

886. ''चित दे साथ को ले, आप में समायो।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** सभी सुंदरसाथजी को जागृत करके अपने प्रेमानंद (निजस्वरूप, धाम व लीला के आनंद) में डूबा दिया है
2. उन्हें अपने दिल में समाहित कर लिया

887. यह जागनी लीला अक्षर व सखियों के दिल में किस प्रकार याद रहेगी?

विकल्प **1.** जब खेल का अंत सुखद हो, सभी को जागृत बुद्धि, ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जाये
2. योगमाया में अखण्ड होने के बाद सबको जागृत बुद्धि मिलेगी

888. ''पिउ ने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर।'' के अनुसार कौन सा अवसर आ गया है?

विकल्प **1.** समस्त धर्मग्रंथों में जो वर्णन किया था, आखिरत का वह अनमोल अवसर 2. धणी ने कहा था कि माया में जाकर तुम सभी मुझे भूल जाओगे, वह अवसर

889. ''चेहेन चरित्र चातुरी, बृज रास की लई।'' ब्रज लीला की कौन सी रहनी लेने का हमें निर्देश दिया जा रहा है?

विकल्प 1. कृष्ण के भजन गाना व 16 श्रृंगार सजकर भोग लगाना
2. प्रत्येक कार्य करते हुए प्रियतम का ही स्मरण करना, एकमात्र प्रियतम की ही चाहना–प्रेम दिल में होना

890. 'रास लीला से हमें कौन सी रहनी लेना है?

विकल्प 1. रास की रामतें, गरबा व डांडिया खेलना
2. ब्रह्मवाणी रूपी बांसुरी की आवाज सुनकर माया को छोड़कर धणी के चरणों में आ जाना, वाणी मंथन, सेवा, चितवनि का आनंद लेना

891.''अनुभव असलू अंग में,आए चढ़ी धाम की सही।''से क्या आशय है?

विकल्प 1. हमारी आत्मा के हृदय में परमधाम की लीला का प्रतिबिम्ब दिखायी देने लगा **2.** हृदय में निजघर परमधाम का वास्तविक अनुभव ब्रह्मवाणी के चिंतन व ध्यान द्वारा प्राप्त किया

892. ''बढ़त बढ़त प्रीत, जाए लई धाम की रीत।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** संसार के आठों प्रहर में परमधाम के आठों प्रहर की लीला का ही चिंतन–ध्यान करना 2. मात्र मूल मिलावे का ध्यान करना

893. ''परआतम अन्तस्करन उपज्यो, खेले संग आधार।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जीव के द्वारा परात्म भाव से चितवनि करने पर (सुरता के माध्यम से) परात्म के अंतःकरण में ऐसा अनुभव होने लगा कि वह प्रियतम के साथ साक्षात् रमण कर रही है

2. हमारी परआतम के अंतःकरण में भी यह बात आ गयी कि धणी के साथ हमारी प्रेममयी लीला हो

894. ''कहा कहूं सुख इन विध, जो किए हाल हमारे।।'' में 'हाल' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** विरह प्रेम की स्थिति 2. रहनी

895. ''अन्तस्करन निसान आए, ले आतम को पोहोंचाए।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. परात्म के अंतःकरण में विराजमान युगल स्वरूप तथा परमधाम 25 पक्ष की शोभा मेरी आत्मा के अंदर आ गयी

2. हमारे (जीव के) अंतःकरण में परमधाम के सारे निशान (शोभा, स्वरूप, लीला) आ गये हैं। जो धाम धणी ने (इस स्वाप्निक तन के माध्यम से) आत्मा (सुरता के माध्यम से परात्म) को प्रदान किये हैं

896. ''बन जमुना हिरदे चढ़ आए, इन विध हुए हजूर।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. इस प्रकार युगल स्वरूप का भी दीदार हो गया

2. इस प्रकार हम धाम धणी के चरणों में मूल मिलावे में जागृत हुए

897. ''उठ बैठे मांहें धाम, हंस पूछे कुसल खेम।।१४।।'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** अंततः हम सब सखियां परमधाम मूल मिलावे में अपने मूल तनों मे जागृत होंगी तथा हंसते हुए आपस में एक दूसरे से कुशल–क्षेम पूछेंगी

2. हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हम परमधाम में अपने मूल तनों में जागृत हो गये हैं और हंसते हुए एक दूसरे से हाल चाल पूछ रहे हैं

<u>प्रकरण 84</u>

898: ''धंन धंन सखी मेरे सोई रे दिन, जिन दिन पिया जी सो हुओ रे

मिलन।'' प्रकरण के अनुसार किससे मिलन की बात है?

विकल्प 1. सद्गुरू से **2.** मूल स्वरूप से

899. ''धंन धंन धनी चित चुभायो अन्दर।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. एक बार देखकर भूल जाना **2.** चित्त में बस जाना

900. ''धंन धंन धनिऐं मोकों करी अंगीकार।।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. धणी ने मुझे स्वीकार किया है

2. धणी ने मुझे अपनी बांहों में लेकर, अपने अंगों से स्पर्श किया

901. ''धंन धंन विलसी मैं पिउसो आयत'' में 'आयत' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** प्रेममयी लीलाएं 2. मात्र दर्शन

902. ''धंन धंन सखी मैं किए स्याम संग'' में 'स्याम' शब्द से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. श्रीकृष्ण **2.** कंचनवर्ण आभा वाले किशोर स्वरूप श्रीराजजी

903. ''धंन धंन सखी मोको कहे दिल के सुकन'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** प्रेम का इजहार 2. ज्ञान की बातें

904. ''धंन धंन मनोरथ किए पूरन'' में कौन से मनोरथ की बात है?

विकल्प **1.** प्रेम की इच्छा 2. सांसारिक इच्छा

905. ''धंन धंन सखी मैं भई सोहागिन'' के अनुसार किस प्रकार सुहागिन हो गये?

विकल्प 1. मात्र तारतम लेने से **2.** धणी के प्रेम का सुख प्राप्त करने से

906. ''धंन धंन सखियां करे लटकती चाल।।'' सखियां क्यूं ऐसी चाल चलती हैं?

विकल्प **1.** श्रीराजजी को आकर्षित/मोहित करने के लिये

2. कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता

<u>प्रकरण 85</u>

907. ''जाग्रत सब्द धनीय के, ततखिन करें मकसूद।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. वाणी शुष्क ज्ञान है, गुड़ गुड़ कहने से मुख मीठा नहीं होता

2. वैराग्य–त्याग से युक्त होकर वाणी पढ़ने से वह तुरंत लक्ष्य की

प्राप्ति कराती है

908. ''जब केहेनी आई अंग में, तब फैल को नाहीं बेर।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. ज्ञान तो प्राप्त कर लेते हैं किंतु आचरण में नहीं आते

2. सहीं में ज्ञान होने पर आचरण अवश्य बदलता है

909. ''कई किताबें या बानियां, कही मैं साथ कारन।'' यहां कौन सी वाणी की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. धर्मग्रंथों की **2.** तारतम वाणी के 14 किताबों की

910. ''तो तबहीं जाग के बैठिए, उड़ जाए सुपन सुरत।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** तुरंत (शीघ्र) ही मूल मिलावे में जागृत हो जायेंगे, स्वप्न में आयी परात्म की सुरता वापस लौट जायेगी

2. आपकी सुरता ध्यान में परमधाम में विचरण करने लगेगी

911. ''जागे सुपना क्यों रहे, पर हुआ हाथ इजन।।'' ज्ञान और परमधाम का कुछ आनंद प्राप्त होने पर भी स्वप्न क्यूं बना हुआ है? क्या कमी है?

विकल्प 1. वाणी का दोष है, वाणी से मात्र ज्ञान होता है, जो प्रेम में बाधक है **2.** हुकम के कारण ऐसा हो रहा है

912. ''जाग्रत वचन अनुभवें, अखंड घर वतन।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. वाणी से मात्र ज्ञान प्राप्त होता है

2. वाणी पठन से परमधाम का अनुभव हो जाता है

913. ''जोस इस्क दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेसक।।१४।।'' के अनुसार हम अपने मूल तन में शीघ्र क्यूं जागृत नहीं हो पा रहे हैं?

विकल्प 1. वाणी/ज्ञान के कारण **2.** जोश व इश्क की कमी के कारण

914. ''दुख ना दीजे देह को, सुखे छोड़िए सरीर'' में क्या निर्देश दिया जा रहा है?

विकल्प 1. भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए आनंदपूर्वक परमधाम चलना है, जरा भी संयम का कष्ट नहीं उठाना है

2. शरीर को अनावश्यक/तामसिक तप से दुःख नहीं देना है, संयमित साधनामय जीवन के द्वारा धणी का सुख प्राप्त करे हुए देह त्याग करना है

915. ''ए सिध इन विध होवहीं, जो जोस इस्क करे भीर'' यहां 'जोस

इस्क' से क्या आशय है?

विकल्प 1. इश्क का जोश **2.** धणी का जोश व इश्क

916. 'तामस राजस स्वांतस, चलें माहें गुन तीन'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. सुंदरसाथ तीन गुणों के अनुसार सांसारिक व्यवहार करते हैं

2. सुंदरसाथ तीन गुणों के अनुसार साधना–भक्ति करते हैं

<u>प्रकरण 86</u>

917. ''दौड़ मिलिए धनी निज घर'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** परमधाम का चिंतन–ध्यान करते हुए परमधाम में शीघ्र जागृत होने के लिये प्रयास कीजिये

2. चितवनि में प्रियतम से मिलन का प्रयास कीजिये

918. ''किन ज्यादा किन कम लिए,किन कर डारे रद।''का क्या भाव है?

विकल्प **1.** किसी ने ज्ञान को, किसी ने सेवा को, किसी ने चितवनि को अनावश्यक मान लिया

2. ज्यादा ज्ञान, सेवा, चितवनि की जरूरत नहीं होती है

919. ''न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन।।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** श्रीमुखवाणी में परमधाम की शक्ति है

2. वाणी तो शुष्क ज्ञान मात्र है

920. ''सांच आगे न रहे अनित। एह बल हुकम के, देह सुपन रही इत'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. ज्ञान/वाणी के कारण स्वप्न देह बना हुआ है, ज्ञान की पेटी में ताला लगा दो **2.** ज्ञान/अनुभव होने पर भी हुक्म के कारण स्वप्न देह बना हुआ है

921. ''अब भली बुरी इन दुनीय की, ए जिन लेओ चित ल्याए।'' किसी की झूठी/देखादेखी प्रशंसा या निंदा करने में कोई हानि नहीं है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

922. ''दुख सुख डारो आग में, ए जो झूठी माया के।'' से क्या सीख मिलती है?

विकल्प **1.** सुखों को पाने का और दुःखों से बचने का प्रयास नहीं करना है

2. सुखपूर्वक श्रीराजजी की भक्ति साधना करना है

923. 'कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन।'' से क्या सीख मिलती है?

विकल्प 1. असत्य ज्ञान को भी चुपचाप सहन करना चाहिए **2.** कोई कष्ट दे तो उसके प्रति सद्भाव रखते हुए बिना द्वेष के सहन करना चाहिए

924. ''हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन।।२०।।'' में 'हुक्म' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** धणी की इच्छा/आदेश 2. धणी का आवेश/जोश

<u>प्रकरण 87</u>

925. ''और सकुचे जीव देत'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** धणी की राह में अपना सम्पूर्ण जीवन (सर्वस्व) कुर्बान करने में संकोच करते हैं 2. जीव को न्यौछावर करने में संकोच करते हैं

926. ''इन विध कहे संसार में, धनी रंचक दिलासा दे'' में 'दिलासा' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. इशारा **2.** सांत्वना

927. ''तूं बल कर कछू अपना, चल राह तामसी सूर।'' ब्रज की तामसी स्वभाव वाली सखियों को योद्धा क्यूं कहा गया है?

विकल्प **1.** बांसूरी की आवाज सुनते ही पति बच्चे आदि सब छोड़कर निकल पड़ीं 2. आलस्य निद्रा प्रमाद आदि अवगुणों के कारण

928. ''एक धनी नजर में लेय के, उड़ाए दे सरीर।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. इस शरीर के अस्तित्व के भाव को बिल्कूल ही छोड़ दो

2. एकमात्र मूल स्वरूप श्रीराजजी, धाम व लीलाओं का चिंतन–ध्यान करते हुए इस झूठे शरीर का त्याग कर दो

929. ''अजूं न लगे तोकों धाम को, सांचो सनमंध संग।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** अभी भी तूझे परमधाम व प्रियतम अक्षरातीत के मूल संबंध एवं प्रेममयी लीलाओं में रस (आनंद) नहीं आता

2. तूझे अब तक परमधाम के अखण्ड संबंध की पहचान ही नहीं है

930. ''एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दे अरवाहे।।'से क्या आशय है?

विकल्प 1. अपने धाम हृदय में परमधाम को बसाकर धणी के प्रेम में अपनी

आत्मा को न्यौछावर कर दीजिये **2.** एकमात्र परमधाम की शोभा, स्वरूप व लीलाओं का स्मरण–ध्यान करते हुए इस झूठे शरीर का परित्याग कर दो

<u>प्रकरण 88</u>

931. ''सैयां हम धाम चले'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अब (वि. सं. 1751 में) मैं अपने पंचभौतिक तन की लीला का संवरण करने वाला हूं 2. अब (वि. सं. 1751 में) मेरी सुरता चितवनि में परमधाम की ओर चल रही है

932. ''तीज भई रात घड़ी चौद लों, उपरान्त चौथ भई जब। दोय घड़ी रात बाकी रही, समय अन्तर्धान को तब।। बीतक 7/20'' ये समय किस घटना का बताया जा रहा है?

विकल्प 1. महामति जी के ध्यान में बैठने का समय
2. दैहिक लीला संवरण कर समाधिष्ट होने का समय

933. ''बरस छेहत्तर में, कम दो मास दस दिन। देखा खेल यहां लों, फिरे तरफ वतन।। बी. 7/22'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** 75 वर्ष 9 मास 20 दिन तक मिहिरराजजी का जीवन काल रहा
2. मिहिरराजजी का जीवन काल अभी भी चालू है

934. श्रीजी के विरह में अनेकों सुंदरसाथ ने गलतफहमी में शरीर छोड़ दिया था (कि श्रीजी ने दैहिक लीला का संवरण कर लिया है, वे तो मात्र ध्यान में बैठे थे)?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

935. ''ता पीछे मंदिर मिने, पधराए मोमिन।। बी. 7/21'' क्या अखण्ड रूप से या सामान्य रूप से ध्यानस्थ योगी को हाथ लगाया जाता है?

विकल्प 1. हां लगा सकते हैं **2.** नहीं

936. श्री मारफत सागर ग्रंथ के अंत में मसौदा में लिखा है, ''आज हमारे हादी को बीच परदे के हुए दो महीने दस रोज हुए। ...पचहत्तर बरस और नव महीने और बीस रोज। इस फानी के बीच हम गिरो रबानी के वास्ते। कई कसाले सेहे सेहे गुजरान किया'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** उन्होंने अपने पंचभौतिक तन की लीला का संवरण कर लिया था 2. वे मात्र ध्यानस्थ हुए थे

937. ''तलफ तलफ जीव जाएसी, जिन जानों यामें सक'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** धणी को भूलकर भौतिक सुखों में लिप्त रहेंगे तो माया के दुःखों (बीमारी, बुढ़ापा आदि) में तड़प–तड़प कर उसका देह छूटेगा

2. हम चाहे जो भी करें, चाहे भौतिक सुखों में डूबें, धणी हर दुःख से रक्षा कर ही लेंगे

938. 'तुम जानोगे वह नेक है, पर जरा होसी जुलम'' के अनुसार थोड़ा मोह, थोड़ी चाहना रखने में कोई नुकसान नहीं है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

939. ''आए नजरों सुख अखंड। विरहा उपज्या धाम का, पीछे हो गई आग ब्रह्मांड'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. चितवनि के पश्चात् विरह समाप्त हो जाता है, परमधाम चलने की कोई जल्दी नहीं होती है **2.** परमधाम के सुखों का अनुभव होने के पश्चात् विरह बढ़ता जाता है

940. ''गुन अवगुन सबके माफ किए'' में 'गुण' शब्द से क्या आशय है?

विकल्प 1. सद्‌गुण भी झूठे हैं इसलिये

2. ज्ञान–ध्यान आदि सद्‌गुणों से अहंकार आया, उसे माफ किया

<u>प्रकरण 89</u>

941. ''चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम'' का क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. हे सुंदरसाथजी! ध्यान द्वारा परमधाम चलिये

2. हे सुंदरसाथजी! हम सब मिलकर अपने निजघर परमधाम वापस चलें (वह कार्य करें जिससे कि शीघ्र परमधाम में जागृत हो सकें)

942. ''इस्क के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद कई हांस'' इश्क में सारे अंग भीगे होने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. प्रेम में अपना अस्तित्व समाप्त कर देना **2.** हर पल उनके स्वरूप व उनकी प्रेममयी लीलाओं की यादों में खोये रहना

943. ''ऐही सुरत अब लीजो साथ जी'' इसके पिछली चौपाईयों के अनुसार इस चौपाई का क्या अभिप्राय निकलता है?

विकल्प 1. मात्र श्रीराजजी के स्वरूप की चितवनि करना है

2. श्रीराजश्यामजी के स्वरूप व प्रेममयी लीलाओं की चितवनि करना है

944. ''जागे पीछे दुख काहे को देखें'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. जागृत होने के पश्चात् जानबूझकर मायावी दुःखों को देखते रहने से क्या लाभ है **2.** जागृत होने पर वैराग्य उत्पन्न होने से हर पल संसार अग्नि के समान लगने लगता है

945. ''खेल में लाहा लेय के आपन, चलिए इत होए धंन धंन'' यहां 'चलिये' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. खेल का लाभ लेकर सुरता से चितवनि में परमधाम चलें **2.** धामधणी–निजघर को याद करते हुए अपने निजघर चलें (शीघ्र मूल तनों में जागृत हों)

946. 'चौदे लोक में झूठ विस्तरयो, तामें एक सांचे किए तुम।'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** चौदह लोकों में असत्य (बहुदेवपूजा, कर्मकाण्ड) फैला हुआ था, उनमें से एक मात्र आपने ही सत्यमार्ग (हकीकत, मारफत) का अनुसरण किया 2. चौदह लोकों के सभी प्राणी झूठे (प्रलयाधीन) हैं, जबकि धणी ने तुम्हें अखण्ड (सत्य) कहलाने की शोभा दी है

947. ''ज्यों ज्यों गरीबी लीजे साथ में ,त्यों त्यों धनी को पाइए मान।'' धणी हम पर किस प्रकार प्रसन्न होंगे?

विकल्प 1. दूसरे योग्य सुंदरसाथ की टांग खींचकर, छल–कपट करके स्वयं आगे होने पर **2.** निःस्वार्थ अहंकार रहित सेवा–समर्पण, वाणी मंथन व चितवनि से

948. सुंदरसाथ में आपसी प्रेम बढ़ाने का क्या उपाय है?

विकल्प **1.** न्याय, निष्पक्षता, सत्याचरण, अपनी गलती स्वीकार करना 2. मैं ही सत्य हूं क्योंकि मैं राजजी हूं, जो कह दिया वह ब्रह्मवाक्यं, झूठी निंदा–चुगली, झूठी प्रशंसा से प्रसन्न होना

<u>प्रकरण 90</u>

949. ''साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी आतम।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. निर्देश दिया जा रहा है कि अपनी आत्मा को धणी पर कुर्बान कर दो **2.** ब्रह्मात्माएं अपना तन मन जीवन

धणी की राह में कुर्बान कर रही हैं

950. ''वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. ऐसा कहा जा रहा है कि धणी पर नख से शिख तक कुर्बान कर दो **2.** उन सुंदरसाथ की ऐसी भावना है कि अपना सर्वस्व तन, मन, धन धाम धणी पर वार दूं

951. ''लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमिन।'' कुरबानी किस क्षेत्र में करनी है?

विकल्प **1.** सेवा साधना जागनी कार्य में

2. गुरू के वाणी विपरीत आदेश पालन में

952. ''करी कुरबानी तिन कारने, परीक्षा सबकी होए'' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** सबकी परीक्षा लेने व पहचान करने के उद्देश्य से ही कुर्बानी की शर्त रखी गयी है 2. मैंने (इंद्रावतीजी ने) कुर्बानी इसलिये की क्यूंकि परीक्षा सबकी होनी है

953. ''छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर।।१२।।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. अब इस जागनी लीला में ब्रह्मवाणी ने उन्हें जाहिर कर दिया

2. अब अपने वैराग्य, निःस्वार्थ सेवा–समर्पण, ज्ञान, विश्वास, प्रेम आदि के द्वारा वे सत्य ब्रह्ममुनि दुनिया के समक्ष जाहिर हो गये

954. ''आए गए छाया मिने, धनी छाया निरमल'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** अब धणी के प्रेम व अखण्ड सुखों की पवित्र–शांतिमयी छांव तले वे सुंदरसाथ आ गये हैं

2. धणी की शोभा का ध्यान हृदय को निर्मल करता है

955. ''मोमिन बल धनीय का, दुनी तरफ से नाहें।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.**ब्रह्मात्माओं की शक्ति, प्रियतम परब्रह्म के ज्ञान और ध्यान की होती है

2. ब्रह्मात्माओं की शक्ति, धन, पद, प्रतिष्ठा से संबंधित होती है

956. ''लड़कपने सुध न हुती, तो भी मोमिन मूल अंकूर। कोई कोई बात की रोसनी, लिए खड़े थे जहूर'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** तारतम ज्ञान प्राप्त होने से पहले निजस्वरूप, निजघर एवं प्रियतम

परब्रह्म की पहचान नहीं थी 2. अनजानेपन में मुझे सद्गुरू धणी श्रीदेवचंद्रजी के अंदर विराजमान युगल स्वरूप की पहचान नहीं थी

957. ''रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव सों प्रान।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** मैं अपने तन मन जीवन को कुर्बान करती हूं
2. मैं अपने जीव और प्राणों को भी उस दिशा पर न्योछावर करती हूं

<u>प्रकरण 91</u>

958. ''जो नकल हमारे की नकल, तिनका होए ए हाल।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. ब्रह्मसृष्टि की नकल ईश्वरी सृष्टि व ईश्वरी सृष्टि की नकल जीव सृष्टि **2.** हमारे परात्म की नकल हमारा स्वाप्निक तन है और उसके नकल स्वाप्निक जीवों के तन हैं

959. ''तो पीछे पाऊं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल।।'' ''जो आसिक अर्स अजीम के, तिन सिर नूरजमाल।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी की कृपादृष्टि एवं शक्ति हमारी सहायता के लिये पल पल हमारे साथ है
2. स्वयं श्रीराजजी महाराज सबके दिल में विराजमान हैं

960. ''जो आसिक असल अर्स की, सो क्यों सकुचे देते जिउ।'' 'जीव' कुर्बान करने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अपना तन–मन–जीवन सर्वस्व न्यौछावर कर देना
2. आत्मा द्वारा अपने जीव चेतना को कुर्बान कर देना

961. ''कुरबानी को सब अंग, हंस हंस दिल हरखत। पिउ पर फना होवने, सब अंगों नाचत।१०।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** धणी की राह में कुर्बान होने के लिये शरीर के सभी अंग उमंग–उत्साह से भरकर, प्रसन्नचित्त हो जाते हैं 2. वह प्रियतम के ध्यान में इतनी खो जाय कि उसे अपने शरीर की जरा भी सुध ना रहे

962. ''ना जीव अंग आसिक के, जीव पिउ अंग में जान।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. आशिक का जीव अपने दिल में नहीं होता है बल्कि अपने प्यारे

माशूक के दिल में होता है **2.** आशिक का जीव (चेतना), उसके तन में नहीं होता बल्कि प्रियतम के अंग (प्रियतम के दीदार, प्रेम भरी बातें, प्रेममयी लीलाओं) में स्थित जानों (इसी से उसकी जान में जान आती है)

963. ''डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए।।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प **1.** उसके जीवन की डोरी प्रियतम के हाथों में होती है, वे चाहे उसे जीवित रखे या उसकी जीवन लीला समाप्त करदें, जीवित रहने की उनकी स्वयं की कोई इच्छा नहीं होती **2.** उनके दिल में परमधाम जाने की कोई जल्दी नहीं होती, वर्षों तक संसार में रह सकते हैं

964. ''तो अंग आधा अरधांग, मासूक का आसिक।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. इस प्रकार आशिक रूह, माशूक श्रीराजजी के दिल की अर्धांगिनी कहलाती है **2.** इसीलिये आशिक आत्मा को प्रियतम अक्षरातीत का आधा अंग (आधा तन) कहा जाता है क्योंकि उनकी स्थिति दो जिस्म एक जान जैसी होती है

965. ''तो दोऊ तन एक भए, जो इस्क लाग्या हक'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** प्रियतम अक्षरातीत से प्रेम होने पर आशिक व माशूक का तन एक हो जाता है अर्थात् दो जिस्म एक जान होने से एक दूसरे के बिना जीवित नहीं रह पाते हैं 2. जब प्रियतम श्रीराजजी से इश्क हो जाता है, तो आशिक और माशूक का स्वरूप एक ही हो जाता है। आशिक का अस्तित्व समाप्त हो जाता है

966. ''सोई कहावत आसिक, जिन अंग जोस फुरत।'' में 'जोस' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** इश्क का जोश (आवेश) 2. इश्क का जोश (आवेश नहीं)

967. ''मासूक की नजर तले, आठों जाम आसिक।पिए अमीरस सनकूल'' आशिक रूह किस प्रकार से प्रेम का अमृत रस पान करती है?

विकल्प **1.** सुंदर स्वरूप, उनकी प्रेमभरी दृष्टि, प्रेम भरी बातों, प्रेम भरा स्पर्श, आलिंगन आदि प्रेममयी लीलाओं के माध्यम से

2. मात्र स्वरूप दर्शन करके

968. ''न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. आशिक को माशूक के प्रेम का ऐसा नशा चढ़ा रहता है, कि वह

एक पल के लिये भी माशूक को अपने से अलग नहीं समझता

2. माशूक आशिक के दिल से एक पल के लिये भी अलग नहीं होता, प्रेम की उस स्थिति में प्रियतम का स्वरूप, प्रियतम की प्रेम भरी बातें एवं उनके साथ बीते हुए पल (प्रेममयी लीलाएं) स्वतः ही याद आते रहते हैं।

969. ''इस्कें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** प्रियतम के प्रेम ने ऐसी स्थिति कर दी कि आशिक एवं माशूक दोनों के अंदर एक समान प्रेम व आनंद की स्थिति हो जाती है

2. स्वलीला अद्वैत परमधाम के अनन्य प्रेम ने ऐसी स्थिति ला दी है कि दोनों एक ही अद्वैत स्वरूप के आनन्द में मग्न हो गये हैं

970. ''इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. फिर भी यह कितने आश्चर्य की बात है कि मेरी आत्मा अभी भी इस तन को धारण किये खड़ी है **2.** आश्चर्य होता है कि यह तन अभी भी जीवित है (विरह में शरीर क्यूं नहीं छूट गया?)

<u>प्रकरण 92</u>

971. ''अब हम धाम चलत हैं'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. अब (वि.सं. 1751) में मेरी सुरता ध्यान में परमधाम जा रही है

2. अब (वि.सं. 1751) मैं अपने पंचभौतिक तन की लीला का संवरण करने जा रहा हूं

972. ''देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित रखे पिंड। छो.क.1/45'' में 'बिछोहा' शब्द से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. श्रीजी मात्र ध्यानस्थ हुए थे

2. महामति जी ने अपनी दैहिक लीला का संवरण कर लिया था

973. ''दरद न आया धनी का, <u>बिछुड़ते ना उड़ी अरवाहे</u>। बी. 8/10'' ''<u>चलना राज के पीछल</u>, किया अपना कुरबान।'' ''<u>बिछोहा धनी धाम सों</u>, जाको कछू नहीं पहिचान।। बीतक 9/2'' आदि चौपाईयों से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. श्रीजी मात्र ध्यानस्थ हुए थे

2. महामति जी ने अपनी दैहिक लीला का संवरण कर लिया था

974. वि. सं. 1751 से 1752 तक श्रीजी कई सुंदरसाथ व अन्य लोगों

से बात भी करते थे, इससे क्या पता चलता है?

विकल्प 1. श्रीजी अखण्ड ध्यान में बैठे थे

2. यह उनकी शक्ति से होने वाली दिव्य लीलाओं में से एक है, जैसे छत्रशाल जी के घोड़े को सहारा देने केन नदी चले गये थे किंतु उनका तन केन नदी नहीं गया था, उनकी शक्ति से ये सारी लीला हुयी थी

975. ''धनिएं देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. इस चौपाई में ध्यान कराया जा रहा है कि किस प्रकार हमारी सुरता चितवनि में कालमाया से योगमाया में अखण्ड ब्रज व रास में पहुंचती है

2. धामधणी ने हमारी हृदय दृष्टि के समक्ष स्वप्नवत् बृजमण्डल दिखाया, फिर हमारी सुरता को रास लीला की तरफ मोड़ दिया

976. ''जाग्रत बुध हिरदे आई, अब रहे ना सकें एक खिन।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** वाणी व ध्यान के माध्यम से परमधाम का जितना अनुभव होता जाता है, उतना ज्यादा हमारे अंदर विरह बढ़ता जाता है

2. परमधाम का अनुभव होने पर परमधाम चलने की कोई जल्दी नहीं होती, विरह नहीं होता

977. ''प्रेम उपज्या मूल का, सुपन रेहेना क्यों होए'' ''जागे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रहयो जाए'' चौपाईयों से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** दिव्य परमधाम का परात्म का असल प्रेम हमारे हृदय में उत्पन्न हो गया है, ऐसी स्थिति में स्वप्न संसार व स्वाप्निक तन किस प्रकार बना रह सकता है 2. धणी का प्रेम हमारे दिल में उत्पन्न हो गया है, अब देह का भान किस प्रकार रह सकता है

978. ''देख तैयारी साथ की, ओ समया रह्या न हाथ।'' में किसकी तैयारी की बात है?

विकल्प 1. चितवनि की **2.** धाम चलने की

979. ''<u>पीछला</u> साथ आए मिलसी, पर <u>अगले</u> करें उतावल।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** जो सुंदरसाथ पहले ही परमधाम के चिंतन–ध्यान में लग गये हैं, वे परमधाम में जागृत होने के लिये शीघ्रता दिखाते हैं 2. वे इस बात के

लिये उतावले हो रहे हैं कि कब हम परमधाम की चितवनि में डूब जायें

980. ''केताक साथ विचार नीका, सो जानें चलें सब मिल।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. वे सोचते हैं कि हम सब साथ मिलकर परमधाम के ध्यान में डूबें
2. वे सोचते हैं कि एक दूसरे को जागृत करते हुए सब साथ मिलकर एक साथ परमधाम चलें

981. ''ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोंहोंचे नाहें।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** स्वांतसी सखियों ने घर से निकलने में देरी कर दी थी, जिसके कारण वे रास लीला में सशरीर नहीं पहुंच सकी थी, उन्हें तड़प तड़प कर देहत्याग करना पड़ा था 2. नित्य वृंदावन जाते समय देह त्याग का कष्ट तामसी राजसी सभी सखियों को हुआ था

<u>प्रकरण 93</u>

982. ''अब हम चले धाम को, साथ अपना ले।''में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प 1. महामति जी सुंदरसाथ को लेकर वि. सं. 1751 में ध्यान में परमधाम गये थे **2.** वि. सं. 1751 में श्रीजी ने अपनी दैहिक लीला का संवरण कर लिया था, उनके साथ अनेकों सुंदरसाथ ने विरह में अपना देहत्याग कर दिया था।

983. ''सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार।'' में सावधान होने क्यूं कहा जा रहा है?

विकल्प 1. मैं परमधाम के ध्यान में बैठ रहा हूं इसलिये सावधान हो जाओ
2. मैं अपनी दैहिक लीला का संवरण करने जा रहा हूं इसलिये सावधान हो जाओ

984. ''सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** मेरी सुरता पहले ही इस मायावी जगत् के भौतिक सुखों से विरक्त होकर परमधाम के ध्यान में लग चूकी है, अब मैं दैहिक लीला का संवरण कर रहा हूं 2. हमने संसार से नाता तोड़ दिया है और अब अपनी सुरता को परमधाम में लगा रहे हैं

985. ''अब हम रह्यो न जावहीं,मूल मिलावे बिन'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** परमधाम के निरंतर चिंतन–ध्यान से तीव्र विरह उत्पन्न हो जाता है 2. ध्यान करते हुए संसार में अनंत काल तक रह सकते हैं, परमधाम जाने की कोई शीघ्रता नहीं होती है

986. ''हिरदे चढ़ चढ़ आवहीं, संसार लगत अगिन'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** निरंतर चिंतन–ध्यान के कारण परमधाम की शोभा, स्वरूप व लीलाएं दिल में बस गयी हैं

2. दिल में परमधाम का प्रतिबिम्ब है, वह दिखाई देने लगा है

987. ''सोई मेवा मिठाइयां, अलेखें अपार'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. परमधाम में भूख लगती है इसलिये मेवा मिठाई आरोगते हैं

2. परमधाम में प्रेम व आनंद के प्रकटीकरण के लिये लीलाएं होती हैं

988. ''सोई मिलावे साथ के, सोई बोलें मीठे वचन'' में 'मिलावे' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मूल मिलावा **2.** पूरा परमधाम, जहां श्रीराजजी से हमारा प्रेममयी मिलन व प्रेममयी लीलाएं होती हैं

989. ''सोई खेलना सोई हंसना, सोई रस रंग के मिलाप।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** परमधाम के प्रेममयी लीलाओं की चितवनि करना अतिआवश्यक है

2. परमधाम के प्रेममयी लीलाओं की चितवनि करना आवश्यक नहीं है

990. ''बराबर एकै भांत के, और कई विध के रस रंग।।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** सभी सखियों की सुंदरता एक समान है

2. सभी सखियों का चेहरा एक समान है

991. ''एक दूजे के चित्त पर, चाल चले माहों माहें।'' स्वलीला अद्वैत सिद्धांत के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. स्वलीला अद्वैत के अनुसार श्रीराजजी के अतिरिक्त किसी का अस्तित्व नहीं है **2.** एक वृक्ष के अंतर्गत जड़, तना, डालियां, फल–फूल पत्तों के समान सबका अस्तित्व है, उन सबके अंदरूनी संबंध (कनेक्शन) को दर्शाता है, स्वलीला अद्वैत।

992. ''बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे।'' चौपाई में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प 1. ध्यान में परमधाम का आनंद प्राप्त करके विरह समाप्त हो जाता है **2.** परमधाम के प्रेम आनंद का जरा भी अनुभव हो जाये तो विरह से शरीर छूट जाना चाहिए

<u>प्रकरण 94</u>

993. ''देखो बाहेर माहें अन्तर, लीजो सार को सार जो सार।'' के अनुसार हमें किसे ग्रहण करना है?

विकल्प 1. गुरू–गादीवाद **2.** ब्रह्मवाणी एवं मूल स्वरूप श्रीराजजी

994. ''धाम से ल्याई तारतम, करी ब्रह्मांड में रोसनाई'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. वाणी में परमधाम की प्रेममयी लीलाओं का वर्णन दुनिया के अनुसार कर दिया है, परमधाम में वैसा नहीं है

2. यह पांचों शक्तियों से अवतरित वाणी है, जो श्रीराजजी के दिल में स्थित इल्म के छठे सागर से अवतरित हुयी है

995. ''सो सुन्दरबाई धाम चलते, जाहेर कहे वचन।'' में 'धाम चलते' से क्या आशय है?

विकल्प 1. ध्यान में सुरता के परमधाम जाते समय **2.** देहत्याग करते समय

996. ''हरा हुल्ला सुपेत गुदरी, कहे रूह अल्ला के सोए।'' में हरे व श्वेत वस्त्र से क्रमशः क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** तारतम ज्ञान व जागृत बुद्धि 2. तारतम ज्ञान व बेशक इल्म

997. ''हदीसों भी यों कह्या, आखिर ईसा बुजरक। इमाम ज्यादा तिनसें, जिन सबों पोहोंचाए हक'' ''खेल में जामें दोए'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. श्रीदेवचंद्रजी (श्रीश्यामाजी) से ज्यादा महिमा इमाम महदी की है

2. इमाम महदी के रूप में भी श्री श्यामाजी की ही महिमा है, वह श्रीश्यामाजी का ही दूसरा तन है

998. ''दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राणनाथ'' में प्राणनाथ किसे कहा गया है?

विकल्प 1. मिहिरराजी/महामतिजी **2.** मूल स्वरूप श्रीराजजी

999. 'लैलतुलकद्र' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** महिमामयी रात्रि 2. अज्ञानता की रात्रि

1000. ''बिना दरद दौड़ावे दानाई, सो पड़े खाली मकान।'' उन्हें किस कारण ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता?

विकल्प **1.** वैराग्य, श्रीराजजी की तड़प के अभाव में

2. सद्गुरू ना मिलने के कारण

1001. ''इस्क नाहीं सरूप बिना, तो ए क्यों कहिए ईमान।'' के अनुसार इश्क क्यूं उत्पन्न नहीं हो पाता?

विकल्प 1. महामति जी के स्वरूप की पहचान के बिना

2. मूल स्वरूप की पहचान के बिना

1002. ''अन्तर मुस्किल पोहोंचना, रंग लाग्या उपला देख।।'' के अनुसार जाहिरी लोग कैसा आचरण करते हैं?

विकल्प **1.** वाणी मंथन करना (ब्रह्मज्ञान के गूढ़ रहस्यों को समझना) उनके लिये सम्भव नहीं होता, ऊपरी वेश भूषा, दिखावा, भीड़, वक्तृत्व कला, बड़े स्थान आदि के आधार पर सत्य–असत्य की पहचान करते हैं

2. सेवा स्वाध्याय साधना के आधार पर वे सत्य–असत्य की पहचान करते हैं

1003. ''मूल न लेवें माएना, लेत उपली देखा देख'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प 1. वाणी मंथन करके सत्य को ग्रहण करते हैं

2. धर्मग्रंथों व वाणी के मूल अर्थ को नहीं समझते, इसलिये देखादेखी प्रचलित अर्थ ग्रहण करते रहते हैं

1004. ''असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख'' में 'असल स्वरूप' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. महामतिजी **2.** मूल स्वरूप श्रीराजजी

1005. ''असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** पूर्व में श्रीराजजी के द्वारा धारण किये तनों व वर्तमान के प्रसिद्ध दिखावटी गुरूजनों की पूजा भक्ति करते हैं

2. गादी मूर्ति चित्र वृक्ष आदि की पूजा करते हैं

1006. ''बड़ी बड़ाई होएसी, पर उमराओं के आधीन'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** धर्म की बागडोर धनवान पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित गादीपतियों के हाथ में होगी 2. धर्मोपदेशकों महात्माओं के हाथ में होगी

1007. ''मैं डरता हों उनसे'' क्यूं डरते हैं?

विकल्प 1. जान से मार देंगे **2.** सत्यज्ञान के प्रचार प्रसार में, सुंदरसाथ की आत्मजागृति कार्य में बाधा डालेंगे

1008. ''जानों पेहेचान कबूं ना हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे।।''परमधाम की निस्बत पहचानने के बाद हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

विकल्प **1.** योग्य सुंदरसाथ को आगे करें, निःस्वार्थ सेवा करें 2. योग्यता ना होने पर भी प्रवक्ता बनने हेतु दूसरे योग्य सुंदरसाथ को पीछे खींचे, छल–कपट, झुठी चुगली–चापलूसी करके आगे बढ़ें

1009. ''यार सजा दे सकत हैं, पर सो मुझसे न होए।।२५।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** वे सुंदरसाथ मुझे दुःखी कर सकते हैं किंतु मैं उन्हें दुःखी नहीं कर सकता 2. धाम धणी की ओर से उन्हें अपने गुनाहों की सजा तो मिल सकती है, किंतु मुझे वह स्वीकार नहीं है

1010. ''ऐसा कोई ना मिल्या, जासों करों विख्यात'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प 1. ऐसा कोई ना मिला जो अत्यंत विनम्र हो **2.** ऐसा कोई भी सुंदरसाथ नहीं मिला, जिससे मैं अपनी व्यथा कह सकूं ?

1011. ''खैंच छोड़ सको सो छोड़ियो, ना तो आपे छूटे हुए दिन'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** खैंचमखैंच (झूठी निंदा–चुगली–चापलूसी, छल–कपट, ईर्ष्या– द्वेष) छोड़ सकते हो तो छोड़ दें, नहीं तो जब जीवन या संसार का अंत आयेगा, तब तो स्वतः छूट ही जायेगा 2. आप सभी आपसी खींचतान को पूर्णतया समाप्त कर दीजिये, नहीं तो श्रीमुखवाणी के ज्ञान का उजाला पाकर एक दिन अवश्य ही आपको खैंचाखैंच छोड़नी पड़ेगी

1012. ''जो कदी न छूटया रात में, तो फजर छूटसी फंद।।'' यहां 'फंद' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जागनी कार्य की जिम्मेदारी 2. माया का बंधन

1013. ''मोहे एही कसाला होत है, जब कोई देत साथ को दुख'' चौपाई

में सुंदरसाथ को किस प्रकार दुःखी करने की बात कही जा रही है?

विकल्प **1.** झूठी निंदा–चुगली–चापलूसी, गुटबाजी करे, व्यक्तिवाद–स्थानवाद, ईर्ष्या–द्वेष के द्वारा 2. मारपीटकर

1014. ''ए तो गत संसार की, जो खैंचा खैंच करत। आपन तो साथी धाम के, है हम में तो नूर मत।।३३।।'' से हमें क्या सिखापन मिलता है?

विकल्प **1.** अपनी गलती स्वीकार करके, सत्य को मानकर, एकरूपता बनाये रखना चाहिए 2. सबको कैसे भी दबावपूर्वक, प्रताड़ित करते हुए, दुष्प्रचार करके, अपने चरणों में लाकर आधीन करना है।

1015. ''मोमिन बड़े आकल, कहे आखिर जमाने के। इनकी समझ लेसी सबे, आसमान जिमी के जे।।'' सारी दुनिया को किसके द्वारा ज्ञान मिलेगा?

विकल्प **1.** समस्त ब्रह्ममुनियों के द्वारा 2. किसी एक ब्रह्ममुनि के द्वारा

1016. ''जो कोई निज धाम की, सो निकसो रोग पेहेचान।'' यहां प्रसंगानुसार किस रोग से निकलने की बात कही जा रही है?

विकल्प **1.** झूठी निंदा–चुगली–चापलूसी, गुटबाजी, व्यक्तिवाद– स्थानवाद, ईर्ष्या–द्वेष रूपी रोग 2. भव रोग

<u>प्रकरण 95</u>

1017. ''सोई सोहागिन धाम में'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. परमधाम में उस ब्रह्मसृष्टि की सबसे अधिक शोभा होगी...

2. वही परमधाम की सुहागिन आत्मा है....

1018. ''पीछे तौलें धनी आवेस।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** वे धणी के आवेश (जोश) का महत्व समझेंगी कि उसके बिना कोई भी ब्रह्मलीला नहीं होती है

2. इस बात की वे गहन विवेचना करती है कि इस समय धणी का आवेश कहां विराजमान होकर लीला कर रहा है

1019. ''और तौलासी हुकम'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. इस जागनी के ब्रह्माण्ड में धणी का आवेश ही किस प्रकार हुक्म के रूप में लीला कर रहा है **2.** धणी के हुक्म की वास्तविक पहचान हो जायेगी कि धणी के दिल में लिये अनुसार ही सब होता है

1020. ''रोसन करसी आपे अपना'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** वे स्वयं अपने निजस्वरूप, निजघर परमधाम एवं प्रियतम परब्रह्म की पहचान दुनिया में प्रकाशित करेंगी 2. वे स्वयं ही अपने ब्रह्मसृष्टि होने के गौरव को स्पष्ट करेंगी

1021. ''नूर रोसन बल धाम को, सो कोई न जाने हम बिन।'' में 'रोशन बल' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** परमधाम के दिव्य तारतम ज्ञान की रोशनी
2. परमधाम की दिव्य रोशनी

1022. ''ए तो पातसाही दीन की, सो गरीबी से होए'' में धर्म की बादशाही से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जागनी कार्य का नेतृत्व 2. धार्मिक क्षेत्र में एकाधिकार

1023. ''सो दिलवरी सब चाहे।'' सुंदरसाथ अपने मुखिया से क्या चाहते हैं?

विकल्प 1. बड़ी बड़ी बातें, मनोरंजन, दिखावा, वक्तृत्व कला **2.** सच्चे दिल का प्रेम, सत्याचरण, न्यायप्रियता, निष्पक्षता, साधनामय जीवन

1024. ''तो क्यों कहिए तिन को, सिरदार जो असरफ'' में 'अशरफ' का अर्थ क्या है?

विकल्प **1.** श्रेष्ठ, उच्च स्तर का 2. सोना

1025. ''कह्या कुराने बंद करसी, इन के जो उमराह।'' उमराह का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. गादीपति **2.** सभी प्रतिष्ठित धर्माधिकारी, धनवान ट्रस्टी, जो सबको अपने आधीन रखना चाहते हैं

1026. ''लटी तिनसे न होवहीं, जो कहे सिरदार।'' के अनुसार सरदार से क्या गलत कार्य नहीं होगा?

विकल्प 1. प्रचलित मान्यता, परम्परा के विपरीत कोई कार्य ना होगा
2. उनके दिल में सत्यता, सभी सुंदरसाथ के प्रति हित की भावना होगी, धन–प्रतिष्ठा का मोह नहीं होगा, झूठी प्रशंसा, निंदा–चुगली से वह प्रभावित नहीं होगा

1027. ''लिख्या है कुरान में, छिपी गिरो बातन'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. कुर्आन में ब्रह्मसृष्टियों से संबंधित बहुत सी गुह्य बातें लिखी हुई हैं **2.** कुर्आन पाक में इस प्रकार लिखा है कि

खुदा की बातिन गिरोह (गुह्य प्रजा) संसार में छिपी हुई है।

1028.''फुरमान कहे गिरो साहेदी, देसी कारन पैंगंमर'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मुहम्मद साहब ने कुर्आन में कियामत के समय अल्लाह तआला के प्रकटन की जो भविष्यवाणी की है, उसकी साक्षी ब्रह्मसृष्टियां देंगी **2.** न्याय के दिन मोमिनों का समूह पैगम्बर के पक्ष में गवाही देंगे, उस दिन मात्र मोमिनों की गवाही मान्य होगी

1029. ''करे पाक जिमी आसमान को, ऐसी बुजरक गिरो सोए।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** वे पृथ्वी व आकाश (ऊर्ध्व लोकों) के समस्त जीवों (मनुष्य व देवताओं) को ब्रह्मज्ञान प्रदान करके पवित्र कर देंगे

2. ब्रह्मसृष्टियों के आने से सम्पूर्ण चौदह लोक पवित्र हो गया

<u>प्रकरण 96</u>

1030. ''पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक।'' सारी दुनिया एक परमात्मा पर कब ईमान लायेगी?

विकल्प 1. योगमाया में अखण्ड होने के बाद सातवें दिन की लीला में

2. जगत्/छठे दिन की लीला के अंत में जागृत बुद्धि प्राप्त होने पर

1031. ''खेल देख के जागिए, घर असलू अपने तन'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. इस मायावी खेल को देखकर जागृत हो जाईये और ध्यान में परमधाम चलिये **2.** माया जगत् की भ्रमात्मक लीला को देखकर शीघ्र अपने निजघर मूल मिलावे में अपने मूल तनों में जागृत होइए

1032. ''धाम दरवाजे इंद्रावती, ठाढ़ी करे रूदन'' इंद्रावती आत्मा के रूदन करने का क्या कारण था?

विकल्प **1.** खेताभाई के धामगमन उपरांत कष्ट, भारत आने पर चोरी का आरोप, अन्याय, सद्गुरू का वियोग आदि कारणों से दुःखी थे

2. मात्र सद्गुरू के वियोग से वे दुःखी थे

1033. ''मोहे बोहोत कही समझाए के, पर पेहेचान न हुई पूरन।''''ए दरद कहूं मैं किन को, धनी हो गए अन्तरध्यान'' श्रीदेवचंद्रजी के स्वरूप की पूर्ण पहचान और उनका पूर्ण विरह मिहिरराजजी को कब हुआ?

विकल्प 1. वि. सं. 1712 में श्रीदेवचंद्रजी के देह त्याग के समय

2. वि. सं. 1715 में हब्शा में

1034. ''बड़ी बड़ाई अपनी, सुनी हमारी हम'' हमने अपनी बड़ाई किसके मुख से सुनी?

विकल्प 1. संसार के लोगों के मुख से **2.** धर्मग्रंथों के माध्यम से

1035. पुराण संहिता व माहेश्वर तंत्र में परमधाम की शोभा, स्वरूप, इश्क रब्द व लीला का जो वर्णन किया गया है, वह सबलिक–केवल ब्रह्म का है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

1036. कुर्आन में मात्र तीस हजार शरीयत व तीस हजार तरीकत का ज्ञान है, हकीकत के मात्र 12 हरूफे मुक्तआत एवं 2–4 आयते हैं?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

1037. इंजील में परमात्मा व परमधाम का कुछ भी ज्ञान नहीं है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

1038. ''जो साहेब किन देख्या नहीं, न कछु सुनिया कान।'' के अनुसार निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. ग्रंथों में परमात्मा से संबंधित शब्द–ज्ञान लिखा ही नहीं है
2. ग्रंथों में परमात्मा से संबंधित बातें लिखी तो हैं किंतु कोई उसे समझ नहीं सका

1039. ''रूह अल्ला की आवहीं, जो ईश्वरों का ईस।'' निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. ईश्वर शब्द का अर्थ हर जगह आदिनारायण ही होता है
2. ईश्वर शब्द का अर्थ सन्यास मत में मात्र आदिनारायण होता है, कई मतों में ईश्वर शब्द का अर्थ परमात्मा से भी लिया जाता है

1040. ''सो इन जिमी में पातसाही, करसी साल चालीस।।'' ईसा की बादशाही के 40 वर्षों से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. 40 वर्ष में से 16 वर्ष महामति जी के तन से व 24 वर्ष छत्रशाल जी के तन से श्रीश्यामाजी की बादशाहत की लीला हुई **2.** 40 वर्ष में से 16 वर्ष महामति जी के तन से व 24 वर्ष समस्त तत्कालीन ब्रह्ममुनियों के तन से श्रीश्यामाजी के तारतम ज्ञान का वर्चस्व बना रहा

1041. ''कंचित्कालम् स्वयं बुद्धो गुप्तगुप्तश्चरिष्यति।'' विजयाभिनंद बुद्धजी

कुछ समय तक पृथ्वी में गुप्त रूप से विचरण करेंगे, कथन से संबंधित बाईबिल में क्या लिखा है?

विकल्प **1.** रात्रि में चोर की भांति व बादलों में आना
2. मुख पर पर्दा होना

1042. ''यों लिख्या फुरमान में, आखिर बीच हिंदुअन। मुलक होसी नबियन का'' हिन्दूओं में नबियों का मुल्क होना क्यूं लिखा है?

विकल्प **1.** हिन्दूस्तान में ज्यादा से ज्यादा ब्रह्ममुनि आयेंगे इसलिये
2. हिंदूस्तान में सारे पैगम्बर दुबारा आयेंगे इसलिये

1043. ''बीच हिंदुओं भेख फकर। पातसाही करसी महंमद, आखिरी पैगंमर'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** आखिरत में हिंदूओं के मध्य विरक्त वेश में आखिरी पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. हकी सूरत के रूप में प्रकट होकर दीन की बादशाही (नेतृत्व) करेंगे 2. हिन्दूओं में ब्रह्मसृष्टियों में श्री प्राणनाथजी (आखिरी मुहम्मद) की लीला होगी, उनके अंदर आखिरी पैगम्बर मुहम्मद साहिब भी होंगे

1044. ''विजिया अभिनंद बुधजी, और नेहेकलंक इत आए।'' में 'विजयाभिनंद बुधजी' किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** श्रीदेवचंद्रजी 2. महामति जी

1045. कबीर जी के अनुसार कलियुग की आयु पापों के कारण कम होकर कितनी बचती है?

विकल्प **1.** 5500 वर्ष 2. 4500 वर्ष

<u>प्रकरण 97</u>

1046. ''मेरो तो जीउ पिउ धाम को, ए जो अछरातीत अखण्ड।।'' यहां 'जीव शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मेरे तन में स्थित जीव चेतना **2.** मेरी मूल परात्म चेतना

1047. ''ऐसी प्रीत जीव सृष्ट की, जाके पिउ विष्णु सेखसांई।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. आदिनारायण व शेषशायी नारायण एक हैं
2. शेषशायी नारायण व विष्णु भगवान एक हैं।

1048. ''अंग दियो मोहे जान अंगना, दिल सनमंध आन वतन।।७।।'' का

क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** अपने हृदय में मुझे अपनी अंगना (अर्धांगिनी) जानकर, परमधाम का मूल संबंध जानकर अपना अंग (प्रेम, दिल) प्रदान किया। 2. परमधाम और अपने दिल से सम्बन्ध की पहचान कराके अंगीकार किया

1049. ''ऐसी कुन्जी दई कृपा की, जो किनहूं न पाया मोल।।६।।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प **1.** अत्यंत कठोर तप–साधना करके भी कोई तारतम ब्रह्मज्ञान प्राप्त नहीं कर पाया। 2. तारतम ज्ञान का मूल्य आज दिन तक किसी ने नही आंका अर्थात् जो अनमोल हैं।

1050. ''खबर न अछर ब्रह्म को, सो ए भई मुझे सुध।१७।।'' के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. परमधाम की मारिफत की जानकारी अक्षर ब्रह्म को भी नहीं है, उसकी भी मुझे सुध हो गयी कि मारिफत में राजजी के सिवा कोई नहीं रहता। **2.** जो रंगमहल के अंदर होने वाली प्रेममयी स्वरूपों व लीलाओं की खबर अक्षर ब्रह्म को भी नहीं है, उसका सारा ज्ञान मुझे (इस स्वप्न संसार में) हो गया।

1051. ''महामत दुष्टाई क्यों करी, ले विरहा मांहें ना मुई।।१६।।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. मैं आपके विरह–सागर में डूबकर ध्यान में क्यूं नहीं डूब गयी
2. धाम धणी के विरह में देह त्याग क्यूं नहीं कर दिया।

1052. ''जब मिला मिलावा मोमिनों, रूजू हुई सब जहान। दिन छठा जुमें का'' के अनुसार दुनिया वालों को जागृत बुद्धि कब मिलेगी?

विकल्प **1.** छठे दिन की लीला के अंत में
2. बहिश्तों में अखण्ड होने के बाद

<u>प्रकरण 98</u>

1053. ''कह्या साहेब इत आवसी, सो झूठ न होय फुरमान।'' ''रूहअल्ला इलम ल्याए के, केहेलावें इत खुदाए।।४।''के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. स्वयं मूल स्वरूप श्रीराजजी परमधाम से आ गये हैं
2. श्रीश्यामाजी तारतम ज्ञान से युक्त होकर परमात्मा की शोभा पा रही हैं।

1054. ''वसीयत नामे आए दरगाह से, तिन साख दई बनाए।'' वसीयतनामा कहां से आये थे?

विकल्प 1. मक्का में स्थित काबा से

2. मदीना में स्थित मुहम्मद की दरगाह से

1055. ''दुनिया की बरकत, फकीरों की शफकत। नूरी झण्डा और कुरान, जबराईल ले गया अपने मकान।।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. जोश मात्र एक फरिश्ता है और श्रीराजजी का आवेश अलग है

2. यदि जोश श्रीराजजी का स्वरूप नहीं होता तो श्रीप्राणनाथजी की मेहर को वह इधर से उधर नहीं ले जा सकता था, और ना ही वह कुर्आन के गूढ़ रहस्यों को इमाम महदी के अंदर पहुंचा सकता था।

<u>प्रकरण 99</u>

1056. ''कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला कलाम।।४।।'' में कुंजी से क्या आशय है?

विकल्प **1.** उन्होंने मेरे हाथों में अखण्ड मुक्ति प्रदान करने की चाबी तारतम ज्ञान दी। 2. उन्होंने 14 लोकों के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति देने का भी अधिकार दिया

1057. ''सो ए खोया मैं नींद में, करके संग सैतान।।६।।'' में किसका संग करने की बात है?

विकल्प 1. मन रूपी शैतान का **2.** मायावी वस्तु व व्यक्तियों का

1058. ''उमर खोई अमोलक , मोह मद क्रोध ने काम। विखया विखे रस भेदिया, गल गया लोहू मांस चाम।।७।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** भौतिक सुखों का परिणाम रोग दुख व अशांति ही होता है

2. भौतिक सुखों से कोई नुकसान नहीं है

<u>प्रकरण 100</u>

1059. ''प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भिष्ट'' प्रेम नहीं आया तो इसमें किसका दोष है?

विकल्प 1. ज्ञान उपदेश करने का **2.** मान–प्रतिष्ठा के मोह से युक्त होकर, उसका लक्ष्य लेकर ज्ञान का प्रचार करने का

1060. ''जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दई साख।'' में कबीला से

क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जो कोई भी हद–बेहद से परे दिव्य परमधाम की आत्मा (परम–धाम का आत्मिक परिवार) है, उन सभी ने इस बात की साक्षी दी
2. बैकुण्ठ–निराकार से परे अखण्ड का वर्णन करने वाले अध्यात्मवादियों का जो भी समूह था उन सभी ने इस बात की साक्षी दी

1061. ''अवगुन अपने भाखते, उमर खोई ना सकी चल।।६।।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. अपने अवगुणों की पहचान करने में मैंने अपनी सारी उम्र लगा दी **2.** अपने अवगुणों को देखते व कहते हुए मैंने अपनी सारी आयु गंवा दी (किंतु फिर भी धणी के मार्ग पर एक कदम भी नहीं चल सकी।

<u>प्रकरण 101</u>

1062. ''धाम छोड़ झूठी जिमी लगी'' में महामति जी क्या कहना चाह रही हैं?

विकल्प 1. श्रीराजजी को याद करना छोड़कर भौतिक सुखों में डूबी रही
2. श्रीराजजी को याद करना छोड़कर जागनी कार्य में लगी रही

1063. ''न्यारा हुआ न नेहेकाम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट।।४।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** इस प्रकार मैंने निर्गुण (विरक्ति–वैराग्य से परिपूर्ण) पुष्टि मार्ग (एकमात्र धणी का लक्ष्य लेकर सेवा–साधना करने) का अनुसरण नहीं किया। 2. वैराग्य या निष्काम होने की आवश्यकता नहीं है, बस राजजी से प्रेम करते रहो और मायावी सुखों का उपभोग भी करते रहो

1064. ''अनेक अवगुन किए मैं साथ सों, सो ए प्रकासूं सब।'' किस अवगुण की बात चल रही है?

विकल्प 1. धन–सगे संबंधियों के मोह में फंसे
2. सुंदरसाथ को चर्चा सुनाया एवं उनसे सेवा करवाया

1065. ''तोबा खैंचत हों अब'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अपनी गलती स्वीकार करते हुए उसे दुबारा ना करने की प्रतिज्ञा करना 2. माफी मांगता हूं

1066. ''अब साथें मोको समझाई , तिन थें हुई चेतन।।६।।'' सुंदरसाथ

ने महामति जी को किस प्रकार समझाया?

विकल्प 1. ज्ञानचर्चा करके **2.** निंदा–अपमान करके, झूठे आरोप लगाकर

1067. ''इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी। पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी।।'' इस चौपाई में किनकी बात चल रही है?

विकल्प **1.** जिस भी अग्रणी सुंदरसाथ/महामतिजी ने श्रीराजजी–परमधाम का ध्यान–चिंतन करना छोड़कर दिन–रात सुंदरसाथ के जागनी कार्य में लगे रहे, उन्होंने जीती हुयी बाजी हार दी।

2. इस संसार में जो सुन्दरसाथ में अमर्यादित तरीके से अग्रणी बनने का प्रयास करते हैं वे खेल में जीती हुई बाजी हार जाते हैं।

<u>प्रकरण 102</u>

1068. ''बुजरकी मारे रे साथ जी, बुजरकी मारे।'' में कौन से अहंकार की बात चल रही है?

विकल्प 1. विद्या धन रूप कुल की **2.** ज्ञानचर्चा, ध्यान, सेवा आदि की

1069. ''आगूं कई मारे बुजरकिएं, जिन दृढ़ कर लई विश्वास।'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. जिन्होंने बहुत दृढ़ विश्वास के साथ <u>बुजरकी</u> को अच्छा माना है और गले लगाया है, उनका पतन हो गया

2. जिन्होंने इससे पहले भी दृढ़ता पूर्वक प्रियतम परब्रह्म पर ईमान लाया था, ऐसों को भी सम्मान– प्रशंसा के मोह ने नष्ट कर दिया

1070. ''इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे।'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** इस माया जगत् में कोई परमात्मा का प्रेम–आनंद को प्राप्त करना छोड़कर, मान–प्रतिष्ठा की चाहना रखता हो 2. इस मायावी जगत में एक अक्षरातीत के अतिरिक्त अन्य कोई भी व्यक्ति जो बड़प्पन की तृष्णा रखता है

1071. ''खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. बुजरकी का शिकार होने वाला व्यक्ति भक्ति का जोश खो बैठता है **2.** सम्मान–प्रशंसा की अभिलाषा रखने से धाम धणी का जोश प्राप्त होना बंद हो जाता है

1072. ''पूरन मेहेर भई धनी की, दोऊ हादिऐं करी चेतन।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. श्रीराजजी की मेहर हो गयी कि श्रीराजजी व श्रीश्यामाजी ने मुझे सावधान कर दिया **2.** धणी श्रीराजजी की मेहर हो गयी कि दोनों हादी (सद्गुरू) श्री देवचंद्रजी एवं मुहम्मद साहब ने मुझे सावधान किया

<u>प्रकरण 103</u>

1073. ''जो तूं चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** यदि आप वैरागी नाम धरा कर भी (विरक्त साधू बन कर भी) मान –प्रतिष्ठा की चाहना रखते हो, तो 2. हे मेरी आत्मा ! यदि तुम इस संसार में झूठी प्रतिष्ठा पाना चाहती हो तो विरक्त का वेश धारण कर लो

1074. ''ले अपनी अर्स खिलवत'' खिल्वत किसे कहते हैं?

विकल्प 1. जहां माशूक श्रीराजजी के सिवा कोई ना हो

2. आशिक व माशूक की लीला स्थली, जहां आशिक माशूक के अतिरिक्त अन्य कोई ना हो

1075. ''जानत है गोविंद भेड़ा, याको पीठ दिए आसान।।४।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** ये संसार एक गोविंद भेड़ा मण्डल के समान झूठे सुख, सम्मान, धन–प्रतिष्ठा आदि का झूठा आकर्षण है, इसके तरफ ध्यान ना देकर, एकमात्र श्रीराजजी का चिंतन–ध्यान करते हुए भव से पार होना सरल है। 2. यह संसार गोविन्द भेड़ा की तरह भूतों का मायावी मण्डल है। सहजता पूर्वक इसको छोड़ने में ही सुख है

1076. ''ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत।।५।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. तुम इस झूठे संसार में फंसकर धाम की चितवनि करने में देरी कर रही हो **2.** हमें अपने निजघर परमधाम जाने में देरी हो रही है

<u>प्रकरण 104</u>

1077. ''कयामत आई रे साथजी, कयामत आई।'' में 'कयामत' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** कर्मों का न्याय, महाप्रलय, अखण्ड मोक्ष 2. मात्र अखण्ड मुक्ति

1078. ''कासद होए ल्याए फुरमान।'' तारतम वाणी के अनुसार मुहम्मद साहब कौन थे?

विकल्प 1. मात्र एक रसूल **2.** खुदा के ही स्वरूप थे

1079. ''जेते वचन कुरान में, सो सब स्यामा जी दई साख।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प 1. परमधाम तथा जागनी लीला से सम्बन्धित जो भी बातें कुरआन में लिखी हैं , कुर्आन में लिखी उन बातों को सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने मुझे बता दिया था **2.** कुर्आन पाक में आखिरत व दिव्य परमधाम के विषय में जितने भी वचन लिखे हैं, उन सबके विषय में श्रीश्यामाजी स्वरूप श्री देवचंद्रजी ने भी वर्णन किया था

1080. ''निपट निकट कयामत। आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत।।१२।।'' सावधान होने क्यूं कह रहे हैं?

विकल्प 1. अखण्ड मोक्ष का समय आ गया है इसलिये **2.** जगत् का अंतिम समय व सबके कर्मों के हिसाब का समय नजदीक आ गया है इसलिये

<u>प्रकरण 105</u>

1081. ''सृष्ट तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल।।२।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** इस संसार में (पन्नाजी में) तीनों प्रकार की सृष्टियां साथ में रहती हैं और तीनों ही (अपने अंकूर, ज्ञान व सामर्थ्य के अनुसार) कर्म (भक्ति) करते हैं। 2. इस समय सुन्दरसाथ की जमात में तीनों सृष्टियां आपस में मिलकर व्यवहार कर रही हैं

<u>प्रकरण 106</u>

1082. ''निरमल होना याही सों, और धाम बरनन।।२।।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. हृदय की निर्मलता हेतु परमधाम का वर्णन, पठन, श्रवण की कोई आवश्यकता नहीं है **2.** हृदय की निर्मलता हेतु परमधाम का वर्णन, पठन, श्रवण की भी अत्यंत आवश्यकता होती है

1083. ''भजन बिना सब नरक है, पच पच मरिए माहें।।३।।'' में भजन से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** साधना–स्वाध्याय–संयमित जीवन 2. भजन गाना

1084. मनुस्मृति के अनुसार मन किस प्रकार निर्मल होता है?

विकल्प **1.** सत्याचरण 2. ब्रह्मज्ञान

1085. ''विवेक विचार न पाइए, ऊपर टेढ़ी पाग लटकाए।'' में श्रीजी क्या कहना चाहते हैं?

विकल्प **1.** आज के मनुष्य के अंदर विवेक–विचार नहीं होता है (भले–बुरे, लाभ–हानि, हृदय की निर्मलता, शारीरिक स्वस्थ्यता की समझ नहीं होती है) 2. बाह्य दृष्टि रखने वालों में गहन विचार करने की विवेक शक्ति नहीं होती।

<u>प्रकरण 107</u>

1086. ''झूठ सब्द ब्रह्मांड में, कहावत याही में सांच।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** संसार में असत्य ज्ञान के शब्द सत्य कहलाते हैं

2.संसार के सभी शब्द असत्य है, क्योंकि उनकी उत्पत्ति शून्य से हुयी है

1087. ''जीव विष्णु महाविष्णु लों, याके कई विध नाम धरत।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. संसार के जीव अपने विष्णु भगवान या महाविष्णु (आदिनारायण) को ही सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म माना करते हैं

2. दुनिया वाले इस महाशून्य (स्वाप्निक चेतना, ब्रह्मसत्ता) के अनेकों नाम–जीव चेतना (आत्मा), विष्णु, महाविष्णु (आदिनारायण) रखते हैं

1088. ''एक अनेक सब इनमें, इत सांच झूठ विस्तार।''से क्या अभिप्राय है?

विकल्प **1.** एक (आदिनारायण) व अनेक (त्रिदेवा सहित असंख्यों ब्रह्माण्ड) सभी इसी महामाया (ब्रह्मसत्ता, स्वाप्निक चेतना) के ही अंश हैं (उसी से उत्पन्न होते व उसी में लय होते हैं) 2. आदिनारायण (महाविष्णु) के ही संकल्प 'एकोऽहम् बहुस्याम' से असंख्यों ब्रह्माण्डों की रचना हुई है। सभी प्राणी आदिनारायण में ही समाहित (लीन) हो जाते है

1089. ''ए सुपना नींद सुरत का, खेले अछर आतम ।''से क्या आशय है?

विकल्प 1. स्वप्न का यह ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म की सुरत की नींद में बना है

2. ये दृश्यमान स्वाप्निक जगत् नींद (स्वाप्निक चेतना शक्ति) एवं अक्षर की सुरता (मन के संकल्प) से बनता है।

1090. ''खेल देखाए सत वतन , महामत आए ले ।।१0।।'' में क्या कहा जा रहा है?

विकल्प **1.** धाम धनी सबको माया का खेल दिखाकर परमधाम ले आयेंगे
2. चितवनि में सबकी सुरता को परमधाम ले आये

<u>प्रकरण 108</u>

1091. ''फुरमान मेरे मेहेबूब का, ले आया <u>अर्स से</u> रसूल।'' के अनुसार मुहम्मद की रूह कहां से आयी है?

विकल्प **1.** अक्षरधाम से परे रंगमहल 2. सत्स्वरूप से परे अक्षरधाम

1092. ''कह्या रूह अल्ला की आवसी, और मेंहेदी इमाम सोए ।।६।।'' कुर्आन हदीसों के अनुसार रूहअल्ला से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ईसारूहूल्लाह/ईसा मसीह 2. श्रीश्यामाजी

1093. ''ईसा साहिब–ए–रूह है, ईसा रूहअल्लाह, हक का बेटा नहीं रूह है।' ये किस ग्रंथ का कथन है?

विकल्प **1.** तफ्सीरे हुसैनी 2. हदीसों

1094. ''ईसा बिन मरयम, हाकिम व आदिल बनकर उतरेंगे' 'ईसा बिन मरयम' का शाब्दिक अर्थ क्या होता है?

विकल्प **1.** मरियम के पुत्र ईसा मसीह 2. श्रीश्यामाजी

1095. ''रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी'' दो तन धारण करने की बात किस समय की है?

विकल्प 1. आखिरत के समय की **2.** पूरे पांचों दिन की लीला मिलाकर

1096. ''काजी होए के बैठसी, करसी सबों कजाए।।८।।'' खुदा के न्याय का तख्त बातिनी में क्या है?

विकल्प **1.** इमाम महदी का हृदय 2. बेहद मण्डल में स्वयं राजजी या राजजी का जोश–आवेश राजजी का रूप धरके सिहांसन पर विराजमान होगा और सबका न्याय करेगा

1097. ''खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याये रसूल फुरमान।''आखिर भी रसूल आए के, भिस्त दई सब जहान।।सनंध 25/44' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. मुहम्मद की तीनों सूरतें अलग अलग हैं और तीनों में हकी सूरत श्रीप्राणनाथजी की महिमा सर्वोपरि है **2.** मुहम्मद की तीनों सूरतें

एक ही हैं, तीनों के अंदर वही सुरता व शक्ति थी,

1098. ''कई कही महंमद आखिर सिफत, सो भी इन बीच होसी रसूल।।'' 'इन बीच'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** मोमिनों के मध्य मुहम्मद हकी सूरत के रूप में प्रकट होंगे
2. मोमिनों के मध्य श्रीप्राणनाथजी प्रकट होंगे

1099. ''अगर उम्मत तेरी है, ए बंदे मेरे तू जान।'' बड़ी वृत 2/47 में श्रीराजजी किसे किसकी उम्मत व अपने बंदे कह रहे हैं?

विकल्प **1.** ब्रह्ममुनियों को श्रीश्यामाजी जी की उम्मत व अपने बंदे कह रहे
2. अरब के जाहिरी मुसलमानो/अनुयायियों को अक्षर की आत्मा/मुहम्मद की उम्मत व अपने बंदे कह रहे

1100. ''ए जानें हरम के मेहेरम'' का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. कुर्आन हदीसों के जानकार जाहिरी विद्वान **2.** गुह्य खिल्वत/आशिक माशूक की प्रेम लीला स्थली के जानकार ब्रह्ममुनि

1101. मोमिनों की मारफत की बंदगी क्या है?

विकल्प **1.** स्वयं को परात्म स्वरूप में देखते हुए श्रीराजजी के साथ प्रेममयी लीलाओं का ध्यान करना **2.** मात्र श्रीराजजी का स्वरूप देखना

1102. ''एही अहेल किताब हैं, लिख्या दूसरे सिपारे जित।।२४।'' के अनुसार सभी धर्मग्रंथों के वास्तविक उत्तराधिकारी कौन हैं, सभी धर्मग्रंथों में लिखी हमारी बातों के सुख कौन लेगा?

विकल्प **1.** ब्रह्मसृष्टि ही सभी ग्रंथों के रहस्य समझकर सुख लेंगी
2. उनके सुख लेना/उन्हें पढ़ना ब्रह्मसृष्टि के लिये जरूरी नहीं है

1103. ''इनका एही किबला, चाहें ज्यादा अपना राज।।२६।।'' में राजसिंहासन को किबला क्यूं कहा है?

विकल्प 1. उसकी पूजा करते थे इसलिये **2.** दिन रात उसी का चिंतन व उसी के लिये परिश्रम करते थे इसलिये

1104. ''जिन जैसा किबला सेविया'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. जिसने जिसकी पूजा की **2.** जिसने दिनरात जिसकी चाहना की, चिंतन किया, जिसके लिये दिन रात प्रयास किया

1105. ''पढ़े सो भी पेट कारने , और पालने कबीले।'' धर्म कार्य से

जीविकोपार्जन करने को क्यूं गलत कहा गया है?

विकल्प 1. सत्य ज्ञान सुनाकर भेंट दक्षिणा प्राप्त करते हैं

2. ज्यादा भेंट दक्षिणा पाने के लिये असत्य ज्ञान सुनाते हैं, ब्रह्मज्ञान ना होने पर भी सुना सुनाया प्रचलित ज्ञान ही सुनाते रहते हैं

1106. ''जब लीजे अंदर के माएने , तब ना कछू साहेब बिन।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प **1.** एक परमात्मा और उसके दिव्य परमधाम के अतिरिक्त 14 लोक आदि अन्य कुछ भी शाश्वत नहीं है।

2. परमधाम में एक परमात्मा के सिवा कुछ भी नहीं है

1107. ''कही गरीबी बुजरक , पढ़ कर सो ना ले।'' गरीबी से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. दिल से स्वयं को बड़ा समझना किंतु बाहर से सबसे नम्रता पूर्वक बातें करना

2. दिल से स्वयं को ज्ञान, सेवा, ध्यान आदि में छोटा समझना, और उसी अनुसार बातें व आचरण करना

1108. ''जो गरीब सामें बोलहीं , तो तिनको सूली चढ़ाए।।४१।।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. कोई विनम्र व्यक्ति उनसे बात करेगा तो उसे फांसी पर चढ़ा देते हैं

2. कोई निर्धन व्यक्ति पद प्रतिष्ठा सांसारिक शक्ति से रहित व्यक्ति उनके प्रचलित मान्यताओं का विरोध कर देता तो उसे फांसी पर चढ़ा देते हैं।

1109. ''सो हर सदी गांठे खुलीं, तब महंमद ले चले मोमिन।।४४।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प **1.** हर सदी में एक एक गांठ खुलने से एवं मुहम्मद साहब पर से टोना का प्रभाव दूर होने से तात्पर्य ग्यारहवीं सदी में मुहम्मद साहब के पुनः तन धारण करने एवं कयामत की लीला करने से है

2. इस प्रकार ग्यारहवीं सदी में नूरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी के प्रकट हो जाने पर कलियुग रूपी अज्ञान का दुष्प्रभाव समाप्त हो गया

1110. ''जबराईल मुसाफ ले आए, और बरकत दुनियां दीन।।४६।।'' में वाणी के अनुसार दुनिया की बरकत से क्या आशय है?

विकल्प 1. प्रेम **2.** ईमान

प्रकरण 109

1111. ''तिन पर नूर बिलंद, सो किया तुम मेरा वतन।।५।।'' 'नूर बिलंद का क्या अर्थ होता है?

विकल्प 1. दिव्य अक्षरधाम **2.** दिव्यातिदिव्य परमधाम

1112. ''हम तो हैं धाम में, ए खेल नहीं रंचक। हम सेहेरग से नजीक, बैठे आगे हक।। बीतक 17/10 का क्या अर्थ होगा?

विकल्प **1.** हम मूल मिलावे में धणी के समक्ष प्राणनली से भी अत्यंत नजदीक विराजमान हैं, यह खेल अस्तित्वहीन/स्वाप्निक है 2. परमधाम हमारे दिल में है, और यह खेल सत्य है, श्रीराजजी हमारे दिल में बैठे हैं

1113. ''ए भी बड़ाई मुझ को दई, जो सबों देख्या नूर पार। सबों सेहेरग से नजीक, कुंजिएं देखाया निरधार।।''से क्या निष्कर्ष निकलता है?

विकल्प **1.** सभी स्वयं को ब्रह्मात्मा मानकर स्वयं को मूल मिलावे में तारतम ज्ञानदृष्टि से देखा 2. सभी प्राणियों के हृदय में परमधाम है

1114. ''नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ। तिन साहेब कर पूजिया, अर्स का एही गुझ।'' किसे साहेब करके पूजने की बात चल रही है?

विकल्प **1.** महामति जी को **2.** मूल स्वरूप श्रीराजजी को

1115. ''जिन बंदगी मेरी करी, लिया निसबत हिस्सा तिन।पांउं खाक मांगी बुजरकों, ए सोई फकीर मोमिन।।२३।।'' में किनका प्रसंग है?

विकल्प **1.** फकीर मोमिनों का प्रसंग है, उन्हें भी निसबत के कारण महामति जी से आवेश आदि शक्तियों का अंश प्राप्त होगा

2. दुनिया वालों का प्रसंग है, उनकी निसबत राजजी से जुड़ गई, वे पहली बहिश्त में अखण्ड होंगे

1116. ''मैं बातून तुमारी समझी, तुम अपना दिया इलम।'' श्रीराजजी के दिल का क्या भेद समझा?

विकल्प 1. श्रीराजजी के दिल में परमधाम है, जो मारफत में नहीं रहता

2. श्रीराजजी के दिल में जो रूहों के लिये अनंत प्रेम है

प्रकरण 110

1117. कारी कामरी रे'' प्रकरण कब अवतरित हुआ?

विकल्प 1. उदयपुर से मंदसौर जाते समय

2. उदयपुर के ताल में फकीरी वेश धारण करवाते समय

1118. इस जागनी के ब्रह्माण्ड में काली कम्बली से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** सन्याश्रम – विरक्त साधना मय जीवन 2. मात्र प्रेम करो, बाकि विरक्त साधनामय जीवन की कोई आवश्यकता नहीं है।

1119. ''तूं नाम निरगुन कहावहीं'' में 'निर्गुण' शब्द से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. प्रेम त्रिगुणातीत होता है **2.** विरक्त–सन्यास

1120. ''कामरी पेहेरी बृजवधू , और सुंदरवर स्याम।''के अनुसार क्या सत्य है?
विकल्प **1.** श्रीकृष्ण के तन में विराजमान श्रीराजजी ने गोपियों से प्रेम किया
2. श्रीकृष्ण जी ने श्रीराजजी के प्रति प्रेम रूपी कम्बली धारण किया

1121. ''भी पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम।।३।।'' से क्या सिद्ध होता है?
विकल्प 1. मुहम्मद साहब सत्ता के स्वरूप थे
2. मुहम्मद साहब प्रेम के स्वरूप थे

1122. ''आग लोहा पानी प्रले के, सोस लिया सब जल।।''से क्या आशय है?
विकल्प **1.** गोवर्धन पर्वत गर्म लोहे के समान हो गया था
2. गोवर्धन पर्वत के ऊपर विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र घूम रहा था

1123.''पट पेहेर खाए चीकना, हेंम जवेर सिनगार। हक लज्जत आई मोमिनों, तिन दुनी करी मुरदार।। के अनुसार काली कम्बली का क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** विरक्त तपोमय जीवन
2. सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए धणी से प्यार करना

1124. ''हमारे ताले मिने, लिखे अल्ला कलाम।'' चौपाई में वाणी का महत्व क्यूं दर्शाया जा रहा है?
विकल्प **1.** ब्रह्मवाणी के बिना प्रेम उत्पन्न नहीं हो सकता है।
2. ब्रह्मवाणी सबको जगाने आयी है

<u>प्रकरण 111</u>

1125. ''अर्स की खिलवत में, हक की वाहेदत। बैठ के बातें जो करी, सो कहां गई मारफत।।'' इस चौपाई में खिल्वत किसे कहा गया है?
विकल्प **1.** मूल मिलावे को, जहां इश्क रब्द की लीला हुयी थी
2. श्रीश्यामाजी, सखियों, पशु–पक्षी आदि सबके दिलों को

1126. ''हक की वाहेदत।'' वहदत/स्वलीला अद्वैत से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** जिस प्रकार जड़, तना, डालियां, फल, फूल, पत्तों का अस्तित्व भी होता है, किंतु वे अंदरूनी रूप से आपस में जुड़े होते हैं, उसी प्रकार श्रीराजश्यामाजी व सखियों का स्वरूप तो है किंतु वे आपस में अंदर से जुड़े हुए है, उसे वहदत कहते हैं 2. एक श्रीराजजी के अतिरिक्त अन्य किसी का अस्तित्व नहीं होता है, सभी रूपों में श्रीराजजी ही हैं, हम भी राजजी हैं, राजजी राजजी के साथ ही प्रेममयी लीला करते हैं, राजजी राजजी को ही माया का खेल दिखा रहे हैं,उसे वहदत कहते हैं

1127. ''बैठ के बातें जो करी, सो कहां गई मारफत।।२।।'' इस चौपाई में मारफत किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** मूल मिलावे में विराजमान होकर जो इश्क–रब्द की बातें व लीला किया था 2. श्रीराजजी को मारफत का स्वरूप कहा गया है 3. श्रीराजजी के दिल को मारफत का स्वरूप कहा गया है

1128. ''एही मोमिनों मारफत, खिलवत कर साथ हक।। सिनगार 25/70' में मोमिनों की मारफत किसे कहा गया है?

विकल्प 1. मारफत में राजजी भी नहीं रहते, श्रीराजजी में स्वयं का अस्तित्व समाहित कर दो, एक रूप हो जाओ

2. श्रीराजजी के साथ प्रेममयी लीलाएं करना ही मोमिनों की मारफत हैं।

1129. ''मारफत देवे इस्क, इस्कें होए दीदार। के अनुसार ''मारफत का ज्ञान प्रेम उत्पन्न करता है'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मारफत का ज्ञान – श्रीराजजी के सिवा कोई नहीं है, ये ज्ञान प्रेम उत्पन्न करता है **2.** परमधाम के प्रेममयी लीलाओं का ज्ञान–अनुभव, धामधणी के साथ बिते हुए पलों का ज्ञान–अनुभव इश्क उत्पन्न करता है

1130. परिक्रमा की वाणी हकीकत की है और सिनगार मारिफत की वाणी है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

1131. ''हक के दिल की मारफत, ए तिनमें हुए बेसक।।'' सिनगार 25/46 'दिल की मारफत' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** यहां श्रीराजजी के दिल के गुह्य रहस्यों (प्रेम) को मारफत कहा गया है 2. श्रीराजजी का दिल ही मारफत है

1132. ''तुम रूहें मेरे तन हो, तुमसों इस्क जो मेरे दिल। सो क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल।।'' के अनुसार श्रीराजजी के दिल के गूढ़ रहस्य क्या हैं, जिन्हें हम उस प्रेमलीला में रहते हुए भी नहीं जानते थे?

विकल्प **1.** श्रीराजजी के दिल में विद्यमान अपनी प्यारी आत्माओं के प्रति प्रेम को नहीं जानती थीं 2. श्रीराजजी का दिल ही पूरे परमधाम के रूप में है, पूरा परमधाम श्रीराजजी के दिल से उत्पन्न हुआ है, इसे नहीं जानते थे

1133. ''एक रस होईये इस्क सों, चले प्रेम रस पूर। फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामा जी हजूर।।'' के पहले चरण से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. श्रीराजजी के स्वरूप में स्वयं को समाहित कर दो, अपना अस्तित्व समाप्त कर दो **2.** हर पल धाम धणी के सुंदर स्वरूप, प्रेममयी बातों व प्रेममयी लीलाओं के चिंतन–ध्यान में डूबे रहें।

1134. ''हक हादी अर्स मोमिन, सो तो पहले हक दिल माहें। जो चीज प्यारी रूह को, ताए हक पल छोड़ें नाहें।। सिनगार 2/17'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. श्रीराजजी श्रीश्यामाजी, परमधाम व सखियां, वे श्रीराजजी के दिल में पहले ही हैं, अर्थात् पहले मात्र श्रीराजजी का दिल ही था, इसलिये श्रीराजजी का दिल ही मारफत है। **2.** श्रीराजजी का स्वरूप, श्यामाजी का स्वरूप, सखियों का स्वरूप, परमधाम की शोभा व लीला सब श्रीराजजी के दिल के अनुसार होता है। श्रीराजजी के दिल में हमेशा ही यह चिंतन रहता है कि मैं अपनी प्यारी रूहों को किस प्रकार लाड लडाऊं

1135. जिस प्रकार बेहद मण्डल अक्षर का दिल है,उसी प्रकार पूरा परमधाम श्रीराजजी का दिल है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

1136. निम्न में से कौन सा कथन असत्य है?

विकल्प 1. सारा परमधाम श्रीराजजी के दिल के अनुसार है।
2. पूरा परमधाम श्रीराजजी के दिल से उत्पन्न हुआ है
3. पूरा परमधाम श्रीराजजी के दिल में स्मृति–चिंतन के रूप में बसा हुआ है

1137. ''मैं लिखूंगा रमूजें , सो जिन भूलो तुम।।४।।'' यहां रमूजें शब्द से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** यहां मुहम्मद साहब के द्वारा लाये कुर्आन की बात चल रही है
2. यहां श्रीदेवचंद्रजी की बात चल रही है।

1138. ''महंमद कहे मैं हुकमें, सब रूहें मुझ माहें।'' जब मुहम्मद साहब की रूह मेराज में गई थी तब मूल मिलावे में सभी सखियां फरामोशी की अवस्था में थीं, इससे क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** उनकी सुरता परमधाम से निकल चुकी थी, मुहम्मद साहब के तन में, श्रीश्यामाजी के साथ में ही सुषुप्ति जैसी अवस्था में थीं

2. वे फरामोशी में तो थे किंतु उनकी सुरता उनके ही तनों में थी

1139. ''कहे महंमद मसी आवसी , ले कुंजी लाहूत से।'' 'मसी आवसी' शब्द से क्या तात्पर्य है? मुहम्मद साहब ने कुर्आन हदीसों में किसके आने की भविष्यवाणी कही है?

विकल्प 1. श्रीश्यामाजी की **2.** ईसा मसीह/हजरत ईसा रूहूल्लाह की

1140. ''एक दीन सब करसी , सब कायम होसी कुंजिऐ।।६।।'' यहां एक दीन करने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. तारतम ज्ञान से सभी मतों का एकीकरण करना

2. सारी दुनिया के एक दीन (एक धर्म) हो जाना

1141. ''हक गिरो हम आए के, करें कजा तमाम।।१०।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** मुहम्मद साहब ने कहा कि उस समय हक तआला (परमात्मा), गिरोह मोमिन (ब्रह्ममुनि) व हम (स्वयं मुहम्मद पुनः) आकर सारे जगत् का न्याय (कजा) करेंगे। 2. मुहम्मद साहब ने कहा कि उस समय ब्रह्मसृष्टियों तथा खुदा के स्वरूप इमाम महदी के साथ मैं भी रहूंगा और इमाम महदी सारे संसार का न्याय करेंगे।

1142. ''इन नासूतें भुलाए दई, हक की हकीकत।।'' में 'हकीकत' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. श्रीराजजी की हकीकत अर्थात् श्रीश्यामा जी , सखियां , २५ पक्ष और अष्ट प्रहर की लीला **2.** निजघर व प्रियतम परब्रह्म

<u>प्रकरण 112</u>

1143. ''फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी का स्वरूप दिल में पुनः पुनः याद आ रहा है

2. श्रीराजजी का स्वरूप दिल में पुनः पुनः अंकित हो रहा है

1144. 'किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल।।१।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** ऐसी कहनी (कौल), रहनी (फैल) व आत्मिक स्थिति (हाल, विरह की स्थिति) तुम्हारी किसने कर दी

2. तेरी कथनी , करनी और रहनी किसने ऐसी कर दी है

1145. ''श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना, ए देख दरसन आवे जोस आवेस।।३।।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. श्रीराजजी का सुंदर स्वरूप देखने पर कभी जोश आता है तो कभी आवेश **2.** जोश व आवेश दोनों पर्यायवाची शब्द हैं, धाम धणी का दर्शन करने पर इश्क का जोश/आवेश आता है

1146. ''दुख से विरहा उपजे, विरहे <u>प्रेम इश्क</u>'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. दुख से विरह उत्पन्न होता है और विरह से कभी प्रेम व कभी इश्क उत्पन्न होता है **2.** दुख से विरह उत्पन्न होता है और विरह से प्रेम अर्थात् इश्क उत्पन्न होता है

1147. ''सब विद्या अपनी साधहीं, सब खेलें इस्क के जोस।। परिक्रमा 34/99' 'सुकन मेरा मानो नहीं, सब भरी इस्क के जोस।' खि. 15/38 के अनुसार क्या सत्य है?

विकल्प 1. परमधाम में इश्क का जोश व इश्क का आवेश भी अलग अलग है, इश्क का जोश छोटा है

2. परमधाम में इश्क का जोश व इश्क का आवेश एक ही है,

1148. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. धणी का दीदार होने पर धणी का आवेश आ जाता है **2.** धणी का आवेश आने पर धणी व परमधाम का दीदार होने लगता है

1149. ''सो सूरत ले धनी को आवेस'', ''पूरन आवेस दियो आधार'' ''संग जोश धनी के भेले'', ''जोश लियो खैंच कर'' इन चौपाईयों में धणी का आवेश/जोश किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** सत्ता के जोश/आवेश को 2. इश्क के जोश/आवेश को

1150. ''चरन भूखन जामें इजार झांई।'' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** केसरिया रंग की इजार (चूड़ीदार पैजामा) के ऊपर श्वेत रंग के जामे का दामन है। दामन में से इजार का केसरिया रंग झलक रहा है।

2. चरण–कमलों में स्थित झांझरी, घुंघरी, कांबी तथा कड़ला के आभूषणों

में जामें तथा इजार का प्रतिबिम्ब झलकता रहता है

प्रकरण 113

1151. ''मासूक दिल मोमिन मोहोल माहें बसे।।१।।'' से क्या अभिप्राय है?

विकल्प **1.** प्रियतम अक्षरातीत ब्रह्मात्माओं के दिल रूपी महल में बस गये हैं।
2. माशूक श्रीराजजी तो ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनों) के दिल रूपी महल में ही रहते हैं।

1152. ''कौल फैल हाल नित नवले देखाए।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. उनकी वाणी, उनकी करनी और उनकी रहनी में नित्य ही नवीनता बनी रहती है। **2.** उनकी वाणी, लीला तथा प्रेम से परिपूर्ण स्थिति नित्य ही नवीनता से युक्त दिखायी देती है।

1153. ''मोहन मोही मोहनी मह हो जाए।।३।।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. सबको सम्मोहित करने वाले श्री राज जी के सम्मोहन से सम्मोहित होकर वह एक रूप हो जाती है। **2.** मोहित करने वाले श्रीराजजी के मनमोहक स्वरूप पर मोहित होकर आत्मा फिदा (मुग्ध) हो जाती है (उस सुंदर स्वरूप को मंत्र मुग्ध होकर एकटक देखने लगती है)।

1154. ''अर्स वाहेदत खिलवत खसम की , हुज्जत निसबत लिए इत आई।।४।।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. तुम परमधाम की वाहिदत के स्वरूप हो। श्री राज जी के मूल मिलावे में तुम्हारे मूल तन हैं, जिसके कारण धनी से अखण्ड सम्बन्ध का दावा लेकर ही तुम इस संसार में आयी हो

2. दिव्य परमधाम, जहां प्रियतम परब्रह्म की वहदत (स्वलीला अद्वैत) है, उसकी खिल्वत (आशिक–माशूक की लीला स्थली) में, ब्रह्मात्माएं निस्बत (आत्म संबंध) का दावा लेकर आयीं (अपने मूल तनों में जागृत हुयीं।)

प्रकरण 114

1155. ''नूर नाम रोसन का, दुनी जानत यों कर।'' दुनिया वाले नूर नाम से किसे परमात्मा मानते हैं?

विकल्प 1. सूर्य, चंद्रमा, विद्युत व अग्नि के प्रकाश को **2.** कण कण में एवं सभी प्राणियों के हृदय में जीव चेतना के रूप में स्थित ब्रह्मसत्ता को

1156. ''मुहम्मद साहब जब शबे मेअराज में अर्शे आज़म गये, तब उन्होंने नूर देखा'' कथन से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मुहम्मद साहब ने दिव्य प्रकाश देखा

2. मुहम्मद साहब ने दिव्य प्रकाश से युक्त परमात्मा को देखा

1157. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. नूर एक तत्व है जिससे सारा परमधाम बना है

2. परमधाम के स्वरूपों व वस्तुओं की अलौकिकता, संसार से भिन्न गुणधर्म को दर्शाने के लिये नूर/दिव्य शब्द का प्रयोग किया जाता है

1158. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. नूर शब्द का तात्पर्य परब्रह्म का प्रकाश होता है, उसी दिव्य प्रकाश से परब्रह्म का युगल स्वरूप व सम्पूर्ण परमधाम का स्वरूप बना है। वही दिव्य प्रकाश मारफत स्वरूप परब्रह्म है। **2.** श्रीराजश्यामाजी, सखियों के स्वरूप एवं परमधाम के कण–कण से दिव्य प्रकाश निकलता है क्योंकि परमधाम की प्रत्येक वस्तु स्वप्रकाशित होती है

1159. श्रीराजजी का दिल ही नूर है। उसी से श्रीराजजी व परमधाम का प्रकटन हुआ है।

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

1160. ''नूर नजरों नूर श्रवनों, नूर को नूर विचार।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** जो दिखायी दे रहा है, जो सुनायी दे रहा है और जो विचार दिल में उत्पन्न हो रहे हैं, वे दिव्यता से परिपूर्ण हैं

2. जो दिखायी दे रहा है, जो सुनायी दे रहा है और जो विचार दिल में उत्पन्न हो रहे हैं, वे नूर तत्व के हैं

3. जो दिखायी दे रहा है, जो सुनायी दे रहा है और जो विचार दिल में उत्पन्न हो रहे हैं, वे मारफत रूप दिव्य प्रकाश के हैं

1161. ''रीत रसम सब नूर की, प्रीत प्रेम नूर लख।।१६।।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** प्रेम का स्वभाव व लीला (परम्परा) दिव्यता से युक्त हैं

2. रीति परम्परा सब नूर तत्व का है 3. रीति परम्परा सब मारफत स्वरूप दिव्य प्रकाश का है, जिससे सारा परमधाम बना है

1162. नूर क्या होता है?

विकल्प **1.** दिव्यता, अलौकिकता को दर्शाने वाला शब्द
2. नूर एक तत्व है 3. नूर राजजी के दिल को कहते हैं
4. दिव्य प्रकाश है, जिससे परब्रह्म का स्वरूप प्रकट हुआ है

1163. श्रीराजजी का स्वरूप किशोर स्वरूप नहीं हो सकता क्योंकि इससे वे भी बंधन में आ जायेंगे?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य, परब्रह्म के स्वरूप को सांसारिक दृष्टि से नहीं देखा जा सकता

1164. परमधाम के सभी तत्वों में सभी तत्वों के गुण होते हैं। प्रत्येक वस्तु में स्थूलता का भी गुण है, सूक्ष्मता का भी गुण है, इसलिये बंधन नहीं है?

विकल्प **1.** सत्य 2. असत्य

1165. जैसे इस संसार में जीव चेतना का सूक्ष्म शरीर होता है, वैसा ही परमधाम में सबका स्थूल दिखने वाला स्वरूप है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

1166. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. श्रीराजजी के आभूषणों का कभी भी स्पर्श नहीं होता, और जल हमें कभी भी गीला नहीं करता, इस कारण एक बंधन है **2.** श्रीराजजी के आभूषणों का इच्छानुसार स्पर्श भी होता है, और इच्छानुसार नहीं भीहोता है। इच्छानुसार जल में गीला भी हो सकते हैं, इच्छानुसार नहीं भी होते।

1167. वहां की पांचों इंद्रियां भी नूरमयी हैं – सभी इंद्रियों में सभी इंद्रियों के गुण होते हैं।

विकल्प **1.** सत्य 2. असत्य

1168. ''नूर जोवन रोसन नूर नौतन , नूर सब अंगों उद्योत नूर पूर।।२।'' का क्या आशय है?

विकल्प **1.** धाम धणी के सभी अंग दिव्यता से परिपूर्ण हैं, दिव्य प्रकाश से जगमगा रहे हैं। 2. उनके सभी अंगों में नूरी प्रकाश ओत प्रोत है, नूरी प्रकाश से ही सभी अंग बने हैं।

1169. ''नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. चिंतन, चर्चा व तारतम ज्ञान भी नूर तत्व के बने हैं

2. चिंतन, चर्चा व तारतम ज्ञान भी मारफत रूप दिव्य प्रकाश से बने हैं।
3. दिव्य परमधाम का चिंतन, चर्चा व तारतम ज्ञान भी दिव्य, अलौकिक है

1170. ''नूर नूर में खैंच लई हकें हजूर।।४।।'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** प्रियतम अक्षरातीत ने दिव्य ब्रह्मात्माओं की सुरता को दिव्य परमधाम के दिव्य स्वरूप एवं दिव्य लीलाओं की तरफ खींच लिया है।
2. नूरमयी शोभा वाले श्री राज जी ने नूरमयी सखियों को खींच कर अपने से एकाकार कर लिया है।'

<u>प्रकरण 115</u>

1171. ''पीवते पीवते पिउ के प्याले सों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका।।१।।'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प 1. प्रेम रूपी शराब को पीकर आशिक आत्मा प्रियतम के स्वरूप में एक रूप हो गयी है। **2.** अखण्ड इश्क रूपी मदिरा का पान करते करते, आशिक आत्मा, माशूक के प्रेम में मदमस्त हो जाती है।

1172. ''महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल मांहीं।'' से क्या स्पष्ट होता है?
विकल्प 1. मेरे हृदय रूपी धाम में एक प्रियतम के सिवा अन्य कोई भी नहीं है, मैं भी नहीं हूं। **2.** मेरे हृदय रूपी धाम में मेरे और प्रियतम के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं है।

1173. ''एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखिर एक का एक मोहोल बीच और नाहीं।।४।।'' से क्या आशय है?
विकल्प 1. परमधाम में एक राजजी के अतिरिक्त कोई नहीं था, रास लीला में भी एक राजजी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था, अब जागनी लीला में भी मेरे दिल में धणी के आ जाने से राजजी के अतिरिक्त कोई ना रहा
2. परमधाम में हम एक स्वरूप थे (हमारे बीच कोई जुदायी नहीं थी)। मध्य में रास लीला में भी हम एक हो गये थे (हमारा मिलन हो गया था)। अब इस आखिरत के समय पुनः श्रीराजजी की शोभा दिल में बसने से हम पुनः एक हो गये हैं (पुनः हमारा मिलन हो गया है)। अब मेरे हृदय में प्रियतम अक्षरातीत के (व मेरे) सिवाय अन्य कोई भी नहीं है।

प्रकरण 116

1174. ''यों खैंच खड़ी करी इलम खसम के, लई जोस फरामोस से होस वतन।।१।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** धणी के जोश ने माया की फरामोशी से परमधाम की जागृति में पहुंचा दिया (की तरफ अग्रसर कर दिया)। 2. अब आत्मा ने अपने अन्दर प्रेम का जोश भरा और फरामोशी छोड़कर अपनी नजर परमधाम की ओर कर दी।

1175. ''भनत महामती हक दिल मारफत की'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** महामति जी प्रियतम परब्रह्म के दिल के रहस्य (ब्रह्मविज्ञान– सखियों के प्रति श्रीराजजी के दिल में स्थित प्रेम) कह रही हैं।

2. श्री महामति जी श्री राज जी के दिल की मारिफत के ज्ञान की बातें कह रही हैं कि श्रीराजजी का दिल ही मारफत है, उसी से पूरा परमधाम उत्पन्न हुआ है, उसके अतिरिक्त अन्य किसी (श्रीराजजी, श्रीश्यामाजी, सखियां परमधाम) का भी अस्तित्व नहीं है।

प्रकरण 117

1176. ''जानूं जामनी बीच जुदी हुती हक जात सें, पेहेचान हुई प्रात हुए , पिउ संग।।१।।''से क्या आशय है?

विकल्प **1.** इससे पहले माया के प्रभाव से ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे मैं परमधाम व श्रीराजश्यामाजी से बिछड़ कर (कहीं दूर) इस खेल में आ गयी हूं ,किंतु ब्रह्मज्ञान का उजाला होने पर पहचान हो गई कि मैं (मेरा मूल तन) तो प्रियतम के चरणों में ही (पिउ संग) मूल मिलावे में विराजमान है 2. मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैं माया की अन्धकारमयी रात्रि में अपने प्रियतम व सुन्दरसाथ से अलग हो गयी थी और अब तारतम ज्ञान के उजाले में प्रातः काल हो गया है, जिसमें मैंने अपने धनी की पहचान करके अपने दिल में बसा लिया है।

1177. ''तो कलूब किबला भया मकबूल अल्लाह कहया'' हृदय पूज्य किस प्रकार बन गया?

विकल्प **1.** जब श्रीराजजी दिल में बस गये

2. श्री राजजी तो हमेशा से ही दिल में बसे हुए थे

1178. ''अव्वल आखिर मिले एक हुए न जुए।।३।।'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. परमधाम में भी एक श्रीराजजी के अतिरिक्त कोई नहीं है, यहां भी

श्रीराजजी के दिल में बसने से उनके अतिरिक्त कोई ना रहा **2.** इस प्रकार अव्वल (खेल में आने से पहले परमधाम) में भी एक (साथ) थे, यहां भी अंततः एक हो गये (मिलन हो गया), इस प्रकार हमारे बीच वियोग नहीं रहा।

<u>प्रकरण 118</u>

1179. ''दम दिल तन एकै,'' का क्या अर्थ होगा?

विकल्प 1. परमधाम में सबके दिल एक जैसे है , तन एक जैसे हैं यहां तक कि मुख से निकलने वाले शब्द भी एक जैसे ही है **2.** परमधाम (की स्वलीला अद्वैत/वहदत) में हम सभी आत्माओं के तन, दिल, चेतना आदि सब एक हैं।

1180. ''मोमिन रखे मोमिन सों, जो तन मन अपना माल।'' के अनुसार कौन परमधाम की आत्मा नहीं है?

विकल्प **1.** जो सुंदरसाथ अन्य सुंदरसाथ से तेरा–मेरा (यह तेरा धन–यह मेरा धन) का भाव रखता है, और अपने तन, मन व धन को सुंदरसाथ की सेवा व जागनी कार्य में प्रयोग नहीं करना चाहता है, 2. यदि कोई सुन्दरसाथ दूसरे के धन का दुरूपयोग करने की भावना रखता है

1181. ''ताको ले बैठे दिल में, किया ऐसा अपने हक।।८।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** धाम धणी ने हमें ऐसी शक्ति (जोश, जागृत बुद्धि, तारतम ज्ञान आदि) प्रदान की, जिससे उस परमधाम व परब्रह्म अक्षरातीत की शोभा को हम अपने दिल में बसा सके हैं। 2. धाम धनी ने सुन्दरसाथ के ऊपर ऐसी मेहर (कृपा) की है कि इस मृत्यु लोक मैं बैठे–बैठे ब्रह्ममुनियों ने अपने सूक्ष्म दिल में ही अनन्त परमधाम को बसा रखा है।

1182. ''और दुनी के दिल पर, किया अबलीस पातसाह। सो गुम हुए बीच रात के, क्यों ए न पावें राह।।९।।'' के अनुसार जीव सत्य मार्ग को क्यूं प्राप्त नहीं कर पाते हैं?

विकल्प 1. क्यूंकि जीव के हृदय में निर्मलता नहीं होती है, इस कारण

2. जीव सृष्टि की उत्पत्ति आदिनारायण से होती हे, जो कि मोह सागर में उत्पन्न हुआ है **3.** संसारी जीवों के दिल पर परब्रह्म अक्षरातीत ने इब्लिश शैतान (माया/स्वाप्निक चेतना शक्ति) की बादशाही (हुकुमत) कर दी है।

1183. ''जीव देते ना सकुचें , मोमिन राह हक पर। दुनियां जीव ना दे सके ,

अर्स रूहों बिगर।।१४।।'' यहां जीव देने से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अपना जीवन समर्पित करना

2. अपने जीव चेतना को समर्पित करना

1184. ''लिखी फकीरी ताले मिने , अपने हादी के। कदम पर कदम धरें , मोमिन कहिए ए।।१६।।'' चौपाई में महामति जी क्या कहना चाह रहे हैं?

विकल्प **1.** अपने हादी (महामति जी) के भाग्य में ही जब त्याग–तपस्या पूर्ण विरक्त–वैरागी जीवन लिखा है तो उनके वैराग्यपूर्ण जीवन का जो अनुसरण करेगा, वही सच्चा मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) कहलायेगा।

2. ब्रह्मसृष्टि वही है जो भौतिक सुखों के मार्ग का अवलम्बन करे

1185. ''अर्स किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार।।१७।।'' में ''नूर के पार' से क्या आशय है?

विकल्प 1. सत्स्वरूप से परे अक्षरधाम **2.** अक्षरधाम से परे रंगमहल

1186. ''झूठ वास्ते जुदे ना पड़ें, मोमिन अर्स वाहेदत।।१८।' में क्या निर्देश है?

विकल्प 1. हमारे मान–प्रतिष्ठा के आड़े आकर कोई हमारी गलती बताये तो उसे बदनाम करके निकाल देना चाहिए

2. झूठी माया के सुखों, धन–सम्पत्ति व सम्मान–प्रतिष्ठा के लिये एक दूसरे से अलग नहीं होना चाहिए (अहंकार वश विवाद नहीं करना चाहिए, अपनी गलती को स्वीकार करके, नम्र बनकर साथ चलना चाहिए)।

<u>प्रकरण 119</u>

1187. ''टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी।।१।।'' चौपाई में कुंज बिहारी से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. वृंदावन के कुंज निकुंज वनों में विहार करने वाले

2. परमधाम के कुंज निकुंज वनों में विहार करने वाले

1188. ''मुझ देखते सैयल मेरी , कैयों जीत के बाजी हारी।।३।।'' कई सुंदरसाथ ने किस कारण से जीती हुई बाजी हार दिया?

विकल्प 1. प्रेम न होने से अपने दिल में धनी को नहीं बसा सके।

2. मान–प्रतिष्ठा के मोह में फंसकर सारी साधना–भक्ति का फल गंवा दिया

1189. ''आतम मेरी निरमल करके , सेहेजें पार उतारी।।४।।'' यहां आत्मा शब्द किसके लिये प्रयोग किया गया है?

विकल्प **1.** जीव चेतना 2. परात्म की सुरता

1190. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. श्रीजी ने ललीतासखी को धनवान की बेटी समझकर पानी छिड़क दिया था **2.** उनके हृदय में पहले ही श्रीजी की चर्चा सुनकर विरह, श्रद्धा–समर्पण की भावना उत्पन्न हो गयी थी, इसलिये श्रीजी की विशेष कृपा हुयी।

1191. निम्न में से क्या सत्य है?

विकल्प 1. सर्वांग सुंदरी बना देने के कारण ललीता सखी का हृदय निर्मल हो गया और उसने अपना जीवन समर्पित कर दिया **2.** श्रीजी के श्रीमुख से ज्ञानचर्चा सुनने से, निजस्वरूप, निजघर, धाम धणी की पहचान होने से, उसका हृदय पहले ही निर्मल हो गया था, दिल से वह पहले ही समर्पित हो चूकी थी

<u>प्रकरण 120</u>

1192. ''साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार। कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर।'' महामति जी कौन से गुनाह की बात कर रहे हैं?

विकल्प 1. सुंदरसाथ को गलत ज्ञान सुनाया, उनके धन का हरण किया

2. सुंदरसाथ को वाणी सुनाकर सांसारिक सुखों की नश्वरता, दुःखरूपता की पहचान कराके भौतिकवादी जीवन से निकाला

1193. ''सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार।।५।।'' परिवार के कौन से सदस्य दुश्मन के समान होते हैं?

विकल्प **1.** जो सांसारिक कामनाओं से युक्त, स्वार्थ परायण होते हैं।

2. जिनके दिल में श्रीराजजी के प्रति श्रद्धा, समर्पण, ईमान, इश्क होता है, वे भी

1194. ''विध विध जीत करत माया में, सो ए देवाई सब डार।'' मृत्यु के समय सांसारिक उपलब्धियां काम नहीं आती हैं?

विकल्प **1.** सत्य 2. असत्य

1195. ''सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार।।६।।'' वे सारे सुख अग्नि के समान कष्टप्रद क्यूं लगने लगे?

विकल्प **1.** विवेक–वैराग्य का उदय होने पर, संसार की नश्वरता व दुखरूपता का ज्ञान हुआ इसलिये

2. उन परिवार जनों ने हमें बहुत दुख दिया इसलिये

1196. ''मेरे टोने ही को आकार। ए माया अमल उतारे महामत'' से क्या

तात्पर्य है?

विकल्प **1.** मेरा तन एक ऐसा टोना (अलौकिक शक्तियों से युक्त) है, जो सबके हृदय से माया (भौतिक सुखों, मान–प्रतिष्ठा, धन–सम्पत्ति, सगे–संबंधियों) का नशा उतार देता है। 2. मैंने अपने स्वरूप पर टोना कर रखा है अर्थात् मैं अक्षरातीत होते हुए भी ऐसे मानव तन में विराजमान हूँ कि बिना मेरे बताये कोई भी मेरे स्वरूप की पहचान नहीं कर सकता

<u>प्रकरण 121</u>

1197. ''कलाम अल्ला न्यारा सबन से , सो क्यों कहूं सिफत जुबांए।।१।।'' कुर्आन को अन्य ग्रंथों से श्रेष्ठ क्यूं कहा गया है?

विकल्प **1.** उसमें परब्रह्म एवं उनकी आत्माओं के विषय में कुछ विशेष प्रकार से वर्णन किया गया है। 30.000 हर्फ हकीकत के संकेतों में लिखे हैं।
2. उसमें 12 हरूफे मुक्तआत व 2–4 आयतें मात्र हकीकत की हैं

1198. ''तामें सिफत सोफी महंमद की'' में मुहम्मद से क्या आशय है?

विकल्प **1.** मुहम्मद सल्ल. की 2. आखिरी मुहम्मद श्रीप्राणनाथजी

1199. ''गोस कुतब पैगंमर , ओलिए अंबिए कई नाम।'' आदि नाम श्रीमुखवाणी के अनुसार किसकी महिमा के लिये हैं?

विकल्प 1. सुफी मत के संतों के लिये
2. मुहम्मद (तीनों सूरतों) एवं ब्रह्मसृष्टि के लिये

1200. सूफी मत का सिद्धांत हिन्दूओं के किस मत से मिलता जुलता है?

विकल्प 1. पौराणिक मत **2.** सन्यास मत 3. न्याय दर्शन

1201. सूफी मत के सिद्धांत ''अनल हक'' का क्या अर्थ होता है?

विकल्प **1.** अहं ब्रह्मास्मि अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूं 2. नासूत मलकूत जबरूत के आगे लाहूत अर्शे आज़म में हक तआला की अमरद सूरत है

1202. सन्यास मत के समान ही सूफी मत में भी अपने गुरूजनों को ब्रह्मस्वरूप/खुदा का रूप मानकर उनके भजन–कव्वाली गाये जाते हैं?

विकल्प **1.** सत्य 2. असत्य

1203. ''सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम। '' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** नूह तूफान के पहले जो रास विहारी श्रीकृष्ण थे उन्हें कुर्आन में

नूह नबी का पुत्र साम कहा गया है, वे ही तूफान के पश्चात् अरब के चांद बनकर मुहम्मद सल्ल. के रूप में आये। उन्हीं मुहम्मद सल्ल. की सारी महिमा कुर्आन पाक (इस्लामिक ग्रंथों) में लिखी है। 2. उपरोक्त चौपाई में वर्णित सारी शोभा श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) की है ये वही मुहम्मद हैं, जिन्हें 'श्याम' (रास विहारी श्रीकृष्ण) के नाम से कुर्आन में वर्णित किया गया है

1204. ''अव्वल आखिर दोऊ दीन में , एही बुजरक महंमद नाम।।५।।'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अव्वल (अरब में) तथा आखिरत (हकी सूरत के रूप में महामति जी के तन में) – दोनों समय में दीने इस्लाम (सत्य शांति का मार्ग) में (तीनों सूरतों के रूप में) इसी मुहम्मद नाम की ही सर्वोपरि महिमा है।
2. इस्लाम धर्म में अव्वल के मुहम्मद तथा हिन्दू धर्म में श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) की महिमा गायी गयी है

1205. ''मारफत दरवाजा खोलिया, दिल दीजो नजर वतन।।७।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** अब प्रियतम अक्षरातीत (हक तआला) ने मारिफ्त (परमधाम की शोभा, आत्मा–परमात्मा के मूल स्वरूप व लीलाओं) के ज्ञान का दरवाजा खोल दिया है, अतः अब अपनी हृदय दृष्टि को परमधाम (की शोभा, स्वरूप व लीलाओं) की तरफ कीजिये।
2. अब धनी ने मारिफत के ज्ञान का दरवाजा खोल दिया है, कि मारिफत में श्रीराजजी भी नहीं रहते, श्यामाजी सखियां भी नहीं रहतीं, परम–धाम भी नहीं रहता इसलिए परमधाम में ध्यान लगाने में अपना दिल लगाना।

1206. ''एही फिरका नाजी कह्या, दे साहेदी फुरमान। एक नाजी नारी बहत्तर एही नाजी की पेहेचान।।११।।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. ब्रह्ममुनियों का समूदाय कुर्आन के अनुसार आखिरी मुहम्मद श्रीप्राणनाथजी का 73 वां फिरका है। **2.** ब्रह्ममुनियों का समूदाय कुर्आन के अनुसार मुहम्मद साहब का ही 73 वां फिरका है।

1207. ''एही गिरो खासी कही, जिनमें महंमद पैगंमर। हकीकत मारफत खोल के, जाहेर करी आखिर।।१२।।'' में मुहम्मद शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** उस समूदाय (गिरोह) को खासुलखास उम्मत कहा है, जिनमें मुहम्मद (हकी सूरत के रूप में) पैगम्बर (ज्ञान प्रदाता, मोक्ष प्रदाता) बनकर आये

हैं। 2. इस नाजी फिरके को ही खासल खास मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) की जमात कहा गया है , जिसमें आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन हुआ

1208. ''तीनों अर्स अजीम के , ईसे किए बयान ।।१५।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** खुदा तआला (प्रियतम परब्रह्म), मुहम्मद (श्रीश्यामाजी) तीनों सूरतें एवं उम्मत (ब्रह्मात्माएं) – तीनों (श्रीराजश्यामाजी एवं ब्रह्मप्रियाएं) ही अर्शे–अज़ीम के स्वरूप हैं, 2. रुह अल्लाह (श्रीश्यामाजी), श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) तथा सुन्दरसाथ (मोमिन) तीनों ही परमधाम से आये हैं।

<u>प्रकरण 122</u>

1209. ''उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए। तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महंमद का होए।।४।।'' से क्या आशय है?

विकल्प **1.** तब मुहम्मद साहब की ज्ञान शक्ति (मेड़ते में कलमा सुनाते वक्त) मेरे तन में आ गई। अब उनके कहे अनुसार (कुर्आन में लिखे अनुसार) सारी घटना (लीला) होगी। 2.तब मेरे अन्दर श्यामा जी आकर विराजमान हो गयी। अब सब कुछ वही घटित होगा, जो वे कहेंगी अर्थात् चाहेंगी

1210. ''सो हकीकत सब कुरान में , कई ठौरों लिखी साख। जो ग्वाही लिखी आप साहेबें , कहूं केती हजारों लाख।५।'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प **1.** कुर्आन के अंदर 30 हजार हकीकत की बातें संकेंतों में लिखी हैं

2. कुर्आन के अंदर 30 हजार शरीयत व 30 हजार तरीकत की बातें लिखी हैं, हकीकत की 2–4 बातें मात्र लिखी हैं

1211. ''तीसरी सृष्ट जो जाहेरी , सब मजकूर इनकी कही।।६।।'' बिहारी जी के साथ कौन से सृष्टि के अनुयायी रहे, जिन्हें दिखावा, चापलूसी, निंदा–चुगली ही अच्छा लगता था

विकल्प **1.** जीव सृष्टि 2. ब्रह्म सृष्टि

1212. ''तिन रूह पर इमाम का, बरसे वतनी नूर।।८।।'' वतनी नूर से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** परमधाम के ज्ञान व आनंद की वर्षा होगी

2. परमधाम का नूर बरसेगा

प्रकरण 123

1213. ''स्यामाजी स्याम के संग, जुवती अति जोर जंग। करती पूरन रंग, परआतम परे।।१।।'' ये कहां की लीला का वर्णन है?

विकल्प 1. रास लीला का **2.** परमधाम का

प्रकरण 124

1214. ''सत्गुर मारो श्री वालोजी'' चौपाई में सद्गुरू किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** श्रीराजजी को 2. श्री देवचंद्र जी को 3. सभी गुरूजनों को

1215. श्रीमद्भागवत अमरकथा है?

विकल्प 1. सत्य **2.** असत्य

1216. श्रीमद्भावगत ग्रंथ की रचना किसने की?

विकल्प **1.** व्यासजी 2. शुकदेवजी

1217. ''वेहद पुरनों वासी'' चौपाई में 'वेहद शब्द' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. बेहद मण्डल **2.** परमधाम

1218. ''तारतम लई श्री राज पधारया'' चौपाई में तारतम से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** तारतम ज्ञान 2. तारतम मंत्र

1219. जागनी रास से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. रास गरबा खेलना **2.**वाणी व ध्यान द्वारा परमधाम के सुख लेना

1220. ''श्री श्री जी'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. मिहिरराजजी **2.** श्रीप्राणनाथजी

1221. ''सुक जी ना वचन सुनावी काने'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. भागवत कथा सुनाकर

2. भागवत में वर्णित ब्रज–रास लीला के रहस्य बताकर

प्रकरण 125

1222. 14 लोकों में से कर्मभूमि कौन सा लोक है?

विकल्प **1.** मृत्युलोक 2. सभी लोक

1223. सच्चा व्यापारी कौन है?

विकल्प 1. जिसने संसार में बहुत सारा धन कमाया

2. जिसने अच्छे कर्मो और ब्रह्मज्ञान के द्वारा मोक्ष प्राप्त कर लिया

1224. कर्मयोनि कौन सी है?

विकल्प **1.** मात्र मनुष्य तन 2. सभी 84 लाख योनियां

1225. जौहरी किसे कहा गया है?

विकल्प 1. जो भीड़ व दिखावा के पीछे चलता हो

2. जिसमें सत्य–असत्य को परखने की क्षमता हो

1226. धर्मग्रंथों को कुहरा (धुंध) क्यूं कहा गया है?

विकल्प 1. उनमें परमात्मा का ज्ञान नहीं लिखा है

2. उनमें परमात्मा का ज्ञान लिखा है किंतु किसी को समझ नहीं आता

1227. वैराट (संसार) को कुहरा क्यूं कहा गया है?

विकल्प **1.** असत्य संसार सत्य लगता है और सत्य आत्मा–परमात्मा को कोई नहीं पहचान पाता है 2. असत्य संसार के कण कण में एवं सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान परमात्मा को कोई पहचान नहीं पाता है

1228. मनुष्य और पशु में क्या अंतर है?

विकल्प 1. खाने व सोने का सुख मनुष्य को पशु से ज्यादा प्राप्त है

2. मनुष्य को विवेकशील बुद्धि प्रदान की गई है।

1229. वैकुण्ठ की प्राप्ति होने पर वहां का सुख कब तक भोगते हैं?

विकल्प 1. अनंत काल तक **2.** महाप्रलय तक

1230. ''कोइक करे हजार गणां'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. कोई मनुष्य तन पाकर हजारों रूपये कमा लेता है

2. कोई सत्कर्म के द्वारा अपने पुण्यों को हजार गुना बढ़ा देता है

1231. ''केहेने ते मूलगां जाये'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** कोई मनुष्य तन पाकर पूर्वसंचित पुण्यों को भी नष्ट कर देता है

2. कोई मनुष्य तन पाकर अपनी बची धन सम्पत्ति को भी नष्ट कर देता है

1232.''माल लुसानू जाय मूर्खो'' हमारा कौन सा माल लूटा जा रहा है?

विकल्प 1. धन सम्पत्ति **2.** मनुष्य जीवन का पल पल

1233. धन पोतानू नव साचवो, लूसे छे चोर चंडाल'' कौन से चोर हमारा कौन सा धन लूट रहे हैं?

विकल्प 1. चोर हमारा धन सम्पत्ति लूट रहे है

2. काम, क्रोध, लोभ, मोह रूपी चोर मनुष्य जीवन रूपी धन लूट रहे है

1234. ''जाय बंधाणां सहु जमपुरी'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** माया मोह में बंधकर कर्मफल(सकाम भक्ति) मार्ग पर चल रहे हैं
2. रस्सी से बांधकर जमपूरी ले जाया जा रहा है?

1235. ''वेपार करतां जे बंध बांध्या, ते लेखू लेसे सहु तंत'' में कौन लेखा जोखा लेगा?

विकल्प 1. चित्रकेतु **2.** चित्त रूपी चित्रकेतु में सारे कर्म संस्कार रूप में हैं

1236. ''लांचे तो तिहां नव छूटिये'' से क्या स्पष्ट होता है?

विकल्प 1. करोड़ों रूपये देकर यम की मार/पाप कर्मफल से बचा जा सकता है **2.** ना धन ना सगे संबंधी हमें पाप कर्मफल से बचा सकते हैं

1237. ''दुखने साटे अखंड सुख आवे'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. माया में दुखी होने से परमात्मा का अखण्ड सुख प्राप्त होगा
2. एक परमात्मा के निष्काम भक्ति के मार्ग में कष्ट सहन करने पर परमात्मा का अखण्ड सुख प्राप्त होगा

1238. ''वाट लेजो वैकुण्ठ तणी, रखे जाता पुरी जम'' सामान्य हिन्दूजनों को क्या प्रबोध किया जा रहा है?

विकल्प 1. हमें वैकुण्ठ की भक्ति करनी चाहिए
2. सकाम भक्ति (कर्मफल, स्वर्ग–नर्क का मार्ग) छोड़कर निष्काम भक्ति का मार्ग अपनाना चाहिए

<u>प्रकरण 126</u>

1239. ''दुस्तर दोख न विचारे मदमाता'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. भक्तिमार्ग में प्राप्त होने वाले दुःखों का विचार नहीं करते
2. भोग, विलासिता, पाप कर्म, सकाम भक्ति के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले दुःखों की चिंता नहीं करते

1240. ''बलिया बीक न आणे केहेनी'' में बलिया किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** जो अपने बुरे कर्मों के परिणाम से ना डरे
2. जो साधना भक्ति में प्राप्त होने दुःखों से ना डरे

1241. ''उज्जड मारग वैकुंठ केरो'' में वैकुण्ठ के मार्ग को उजाड़ क्यूं कहा गया है?

विकल्प 1. कठिन साधनाओं के कारण **2.** कोई साथी गुरू ना मिलने से

1242. ''मन माहें जाणे अमे सुख भोगवसुं'' में क्या कहा जा रहा है?
विकल्प 1. पुण्य करके स्वर्ग के सुख मिलने की अपेक्षा करते हैं
2. पाप व दिखावे की भक्ति करके सोचते हैं कि मुझे स्वर्ग मिलेगा

1243. 'अंन उदक वाए कीट पतंगमां, सकल कहे छे ब्रह्म' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** कण कण में व जीव चेतना के रूप में ब्रह्मसत्ता व्याप्त है
2. कण कण में व जीव चेतना के साथ ब्रह्मसत्ता व्याप्त है

1244. ''एणी पेरे दान करें रे दयासों'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प 1. दया पूर्वक दान करते हैं **2.** भोजन के लिये जीव हिंसा करते हैं और दिखावे का दया दान करते हैं

1245. उपवास किसे कहते हैं?
विकल्प 1. एक समय भोजन ना करने को **2.** दिन भर परमात्मा के ध्यान, साधना, स्वाध्याय, सत्संग में रहने को

1246. दान दया आदि धर्म कार्य किस प्रकार करना चाहिए?
विकल्प 1. सबको दिखाकर और बताकर **2.**निष्काम भाव से गुप्त रूप से

1247. ''विप्र तणों वेपार भाजे छे'' पंडितों का वेपार किस प्रकार समाप्त होता है?
विकल्प **1.** आत्म कल्याण हेतु निष्काम भक्ति का मार्ग दर्शाने से
2. स्वर्ग हेतु सकाम भक्ति/कर्मकाण्ड का मार्ग दर्शाने से

1248. ''पाखंडे खाय सर्वे पृथ्वी'' के अनुसार क्या सत्य है?
विकल्प **1.** संसार में ज्ञान व प्रेम का दिखावा करने वाले झूठे आडम्बरी संतों का बोलबाला है?
2. संसार में सच्चे साधु संतों का बोलबाला है

1249. ''भाई भागवत हाट न चाले'' ऐसा क्यूं कहा गया है?
विकल्प **1.** भागवत कथा का उद्देश्य पैसा कमाना और लोगों का मनोरंजन करना रह गया है इसलिये
2. भागवत कथा में वैकुण्ठ तक का ज्ञान है इसलिये

1250. ''दोष विप्रो ने कोई मां देजो, ए कलजुग ना एधांण'' के अनुसार कलियुग की क्या निशानी है?
विकल्प 1. कलियुग के ब्राह्मण बहुत ज्ञानी ध्यानी होंगे

2. कलियुग के ब्राह्मण पाखण्डी व बुरे कार्य करने वाले होंगे

1251. आज के श्रोता किसके समान हो गये हैं?

विकल्प **1.** बहरे – विवेचन शक्ति का अभाव

2. अंधे – ज्ञान दृष्टि से रहित

1252. ''एणी चाले जो फल लाधे, तो पामसे सहु संसार'' में चाले से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. निष्काम भक्ति **2.** दिखावे की सकाम भक्ति

1253. ''ए अटकलें वन वन जई वलगे, ते फल पांमे केम'' में 'वन वन' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** विभिन्न मत पंथ 2. विभिन्न योनियां

1254. ''सो रे वरसनी जटा बंधाणी'' में जटा का बातिनी तात्पर्य क्या है?

विकल्प **1.** चित्त में माया के संस्कार 2. जटा वाले साधू

1255. ''पण बंध बंधाणां जे अरूपी'' में कौन से बंधन की बात कही जा रही है?

विकल्प **1.** लोकेष्णा–मान प्रतिष्ठा का मोह 2. सकाम कर्म बंधन

1256. ''गुरगम ज्यारे जेहेने आवी, ते छूटया तत्काल'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. गुरू के चरणों में आते ही कल्याण हो जाता है

2. सद्गुरू के द्वारा ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने पर कल्याण हो जाता है

1257. ''ऋखभ देव चाल्या पछी मारग'' ऋषभदेव कौन थे?

विकल्प **1.** जैन मत के प्रथम तीर्थंकर 2. शैव मत के एक संत

1258. ''कां रे करो छो हत्यारो'' में किसकी हत्या की बात कही है?

विकल्प 1. अन्य जीवों की **2.** स्वयं के जीवन की

1259.''मांहेंली कामस केमें न जाय, जो कीजे अनेक श्रम'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** बिना ब्रह्मज्ञान के सकाम दिखावे की भक्ति से हृदय निर्मल नहीं हो सकता 2. पाप करके पुण्य करने से हृदय निर्मल हो सकता है

1260. ''तो पारब्रह्म जे पार थयो, ते केणी पेरे खोलाय''से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. परब्रह्म जो हृदय चक्र में है, उसकी पहचान कैसे हो सकती है

2. परब्रह्म जो नश्वर जगत् से परे है, उसकी पहचान कैसे हो सकती है

1261. ''जीव थयो माहें निराकार,ते केणी पेरे बांध्यो बंध''से क्या आशय है?
विकल्प **1.** निराकार जीव किस प्रकार बंधन में बंध गया है
2. जीव निराकार के अंदर आकर बंधन में बंध गया है

1262. ''जीव बंधाणों अगनाने'' के अनुसार जीव को बंधन किस प्रकार का है?
विकल्प **1.** जीव को बंधन अज्ञानता का है
2. जीव को 14 लोकों के अंदर बंद कर दिया गया है

1263. प्रारब्ध कर्म किस प्रकार नष्ट हो सकता है?
विकल्प 1. मात्र ब्रह्मज्ञान के द्वारा **2.** ब्रह्मज्ञान व प्रेम के द्वारा

1264. अगम का क्या अर्थ होता है?
विकल्प **1.** जिस तक कोई पहुंच नहीं पाया हो
2. जिसे अब तक कोई नहीं देख पाया हो

1265. ''दोष मा दीजे रे वैराट वाणी ने, मुखथी बोले सहु सत'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** धर्मग्रंथों में सत्य परमात्मा का ज्ञान भी लिखा है
2. धर्मग्रंथों में परमात्मा का कुछ भी ज्ञान नहीं लिखा है

1266. परशुराम जी किसके अवतार हैं?
विकल्प **1.** विष्णु भगवान के 2. शंकर भगवान के

1267. ''पर वस बांध्यो करम करे'' से क्या तात्पर्य है?
विकल्प **1.** पंडितो गुरूजनों के वशीभूत होकर कार्य करते हैं
2. इंद्रियों के वशीभूत होकर कार्य करते हैं

1268. 'कोई वेद विचार न करे, भाई सहु को स्वादे लाग्युं'' से क्या आशय है?
विकल्प **1.** भौतिक सुखों की तृष्णा होने से वेदादि ग्रंथों का कोई अध्ययन नहीं करता 2. अन्य ग्रंथों का तो विचार करते हैं किंतु वेदों का विचार नहीं करते

1269. ''वेद विचार करी करी वलया, पारब्रह्म नव लाध्या'' में वेद शब्द से क्या आशय है?
विकल्प 1.चारों वेद **2.**वेदों के भाष्य ग्रंथ उपनिषद आदि के रचयिता ऋषि

1270. ''श्रीकृष्णजी विना बीजू सर्वे मिथ्या'' कौन किससे कह रहा है?
विकल्प 1. श्रीप्राणनाथजी सुंदरसाथ से **2.** नारदजी व्यास जी से

1271. ''श्रीकृष्णजी विना बीजू सर्वे मिथ्या'' से क्या आशय है?

विकल्प 1. श्रीकृष्णजी के अतिरिक्त अन्य कोई भी परमात्मा नहीं है

2. गोपियों के समान श्रीकृष्णजी की प्रेमलक्षणा भक्ति करें, उनके अतिरिक्त अन्य विनश्वर देवों की सकाम भक्ति ना करें

1272. ''सार वचन लई ग्रंथ सघलाना'' ''सकल सारनूं सार निपनूं'' के अनुसार भागवत में किन ग्रंथों का सार आया है?

विकल्प 1. 18 पुराणों का **2.** वेद, शास्त्र, 18 पुराण सबका

1273. ''वली अमृत सीच्युं सुकदेवे'' के अनुसार शुकदेव जी ने भागवत में क्या नया जोड़ा?

विकल्प 1. ब्रज व रास लीला **2.** रास पंचाध्यायी

1274. श्रीमद्भागवत को अन्य ग्रंथों से क्यूं श्रेष्ठ कहा गया है?

विकल्प 1. उसमें परमात्मा के स्वरूप धाम लीला का वर्णन है

2. निष्काम प्रेम लक्षणा भक्ति का मार्ग दर्शाने के कारण

1275. ''पण वचन भारी विचार न थाय, त्यारे विप्र वाणी पेहेला नी दाखे'' भागवत की गूढ़ बातें ना समझने पर पंडित कौन सा मार्ग बताते हैं?

विकल्प 1. निष्काम प्रेम लक्षणा भक्ति का **2.** कर्मकाण्ड बहुदेवपूजा का

1276. ''तेज वचन वांचता सांभलता, जाय जम वारो बांध्यो'' वैकुण्ठ की प्राप्ति कराने वाले भागवत को सुनकर भी यमपुरी जाने का कारण क्या है?

विकल्प **1.** वैराग्य की कमी 2. भागवत में ज्ञान की कमी

1277. आज के भागवत कथाकारों/ज्ञान वक्ताओं को गूंगा के समान क्यूं कहा है?

विकल्प 1. सत्य ज्ञान सुनाते हैं इसलिये **2.** वे वैराग्य, आचरण और ज्ञान से रहित होते हैं और श्रोताओं के मनोरंजन पर ही उनका ध्यान रहता है

1278. आज के श्रोताओं को बहरे के समान क्यूं कहा है?

विकल्प **1.** वैराग्य, स्वाध्याय व भक्ति से रहित होते हैं, मात्र मनोरंजन के लिये कथा सुनने आ जाते हैं 2. वे ध्यानपूर्वक कथा सुनते हैं इसलिये

1279. ''विष्णु संग्राम करीने लेसे, साध हसे जे कोय'' में विष्णु संग्राम से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. शास्त्रार्थ करके ज्ञान ग्रहण करेंगे **2.** रूढ़िवादी परम्पराओं

और प्रचलित मान्यताओं को छोड़कर सत्यज्ञान को स्वीकार करेगा

प्रकरण 127

1280. ''पर न आवे तोले एकने'' में श्रीकृष्ण नाम की तुलना किस किस से की जा रही है?

विकल्प 1. वाणी मंथन व चितवनि **2.** कर्मकाण्ड व बहुदेवपूजा

1281. एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो'' वाला श्लोक कौन किस स्वरूप के प्रति कह रहा है?

विकल्प **1.** भीष्म पितामह विष्णु स्वरूप योगेश्वर कृष्ण के प्रति कह रहे
2. ब्रज रास के स्वरूप के प्रति कहा जा रहा है

1282. ''चौदे भवन ते जीतियो'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. बेहद मण्डल पहुंच जाता है **2.** वैकुण्ठ में मुक्ति पा लेता है

प्रकरण 128

1283. सच्चे सद्गुरू की क्या पहचान है?

विकल्प 1. आकर्षक वेश भूषा **2.** उनके ज्ञान के शब्द

1284. ''अस्नान करी छापा तिलक देओ, कंठ आरोपो तुलसी माल'' के अनुसार क्या गलत है?

विकल्प 1. माला पहनना **2.** गलत आचरण

1285. ''पंथ करो छो केही भोमनो, रिदे आंख उघाड़ी जुओ'' के अनुसार दिखावे की भक्ति से कहां जा पायेंगे?

विकल्प 1. वैकुण्ठ 2. स्वर्ग **3.** यमपुरी

1286. ''आकार तिहां चाले नहीं, चाले निरमल निराकार'' में निराकार किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** जीव चेतना को 2. अंतःकरण को

1287. ''चढ़वु ऊंचू चीरक थई'' में 'चीरक' शब्द से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** विरक्त साधनामय जीवन 2. विलासी जीवन

1288. ''वली एक वाट कही करी, ते ततखिण कीधी लोप'' में कौन से तीसरे मार्ग की बात कही जा रही है?

विकल्प 1. सकाम भक्ति 2. निष्काम भक्ति **3.**गोपियों के समान प्रेम भक्ति

1289. पांच सूक्ष्मभूत कौन से हैं?

विकल्प **1.** शब्द रूप रस स्पर्श गंध 2. पृथ्वी अग्नि जल वायु आकाश

1290. ''जेरे गामनी वाटज लीजे, आवे तेहज गाम'' के अनुसार पुण्य– सकाम भक्ति का मार्ग अपनाने से कौन से लोक की प्राप्ति होगी?

विकल्प **1.** स्वर्ग 2. वैकुण्ठ

1291. ''देखा देखी पंथ करो छो'' चौ. का क्या भाव है?

विकल्प 1. सच्चे ज्ञानीजनों का देखादेखी आचरण करते हो

2. देखादेखी अंधभक्ति व दिखावे की भक्ति करते हो

1292. 'ढोलतां ढोलाने सोहेलुं'' में कौन से मार्ग को सरल कहा गया है?

विकल्प **1.** भौतिक सुखों को भोगते हुए सकाम भक्ति करना

2. भौतिक सुखों का त्याग करके निष्काम भक्ति करना

1293. कुल कितने नर्क के कुण्ड हैं, उसमें से राजा परीक्षित कितने नर्क कुण्डों का वर्णन सुन पाये?

विकल्प **1.** 84 में से 28 2. 84 में से 56

1294. ''बुध तमारी किहां गई'' में क्या निर्देश है?

विकल्प 1. कलियुग में किसी भी ज्ञानोपदेश को आंख मूंदकर मान लेना चाहिए, अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

2. किसी भी ज्ञान उपदेश को धर्मग्रंथों व ब्रह्मवाणी की कसौटी में परखना चाहिए, क्यूंकि ये कलियुग है

1295. ''जुओ करे छे कोण संग्राम'' के अनुसार मोक्ष के मार्ग में हमसे कौन युद्ध कर रहा है?

विकल्प **1.** अज्ञान व मायावी सुखों की इच्छाएं 2. अन्य धर्म के लोग

1296. ''पतिव्रता पणे सेवियें'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. इसका अभिप्राय मात्र एक परमात्मा की पूजा से है

2.एक परमात्मा के प्रति निष्काम संयमित साधनामय जीवन से है

1297. किस ग्रंथ में बहुदेवपूजा करने वालों को विद्वानों के मध्य पशु के समान कहा है?

विकल्प **1.** शतपथ ब्राह्मण 2. गीता

1298. किस ग्रंथ में सांसारिक कामनाओं के लिये बहुदेव पूजा करने

वालों को अल्प बुद्धि वाला कहा गया है?

विकल्प **1.** गीता 2. शतपथ ब्राह्मण

1299. ''त्यारे थासे टली चोर दास'' में चोर किसे कहा गया है?

विकल्प 1. अन्य धर्मावलम्बियों को **2.** गुण अंग इंद्रियों को

1300. ''एणी पेरे पांमसो, अमोलक ए रतन'' में अमूल्य रत्न किसे कहा है?

विकल्प 1. मनुष्य तन को **2.** अखण्ड मोक्ष को

1301. ''भलयो जे भगवानसो, तेनो दीसे एकज रंग'' में एक ही रंग से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. भगवान में लीन हो जाना

2. हर पल परमात्मा के प्रेममयी स्वरूप व लीलाओं में खोये रहना

<u>प्रकरण 129</u>

1302. साधु की क्या पहचान है?

विकल्प 1. यहां से वहां मेले भण्डारे में घूमते रहना **2.** वैराग्य–ध्यान

1303. ''खोजो खरा थाए ते माटे'' के अनुसार सद्गुरू की खोज किस प्रकार करनी चाहिए?

विकल्प **1.** पारखी बनकर–ज्ञान की गहराई देखकर

2. वेशभूषा, वक्तृत्व कला, प्रसिद्धि व भीड़ देखकर

1304. ''सूने रिदे दीसे सहु कोई'' में सूने हृदय से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** वैराग्य, ज्ञान, भक्ति से रहित 2. मोह माया से रहित

1305. ''सत जोऊं संतों तणो'' के अनुसार संत की क्या पहचान है?

विकल्प **1.** सत्य आचरण 2. वेश भूषा 3. प्रसिद्धि–भीड़

1306. ''अधखिण ना सुपनातर माटे, रखे निगमता ए अवसर'' से क्या सिखापन मिलता है?

विकल्प **1.** माया के क्षणिक सुखों के लिये ये अवसर ना गंवाए

2. भौतिक सुखों का भी सेवन करो, श्रीराजजी का भी सुख पा लो

1307. ''आ रे वेला एवी नहीं आवे, साध ना सके पुकारी'' का क्या अर्थ है?

विकल्प **1.** यदि हम आज सावधान नहीं हुए तो पुकारनेवाले सच्चे साधू नहीं पुकारेंगे 2. साधु पुकारते ही रहेंगे, हमें माया में लगे रहना है

1308. वचन ते अवला विचारसे, केहेसे निंदया करे छे अमारी'' के अनुसार ज्ञान सुनकर कैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिए?

विकल्प 1. वो हमारी (हमारे सिद्धांत की) निंदा कर रहा है

2. ग्रंथों/वाणी के अनुसार सत्य है या नहीं, इसका विचार करें

1309. ''जेणे दरसने नेत्र ठरे, अने वचन कहे ठरे अंग'' के अनुसार सद्गुरू की क्या पहचान है?

विकल्प 1. आकर्षक चेहरा, वेश भूषा, मीठी बोली, शांति का दिखावा

2. ब्रह्मज्ञान के वचन, निःस्वार्थ हितकारी स्पष्ट वचन

1310. ''सारनों सार ते संगत'' ऐसा क्यूं कहा गया है?

विकल्प **1.** सद्गुरू की संगति में ज्ञान प्राप्ति और साधना करने से मोक्ष सरलता से प्राप्त होता है 2. सद्गुरू के चरणों में आने मात्र से उनकी कृपा दृष्टि से कल्याण हो जायेगा।

<u>प्रकरण 130</u>

1311. ''वाटडी विस्मी'' का क्या बातिनी भाव है?

विकल्प 1. मात्र विषम सांसारिक परिस्थितियां **2.** विषम सांसारिक परिस्थितियां, धर्माचार्यों और बिहारी जी द्वारा बाधाएं

1312. धोरीडा के प्रसंग में गाड़ीवान किसे कहा गया है?

विकल्प 1. बिहारी जी को **2.** श्रीराजजी के हुक्म को

<u>प्रकरण 131</u>

1313. ''सूरधीर हसे खरो खोजी'' के अनुसार अखण्ड सुख (मोक्ष) प्राप्ति के लिये क्या जरूरी है?

विकल्प **1.** धैर्य, निष्काम भक्ति, विवेक, पारखी बुद्धि

2. भोग विलास करते हुए सकाम भक्ति

1314. ''जेवडो लाभ तेवडो जोखम'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** अखण्ड सुख प्राप्त करने के लिये उतना ही ज्यादा कष्ट (निष्काम भक्ति के द्वारा) उठाना पड़ेगा 2. भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए भी अखण्ड सुख प्राप्त हो सकता है

1315. मंदिर मालिया अनेक निपाओं, पण भरवूं एक तेहज दो भरी'' के अनुसार जीवन की मूल जरूरतें क्या हैं?

विकल्प **1.** रोटी कपड़ा और मकान 2. धन, स्वादिष्ट भोजन,बड़ा सा मकान

1316. ''सुभ करम नामना लई जाए'' के अनुसार सत्कर्म का फल कौन ले जाता है?

विकल्प **1.** शुभ कर्म की प्रसिद्धि, दिखावा, अहंकार 2. पाप कर्म

1317. परनिंदा करने से क्या हानि है?

विकल्प **1.** पापी व्यक्ति का पाप हमारे सिर पर आ जाता है

2. कुछ हानि नहीं होता है

1318. पांच ज्ञान इंद्रियां कौन सी हैं?

विकल्प **1.** कान आंख नाक जिह्वा त्वचा 2. हाथ पैर मुख मल–मूत्र इंद्रिय

1319. ''कां रे पड़ो पसुना जेम पास'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** पशु के समान खाने–सोने में जीवन क्यूं व्यतीत करते हो

2. भौतिक सुखों को भोगने व धन कमाने में जीवन लगा दो

1320. ''नहाजो माया मांहें कोरा रेहेजो'' कैसे सम्भव है?

विकल्प **1.** आसक्ति रहित कर्तव्य कर्म करें

2. भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए भक्ति करें

<u>प्रकरण 132</u>

1321. ''पीठ दे तिन पिउ को, करे ऊपर के रंग'' में किसे पीठ देने की बात कही जा रही है?

विकल्प **1.** मूल स्वरूप श्रीराजजी 2. आवेश स्वरूप श्रीराजजी

1322. ''तो अधखिन पिउ न्यारा नहीं' के अनुसार धाम धणी के दीदार के लिये क्या शर्त है?

विकल्प 1. तारतम प्राप्त कर लेना

2. बाहर से जैसे पवित्र दिखते हैं, वैसा ही पवित्र हमारा मन भी हो

1323. ''पिउ नहीं तुझ से दूर'' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प 1. धाम धणी आवेश स्वरूप से हमारे दिल में विराजमान हैं

2. धाम धणी प्रतिबिम्ब रूप से हमारे दिल में विराजमान हैं

3. हम मूल मिलावे में धणी के चरणों में विराजमान हैं

1324. ''अंतर न आड़े नूर'' में अंतर का क्या अर्थ है?

विकल्प 1. हृदय **2.** दूरी

1325. श्रीराजजी की आवेश शक्ति या अन्य शक्तियां कभी सुषुप्ति या निष्क्रिय अवस्था में रह सकती है?

विकल्प 1. हां **2.** नहीं

<u>प्रकरण 133</u>

1326. किरंतन के अंतिम प्रकरण में बातिनि में जहाज किसे कहा गया है?

विकल्प **1.** मनुष्य तन 2. जीव

1327. किरंतन के अंतिम प्रकरण में 'मुडदम' किसे कहा गया है?

विकल्प 1. दिशा बताने वाले यंत्र को **2.** गहराई मापने वाले यंत्र को

1328 ''नखत्र ना डिसे कोए'' का बातिनी भाव क्या है?

विकल्प **1.** ज्ञान का कोई स्रोत कोई गुरू नहीं दिखाई देता

2. दुनिया में बड़े बड़े ज्ञानी हैं

1329.''कंधी पस्सी म कोडजा'' सागर के मैला किनारे से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** मायावी क्षणिक सुख 2. मायावी विकार

1330. ''पिरी पुकारे पंजसे'' में 'पंज' से क्या तात्पर्य है?

विकल्प **1.** पांच शक्ति 2. पांच स्वरूप

प्रणाम जी

अर्जी धाम चलन की

पीछला बाकी दिन, रह्यो घड़ी चार।
धाम वतन चलन की, मोमिन करें विचार।।१।।
अरस की निमाज का, आए पहुंचा बखत।
मोमिन अरज करत हैं, सामें होए तखत।।२।।
हमको इन खेल से, सिताब काढ़ो श्री राज।
भए मनोरथ पूरन, रह्या न कोई काज।।३।।
श्री धाम धनी सुनत हैं, ए वानी जो मकबूल।
द्वाए जो मोमिनों की होत है कबूल।।४।।

अर्जी सुन्दर साथ करें, चरणों में होके खड़े
पिया जी, धनी जी, खेल को बस करो, दिन बीते हैं बड़े.....
अर्ष में प्रीतम से, क्यों रब्द हमने की,
खेल क्यों मांग लिया, यह समझ हम में न थी,
पिया जी, धनी जी खेल को बस करो, दिन बीते हैं बड़े.....1
माया भी देखी है, दुःख भी देखा है
खेल भी देख लिया, इष्क भी देखा है
पिया जी, धनी जी, ले चलो, ले चलो दिन बीतें हैं बड़े 2
आपकी जुदाई को, अंगना कैसे सहे,
हैं षर्म सार हमहीं, आप से कैसे कहें,
पिया जी, धनी जी, ले चलो ले चलो, दिन बीते हैं बड़े.....3
अंगना जान के ही, आपने जगाया है,
ले के चलते क्यों नहीं, समझ न आया है।
बल हमरा न चला, साथ चरणों में पड़े, अर्जी 4